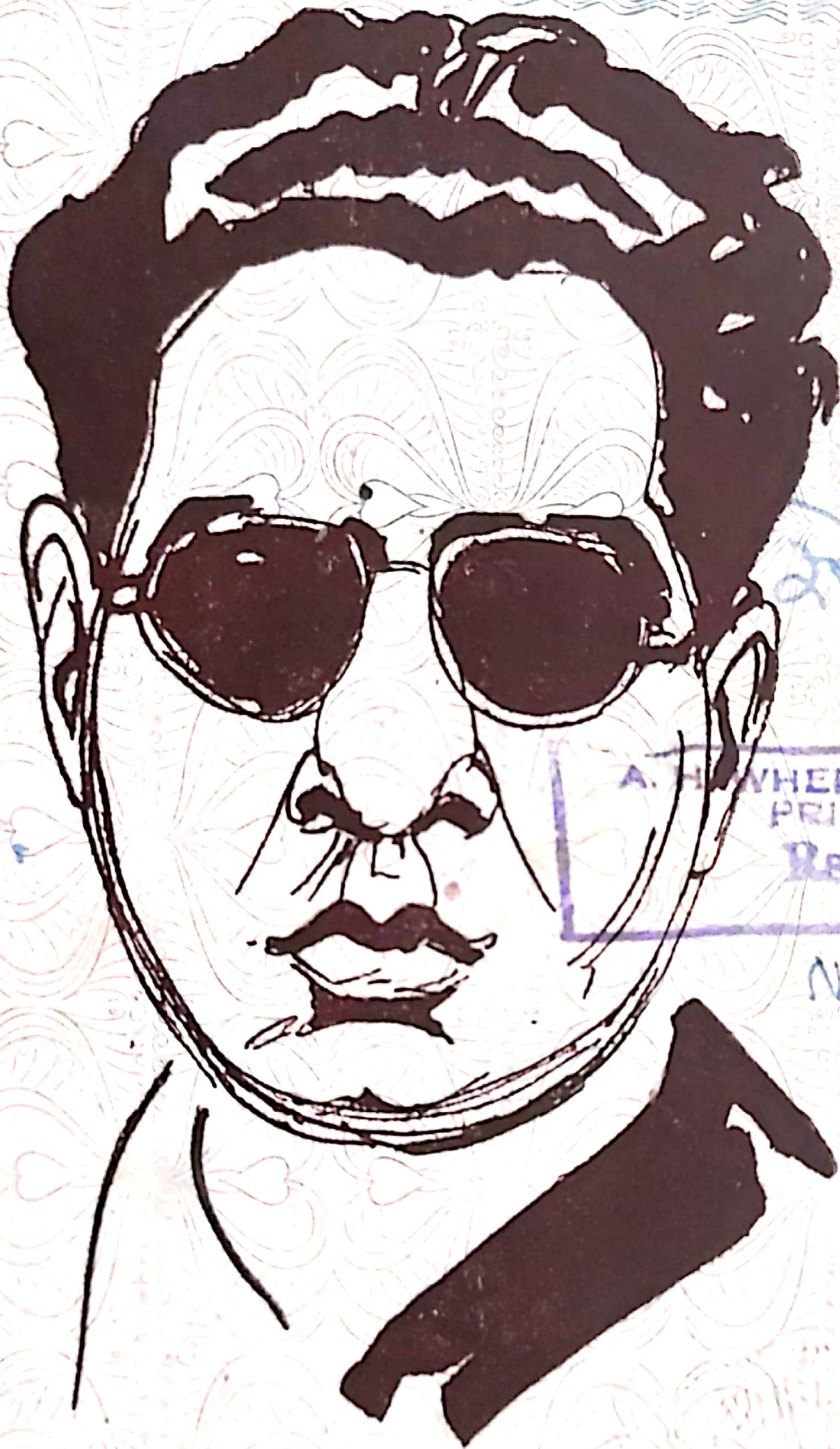


परदेसा

द्वितीय खंड

कुशवाहा 'कान्त'

कान्त साहित्य सदन



कान्त-साहित्य-सदन

भट्टवरिया, भिर्जापुर

प्रकाशक
त्रिलोक कुशवाहा
कान्त-साहित्य-सदन
महुवरिया, मिर्जापुर

●
पाँचवाँ संस्करण
ढाई रुपया
●

मुद्रक
चिनगारी प्रेस, वाराणसी

21.30 159

‘तुरन’ को

Jaguar Singh
Rathor.

Sahityadesh

मामूली सी खटके की आवाज हुई ।

पहरेदार ने सर उठा कर देखा, कुछ ही दूर पर एक अस्पष्ट-सी छाया आधी रात के अँधेरे में खड़ी थी ।

शहर का वह बाहरी हिस्सा था । बहुत ऊँची, पुख्ता चहार-दिवारी के अन्दर खुशनुमा बाग के बीच तीन छोटे-छोटे महल बने थे, जिनमें से एक के दरवाजे पर यह लम्बा-चौड़ा-जवान पहरेदार उपस्थित था ।

चारों ओर सन्नाटा था । अँधेरी रात जुगनुओं की चमक और तारों की टिमटिमाहट भी निगल गई थी । कुत्ते भूँक रहे थे, परन्तु अन्धकार में उन्हें अपना पराया पहचानने की फुर्सत नहीं थी । एक कर्त्तव्य निभाने की लगन लेकर ही वे मनमाना शोर मचा रहे थे ।

पहरेदार सजग हुआ । बगल में रखी बन्दूक उठाकर हाथ

में ले ली, फिर उस अस्पष्ट छाया की ओर मुँह करके धीरे से पुकारा—“कौन है ?”

“.....” कोई आवाज नहीं आई परन्तु वह छाया धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगी।

“वहीं रुको”—पहरेदार ने छाया की ओर बन्दूक तानकर रोबीली आवाज में कहा—“कौन हो तुम ?”

“मैं हूँ !....” एक पतली-सी मधुर आवाज हवा पर तैरती हुई पहरेदार के कानों से जा टकराई।

स्वर सुनते ही पहरेदार की बन्दूक नीची हो गई। तना हुआ हट्टा-कट्टा शरीर झुक कर नम्र हो गया। आगे बढ़कर वह उस छाया के समीप जा खड़ा हुआ।

छाया एक कीमती शाल में लिपटी थी परन्तु उसका मुख उस अँधेरी रात में भी चाँद की हलकी आभा की तरह चमक रहा था।

पहरेदार ने छाया के सामने सर झुकाया फिर अदब के साथ ताज्जुबभरी आवाज में बोला—“हुजूर आप ?”

“हाँ वारिस !....कोई नई बात ?....” स्वर किसी युवती का था, जिससे खूबसूरती और रोब टपकता था।

“कत्तई नहीं हुजूर !...खैरियत तो है कुँवरानी साहिबा ?”

“नहीं वारिस !....आज फिर कोई शरारत होने वाली है। तुम जरा होशियार रहना...”

“या खुदा ! भले आदमियों के भी कितने दुश्मन होते हैं !.... मैं होशियार हूँ हुजूर ! वारिस के चार-पुश्तों ने आपका नमक खाया है, उसकी अदायगी के लिये वारिस के खून का एक-एक कतरा हाजिर है कुँवरानी साहिबा ! आजकल के दुश्मन भी कितने बेआबरू हो गये हैं कि रात के वक्त चोरी-चोरी वार

करते हैं। आमने-सामने की लड़ाई हो तब वारिस का हौसला देखें सरकार !....बत्ती जला दूँ क्या ?”

“नहीं, दुश्मन होशियार हो जाँयेंगे”—छाया ने कहा—“मैं कुँवर साहब के कमरे में जाती हूँ। उन्हें भी होशियार करना है...”

“खुदा कसम हुजूर ! कुँवर साहब भी बेहद लापरवाह हैं। सीधे-भले आदमी बेचारे, समझते हैं कोई उनसे क्यों दुश्मनी करेगा ?...आज का इन्सान तो सरकार, चींटियों का भी दुश्मन बन गया है, फिर कुँवर साहब तो इतनी बड़ी रियासत के मालिक हैं। खुदा उनकी जान सलामत रखे....”

“चुप वारिस !” कुँवरानी ने उसे चुप करा दिया—“धीरे से बोलो....वह सामने क्या है ?”

वारिस ने अँधेरे में उस ओर देखा। बाग के पेड़ों की छाया में दूर पर कोई काली आकृति धीरे-धीरे सावधानी के साथ महल की ओर बढ़ रही थी।

वारिस ने बन्दूक सीधी की, मगर कुँवरानी ने रोक दिया—
“बन्दूक रख दो वारिस ! हमें उसे जिन्दा पकड़ कर रानी साहिबा के आगे पेश करना है !....मैं कुँवर साहब के पास जाती हूँ....”

“मैं भी चलूँ हुजूर ?”

“नहीं, तुम यहीं रुको....अन्दर का काम मैं सम्हाल लूँगी.... तुम उधर चहारदिवारी के पास छिप जाओ। कोई भागने लगे, तो पकड़ लेना—”

“जो हुक्म !...मगर आप अकेली हैं हुजूर !....क्या रानी साहिबा के महल में इत्तला कर दूँ ?”

“नहीं, उन्हें आराम करने दो—” कुँवरानी ने कहा—“होशियार रहो। मैं जाती हूँ....”

कुँवरानी घूम पड़ी और तेजी से महल के भीतर की ओर चली ।

वारिस चौकन्ना होकर चारों ओर देखने लगा ।

... चहारदिवारी के अन्दर बने हुए दो अन्य महल अँधेरे में मुँह छिपाये खामोश खड़े थे । कहीं से भी किसी के जागने की आहट नहीं आ रही थी । पेड़ों पर से पक्षियों के पर फटफटाने की आवाज अवश्य आ जाती थी कभी-कभी, जो उस सुनसान रात्रि में बड़ी ही भयानक लगती थी ।

कुँवरानी महल के आँगन में पहुँच गई । उस समय महल के पीछे से एक हलकी खड़खड़ाहट की आवाज आई । कुँवरानी आगे बढ़कर एक बन्द दरवाजे पर आ खड़ी हुई ।

धीरे से ठकेल कर दरवाजा खोला । भीतर अन्धकार था । टटोलती हुई वह आगे बढ़ी ।

“कौन है ?....” अन्धकार में से किसी पुरुष का निद्रालु स्वर आया ।

“मैं हूँ....” कुँवरानी सोने वाले की चारपाई के पास पहुँच गई थी ।

“कुँवरानी तुम ?.... क्या है ?....नींद नहीं आ रही है क्या ?”

“आप जाकर मेरे कमरे में सो रहिये, ललित के पास....”

“क्यों ?....तुम्हारा स्वर घबड़ाया हुआ है...क्या बात है कुँवरानी ! ललित तो ठीक है न ? तीन साल की उम्र हुई उसकी मगर बीमार तो वह कभी नहीं हुआ....”

“बेटे की फिक्र छोड़िये कुँवर साहब, अपनी फिक्र कीजिये.... समय कम है । आप चुपचाप मेरे कमरे में जाकर सो रहें । बाद को मैं सब कुछ बता दूँगी....”

“अजीब पहेली बुझा रही हो तुम....”

तभी पुनः कुछ खड़खड़ाहट की आवाज आई। कुँवरानी ने कुँवर का हाथ पकड़कर कमरे से बाहर कर दिया। बोली—
“जाओ, जल्दी से...”

जवानी की कच्ची नौद से उठे कुँवर ने अधिक समझने की कोशिश नहीं की। वह चुपचाप चला गया। उसके जाते ही कुँवरानी ने उनका बिस्तर ठीक किया, ताकि देखनेवाला समझे कि कोई आराम से मीठी नौद सो रहा है। इसके बाद वह पलंग के नीचे छिपकर साँस रोक कर बैठ गई।

बाहर किसी का पदचाप सुनाई पड़ा, जैसे कोई दूबे पाँव उस कमरे की ओर आ रहा हो, कुँवरानी सजग हो गई।

उसी समय भिड़काया हुआ दरवाजा धीरे से खुल गया। पलंग के नीचे से कुँवरानी ने प्रगाढ़ अन्धकार के बीच खड़ी हुई एक काली परछाई देखी। धीरे-धीरे वह परछाई आगे बढ़ी। उसके हाथ का लम्बा छुरा एक क्षण के लिये चमक उठा।

परछाई पलंग के पास आ खड़ी हुई। उसका छुरा ऊपर उठा.... मगर नीचे नहीं गिर सका कि उसके पहले ही कुँवरानी ने पलंग के नीचे से अपना हाथ बढ़ाकर उसका पैर पकड़ लिया।

आक्रमणकारी घबरा गया और सम्हल न सकने के कारण धड़ाम से गिर पड़ा।

मगर दूसरे ही क्षण कुँवरानी की नाक पर पैर की एक गहरी चोट लगी और उसके हाथ ढीले पड़ गये। उसने उठकर भागते हुए आक्रमणकारी के पैरों की आवाज सुनी।

उसने तेजी से दौड़कर बत्ती जलाई परन्तु दुश्मन तो भाग चुका था।

“क्या हुआ कुँवरानी? हुआ क्या?....” धमधमाहट की आवाज सुनकर कुँवर अचलनारायण आ गया था—“तुम्हारी

नाक से खून बह रहा है कविता ! कैसे चोट लग गयी ? यह धमधमाहट की आवाज कैसी थी ?”

“खैरियत हुई कि आप बच गये”—कुँवरानी बोली—“मेरी नाक से खून बहा तो बहा, आपकी छाती से बहता खून मैं न देख सकती...ईश्वर को धन्यवाद दीजिये...”

“क्या कहती हो तुम ? पचीस बरस की मेरी उमर हुई मगर तुम्हारी बातों को समझने की समझ अब तक नहीं आई मुझमें.... हमारी-तुम्हारी शादी हुए पाँच साल बीत चुके, मगर एक दिन भी तुमने यह पहली बुझाने की आदत नहीं छोड़ी....नाक का खून तो पोंछ लो....”

“आपसे कितनी बार कह चुकी कि अपनी हिफाजत का ख्याल कीजिये मगर आप तो कुछ सुनते ही नहीं....”

“अपनी हिफाजत मैं क्या करूँ ? सोने की अशर्फी तो हूँ नहीं कि चोरों का डर हो....चार साल पिताजी को स्वर्गवासी हुए हो गये । उनके बाद रियासत की मालकिन माताजी हैं । उन्हीं के कहने पर सारा काम करता हूँ मैं । मगर उन्होंने तो कभी मुझे अपनी जान की हिफाजत करने को नहीं कहा ?”

“रानी साहिबा को कुछ मालूम हो तब तो आपकी हिफाजत का ख्याल उन्हें आये ? राजा साहब जीवित थे तब की बात और थी । रामगढ़ रियासत में कोई सर उठाने वाला न था, मगर उनके मरते ही दुश्मनों ने पैर फैलाना शुरू कर दिया । कई बार आप मौत के मुख से बच चुके हैं, अब तो सम्हल जाइये...”

“तो क्या आज रात मेरी जान लेने की कोशिश की गई थी ?”—कुँवर ने आश्चर्य में भरकर पूछा ।

“हाँ !...मुझे पता न लग जाता तो भगवान जाने क्या होता ? बाहरी दुश्मन हो तो उनसे बचाव भी हो सकता है....”

“दुश्मनों से बचाव के लिये ही तो पिताजी ने शहर के नजदीक यह महल बनवाया था, सो भी एक नहीं तीन-तीन । एक अपने लिये, एक मेरे लिये, एक छोटे कुँवर के लिये । चहार-दिवारी एक और महल तीन—और हर महल पर बीसों पहरे-दार—इससे बढ़कर और क्या हिफाजत हो सकती है ? पिताजी मर गये तो क्या, उनके नाम का दबदबा तो है ही ?”

“राजा साहब के नाम का दबदबा बाहरी दुश्मनों को रोक सकता है”—कुँवरानी पलंग पर बैठती हुई बोली—“बैठ जाइये आप भी....मगर घर के दुश्मनों का सामना तो स्वयं अपनी होशियारी ही कर सकती है....”

“घर के दुश्मन ?....” कुँवर अपने सुन्दर चेहरे पर आश्चर्य का भाव लाकर बोला—“कौन ?...”

“छोटे कुँवर !....” दबी जवान से कहा कुँवरानी ने ।

“छोटे कुँवर ! क्या कहती हो कुँवरानी तुम ?...चंचल तो अभी बच्चा है, मेरा छोटा भाई है....”

“भाई तो है”—कहा कुँवरानी ने—“मगर सगा नहीं....”

“चुप रहो कविता !....हम दोनों के पिता एक ही थे, हम दोनों में एक ही खानदान का रक्त है....फिर चंचल क्यों मेरा सगा भाई नहीं ?”

“आप उसे सगा समझिये....मगर वह तो आपको सौतेला ही समझता है । मैं जानती हूँ कि रानी साहिबा देवी हैं और वे अपने बेटे चंचल से बढ़कर आपको प्यार करती हैं और अपने बाद आपको ही रामगढ़ रियासत का मालिक बनाने का उनका इरादा है....और यही बात चंचल को खटक रही है । वह

आपको रास्ते से दूर हटाकर स्वयं मालिक बनना चाहता है। रानी साहिबा से उसने यह बात कही थी परन्तु उन्होंने फटकार दिया। अब उधर से निराश होकर वह ऐसी चालें चल रहा है...”

“तुम बहुत बार मुझसे चंचल की शिकायत कर चुकी हो कुँवरानी ! मगर मैं चंचल या माता जी में कोई परिवर्तन नहीं देखता। माता जी मेरी अपनी माँ नहीं, फिर भी मुझे कितना चाहती हैं ! उन्हें चंचल की उतनी चिन्ता नहीं, जितनी मेरी रहती है। तुम ऐसी बातें माता जी से कभी मत कहना। सुनकर उन्हें बहुत दुख होगा....”

“मैं रानी साहिबा से कभी कहूँगी भी नहीं...मगर आप सावधान रहें तो अच्छा....माता जी से सलाह करके चंचल की अब जल्द शादी कर दीजिये। अब सुनती हूँ, होटल और क्लब में घूमता रहता है। राजा के बेटे की इतनी स्वतन्त्रता अच्छी नहीं...बीस बरस का हो गया है अब....”

“बीस नहीं, बयासी बरस का भी हो जाय तो भी हमारी नजरों में वह बच्चा ही रहेगा—” कुँवर हँस कर बोला—“छोटा है न कुँवरानी ! तुम उसे ललित के स्थान पर रखकर देखो, कितना भोला लगता है !”

“आप समझते हैं कि मुझे चंचल की शिकायत करने की आदत ही पड़ गई है—” कुँवरानी के स्वर से पीड़ा टपक रही थी—“ललित जैसा मासूम वह होता तो उसे छाती का दूध न पिला देती तो कहते...मगर साँप को अपनी छाती से लगाने की हिम्मत मुझमें नहीं....आप मेरे दुश्मन को भी भाई मान लें तो मैं उसे प्यार करने लगूँ, मगर आपको क्या कहूँ जो अपने भाई की दुश्मनी को भी नहीं पहचान सकते ?”

“मैंने बहुत बार ध्यान दिया मगर चंचल में मैंने अपने प्रति तनिक भी उपेक्षा का भाव नहीं देखा....फिर कैसे मैं तुम्हारी बातें सच मान लूँ ?”

“साँप का बदन बहुत मुलायम होता है कुँवर साहब ! काश, उसके दाँतों का जहर आप देख पाते !....लीजिये, ललित रोने लगा...अभी उसे लेकर आई....”

कुँवरानी चली गई और तुरन्त छोटे बच्चे को गोद में उठाये लौट आई ।

“चुप हो गया ?...” कुँवर बोला—“तुम्हारी गोद भी कैसी है कि लोगों का रोना तक बन्द कर देती है ।”

“चलिये, आप तो मजाक करते हैं—” कुँवरानी ने आँखों से तीर छोड़ते हुए कहा ।

तभी बाहर से खटपट की आवाज आई और दौड़ता हुआ वारिस आ पहुँचा ।

“क्या हुआ वारिसअली ?....” कुँवर ने पूछा ।

“आप बाखैरियत तो हैं हुजूर ! अल्लाह की रहमत...मैं तो रंजोगम से मुर्दा हो गया था गरीब-परवर !....दुश्मन हाथ में आकर भी निकल गया । महल से निकलते ही मैंने उसे पकड़ा, मगर कम्बख्त छुरे का वार कर गया....”

“अरे, इसके कन्धे से तो खून निकल रहा है !—” कुँवरानी घबरा कर बोली ।

“मेरा खून नहीं, आपका नमक निकल रहा है”—वारिस बोला—“थोड़ी-सी चोट है हुजूर ! दुश्मन का छुरा तेज था । खुदा करे मेरे कन्धे में घुस कर ही उसकी प्यास बुझ जाय और हुजूर का सीना सलामत ही रहे...मैंने उसका पीछा किया था सरकार ! मगर हरामी का बच्चा छोटे कुँवर के महल के

पास पहुँच कर ऐसा गायब हुआ कि उसको वू तक न मिली। छोटे कुँवर से दरियाफ्त किया तो वे विगाड़ पड़े....हुजूर मेरी गुस्ताखी माफ करें, दुश्मन जरूर छोटे कुँवर के महल में जा छिपा....”

“छोटे कुँवर के महल में ?....” धीरे से कहा कुँवर ने फिर कुँवरानी की ओर देखा।

“मैं रानी साहिबा की ड्योढ़ी पर भी इत्तला करता आया हूँ....” वारिस ने कहा।

“उन्हें क्यों जगाने गया तू ?....”

“जगाता नहीं हुजूर ! तो सवेरे रानी साहिबा सारी वार-दात सुनकर मुझे ही डाँटने लगती....मैं जानता हूँ न....खुदा बाखैर रखे रानाँमाँ को। गरीब-अमीर सब उनकी निगाहें-कर्म में एकसाँ हैं....”

“क्या है रे वारिस ?....”

सब की निगाहें दरवाजे की ओर घूम गईं।

मुख पर चालीस साल की गम्भीरता लिए एक सौम्य नारी मूर्ति खड़ी थी। ये थी रामगढ़ रियासत की रानी और छोटे कुँवर चंचलनारायण की सगी माँ।

“मेरा बेटा तो सकुशल है ? कुछ हुआ तो नहीं मेरे अचल को ?...” रानी साहिबा अन्दर आकर बोलीं।

“आपका एकवाल है हुजूर कि मौत भी मात होकर लौट गई”—वारिस ने कहा—“खुदा जिसको जिन्दगी बख़्शे, उसका मौत कुछ विगाड़ नहीं सकती रानीमाँ ! हुजूर कुँवर साहिब बाल-बाल बच गये...शुक्र अल्लाहताला का....”

रानी साहिबा आकर पलंग पर बैठ गईं।

बोलीं—“मेरी समझ में नहीं आता कि राजा साहब के मरते

ही अचल जैसे लड़के का कौन दुश्मन पैदा हो गया ? यह तीसरी घटना थी शायद !...तू होशियार क्यों नहीं रहता रे अचल ?....”

“मैं तो होशियार ही रहता हूँ माताजी ! आज ही देखिये, किस शान से बच गया !”—बोला कुँवर ।

“कुँवरानी बहू ! तू कुछ बता सकती है कि यह किसका काम है ?”—रानी साहिबा ने पूछा ।

“नहीं माताजी !”—कुँवरानी ने कहा—“मैं क्या जानूँ ?.... आज्ञा हो तो एक बात कहूँ ?”

“मैं जानती हूँ कि तू क्या कहेगी ?...” बोली रानी साहिबा—“यही कहेगी न कि अचल बड़ा लापरवाह है, इससे राज-काज सम्हलेगा नहीं....और चंचल बड़ा होशियार है, उसे ही मैं सारी रियासत सौंप दूँ....मगर कुँवरानी ! तू जानती है कि अचल बड़ा है, रियासत इसकी है । मैं इसकी सगी माँ नहीं, फिर भी यह मुझे अपनी माँ समझता है । यह मुझे रखे तो रहूँ, निकाल दे तो चली जाऊँ चंचल को लेकर....मगर मैं दुनिया को यह कहते नहीं सुनना चाहती कि अचल रानी साहिबा का सौतेला बेटा था, सो उन्होंने उसका अधिकार छीनकर अपने बेटे को दे दिया....”

“ऐसा न कहिये माता जी !....”

“बहू ! मैं स्वप्न में भी कभी यह नहीं सोचती कि अचल मेरे पेट का नहीं । इसके जैसा बेटा पाकर कौन स्त्री माँ बनना नहीं चाहेगी ?....कुँवरानी ! माँ की गोद इतनी छोटी नहीं होती कि उसमें सिर्फ अपने पेट के बच्चे के लिये स्थान हो । नारी की ममता बहुमुखी होती है । उसका कोई सीमित दायरा नहीं.... मैं समझती हूँ कि हम लोगों का अब अलग-अलग महलों में

रहना ठीक नहीं। न जाने कब कौन-सी खुराफात उठ खड़ी हो ?.... कल से तुम लोग मेरे महल में चलकर रहो। चंचल की इच्छा होगी तो वह भी अपना महल खाली कर वहीं आ जायगा।”

“आप तो बेकार परीशान होती हैं माताजी !” कुँवर अचलनारायण ने कहा—“हम लोग यहीं ठीक हैं। वहाँ चलने पर आपके पूजा-पाठ में बाधा पड़ेगी....”

“जहाँ इच्छा हो वहाँ रहो, मगर खूब सावधान होकर रहो....जिस दिन तुम्हें कुछ हुआ, सच कहती हूँ, मैं भी अपना गला टीप लूँगी....” रानी साहिबा करुण स्वर में बोलीं।

“रानी माँ जुग-जुग जियें”—वारिस बोला—“खुदा कसम ! पहले वारिस की जान जायगी, तब हजूर कुँवर साहब पर वार होगा...”

“अरे वारिस ! तुम्हें यह क्या हो गया है ? कंधे से खून बह रहा है तेरे ! सारा शरीर तर हो गया है अंधे ! कैसे लग गया घाव ?”—रानी साहिबा ने पूछा।

“जरा सी खँरोच है रानी माँ ! अभी फूँक मारते अल्लाह-कसम अच्छी हो जायगी बिल्कुल...”

“इस वारिस के बाप ने राजा साहब के पीछे अपनी जान दे दी, अब यह छोकरा अचल के पीछे पागल बना है। अरे बेवकूफ ! खड़ा-खड़ा मुँह क्या देख रहा है ? जाकर घाव धो डाल और पट्टी बाँध ले....” रानी साहिबा ने वारिस को डाँटा।

“खुदा कसम हजूर ! हम गरीबों को आपकी दरियादिली ने बेमोल खरीद लिया है....मैं जाता हूँ, आप नाराज न हों रानीमाँ ! सोचता था, गुलनार सोई होगी, उठते ही बिल्ली की तरह पूँछ उठाकर खाँव-खाँव करने लगेगी, वरना अब तक तो मैं चला गया होता....”

वारिस चला गया।

“वारिस जैसे वफादार नौकर नहीं मिलते—” रानी साहिबा ने कहा—“उसे खून बहता रहा और तुम लोग बैठे-बैठे देखा किये। छुट्टी भी नहीं देते बना उसे? जानते थे कि बिना हुक्म पाये वह टलेगा नहीं, चाहे मर कर गिर जाय... ललित सो गया क्या?....”

“अभी तो उठा था माताजी!”—कुँवरानी ने कहा।

“माँ! तुम भी आ गई हो”—अभी-अभी दरवाजे पर आ खड़े हुए युवक ने कहा, जिसके बदन पर एक कीमती स्लीपिंग-सूट था।

“लो, चंचल भी आ गया”—रानी साहिबा बोलीं—“आ चंचल! तेरा बड़ा भाई तो आज बाल-बाल बच गया बेटा!...”

“माँ! वारिस से कह दो मुझे रात में जगाया न करे, मेरी नींद खराब हो जाती है”—चंचल ने कहा।

यही बीस साल की उमर थी। राजा का छोटा लड़का था सो सौन्दर्य के साथ-साथ विलासिता की भी आभा थी मुख पर।

“क्या कहता है रे चंचल!”—रानी साहिबा विगड़कर बोलीं—“इधर इतनी बड़ी घटना हो जाय और तुम्हें कोई जगाये भी नहीं?... तू छोटा बनकर क्या पैदा हुआ, सारा भार अचल पर लाद कर खुद चैन करना चाहता है?....”

“भैया! कहीं चोट तो नहीं आई?”—चंचल ने कुँवर से पूछा।

“चोट नहीं आई तो तू जगा कैसे?”—अचल ने हँसकर कहा—“माताजी! इसे एकाध छटाँक अफीम खिला दिया कीजिये, ताकि आराम से सोये....”

“तुम्हें ही तुम्हारी माताजी अफीम खिलाती रही होंगी

सुलाने के लिये...रोते भी तो बहुत थे तुम लड़कपन में कि सारा महल ही जग जाता था....” चंचल तुनक कर बोला ।

“क्यों रे चंचल ! तेरी और अचल की माँ कोई दो हैं क्या ?....” रानी साहिबा ने कहा—“मेरे रहते तेरी ऐसी बात अच्छी नहीं...अरे, बड़े कुँवर का पैर नहीं छुये ? कितनी बार तुम्हें समझाऊँ...तू तो अपने खानदान का रस्म-रिवाज एकदम ही भूलता जा रहा है....”

“माँ ! मैं भैया का पैर नहीं छूता...वे अपने जूते से मेरी उँगली दबा देते हैं....भाभी का पैर कहो तो छू लूँ...कितनी अच्छी हैं भाभी !” कहते हुए चंचल ने एक नजर कुँवरानी पर डाली ।

“मेरा पैर न छुओ छोटे कुँवर !”

“क्यों बहू ?...छोटा है न ! बड़ों का आदर तो उसे करना ही चाहिये...” रानी साहिबा ने कहा ।

“मगर पैर छूते-छूते छोटे कुँवर मेरे पैर की उँगली जो दबा देते हैं...नहीं माताजी ! मैं ऐसे नटखट कुँवर से अपना पैर नहीं छुलाती...” हँसकर बोली कुँवरानी—“अब आप जाकर आराम करें माताजी....”

“नहीं तो सबेरे जुकाम हो जायगा...है न भाभी !...” चंचल ने कहा—“माँ, चलो हम लोग चलें, भाभी को नींद आ रही है । बाप रे बाप, भाभी को जब नींद आती है तो इनकी आँखें कमल की कली बन जाती हैं कि रात भर तक खुलती ही नहीं...”

“तू बड़ा शैतान है चंचल !...चल, अब चलें...” रानी साहिबा जाने के लिये घूम पड़ी ।

चंचल और रानी साहिबा के चले जाने पर कुँवरानी भी ललित को गोद में लिये बाहर जाने लगी तो—

“कहाँ चलीं ?...”

“अपने कमरे में”—बोली कुँवरानी, आम की फाँक जैसी आँखों से रस ढालती हुई—“सोने नहीं दोगे क्या ?”

“सोओ न, रोकता कौन है...मगर इसी कमरे में....”

“क्यों ?....”

“मुझे डर लगेगा न !”—कुँवर ने हँसकर शरारत के साथ कहा ।

“चलिये, मैं नहीं सोती...” आँखों से रस ढालने के बदले तीर चलाकर बोली कुँवरानी ।

“तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे कमरे में चलता हूँ....सच कहता हूँ कविता ! आज तो तुम्हारे बिना मैं एक पल भी नहीं रह सकूँगा....यहीं सो रहो न ! नींद उचट गई है । कुछ बात ही कर लेंगे घुल-मिलकर...”

“रहने दीजिये घुलने-मिलने को, अरेरे, हाथ छोड़िये न !.... अच्छा जी, मैं सोती हूँ, अब तो खुश !”

कुँवरानी पलंग पर आ बैठी और ललित को बीच में सुलाकर स्वयं भी सो गई ।

“यह क्या ?”—कुँवर बोला—“बीच में यह दीवार कैसी ? इस ललित को एक किनारे सुलाओ कविता !”

“आखिर क्यों ?....इस दीवार की नींव भी तो तुम्हीं ने रखी थी, यह ललित किसी दूसरे का बेटा तो नहीं ? किनारे सोने पर कहीं गिर पड़ा तो ?....”

“बार्ते मत बनाओ....सीधे से बीच में सोती हो या नहीं ?....”

“नहीं !....क्या करोगे ?...”

“तो यह ? ..” कहकर कुँवर ने कुँवरानी को जबरदस्ती अपने पास खींचकर बीच में सुला लिया ।

कुँवरानी ने हाथ बढ़ाकर 'बेडस्विच' दबा दिया। कमरे में अँधेरा घुस आया। दम्पति का शरीर लिहाफ में छिप गया।

“यह क्या करते हो ?....” अँधेरे में जैसे कोई कोयल कूक चठी।

“कुछ नहीं....” कुँवर का स्वर था—“दूर सिकुड़ी पड़ी हो... जरा ठीक से सोओ....शादी के चार साल बिता चुकी हो। क्या अब भी अँधेरे में लाज लगती है ?”

“आप तो बड़े वैसे हैं जी !...अँ देखो, ललित जग जायगा.... अपने हाथ जरा दूर ही रखो...”

“मेरे अपने हाथ अपने वश में नहीं..”

“अच्छा !...दिल से तो हाथ धो ही चुके थे, अब हाथ से भी बे-हाथ हो गये...अरी माँ ! बड़े बेदरदी हैं आप तो ?...अब तो हो गया न ?...छोड़िये...छोड़िये भी, कोई पुकार रहा है क्या ?...”

दोनों ध्यान से सुनने लगे।

दूर से आवाज आ रही थी—

“गुलनार ! अब तो दरवाजा खोलो हूर !...खुदा कसम, ठंढ से सिकुड़ा जा रहा हूँ...कम्बख्त जाड़े को भी आज ही पड़ना था...सुनती हो मेरी हूर ! जरा दिल का फाटक खोलकर भाँकों तो मेरी मत्का !...तुम्हारे खाविन्द, जनाब वारिस अली खाँ साहेब तशरीफ फरमाये हैं...गुलनार ! ओ गुलनार की चची !...सुनती है कि नहीं हरामजादी !...खुदा कसम, औरतों की नींद बिना लात खाये भागती ही नहीं...दरवाजा भी कम्बख्त ऐसा जकड़बन्द है कि लात डालने तक का कहीं छेद नहीं...अरे, अब तो आँखें खोलो मेरी बुलबुल !...सुअर ने ऐसा छुरा भोंका है कन्धे में कि सारा का सारा खून पानी बनकर

निकला आ रहा है बाहर। पकड़ पाता चचा को तो गुलनार-कसम, भूनकर चबा जाता...या रब ! ऐसी सुतकड़ बीबी की ईजाद ही तूने क्यों की ?...सुनती है गुलनार !...तेरी कसम, अब मैं लौट जाऊँगा....”

बड़ी देर तक दोनों सुनते रहे। एकाएक कुँवरानी हँस पड़ी। बोली—“बेचारा वारिस पुकार रहा है अपनी बीबी को...”

“और गुलनार आँखें बन्द किये चारपाई पर पड़ी-पड़ी सब कुछ सुन रही होगी”—कुँवर ने कहा—“औरतों का अन्दाज भी गजब का होता है...”

“अच्छा, औरतों की तारीफ़ रहने दीजिये और आँखें बन्द करके नींद को बुलाइये...”

“जरा और खिसक आओ न मेरे पास ! बीच में जगह खाली रहने से जाड़ा लगता है...”

“लीजिये...अब तो जगह खाली नहीं रही ?...मुँह अपना उधर ही रखिये...”

“क्यों ?”

“आपके दाँत बहुत तेज हैं...”

“और तुम्हारे गाल ?...”

“बहुत मुलायम...” कहते-कहते जैसे कुँवरानी उस अँधेरे में भी शर्म से लाल-लाल हो उठी।

कुँवर ने उसका नाजुक बदन अपने हाथों में भर लिया।

छोटी-छोटी दूबों के सर पर बैठी हुई शबनम मुस्करा पड़ी।

Sahityadesh.blog

“अरी गुलनार बीबी ! कान पर जूँ रेंगी या नहीं ?” वारिस ने पुकारा ।

“रेंग गई है...आती हूँ...” भीतर से एक मीठी आवाज सुनाई पड़ी ।

“शुकर है खुदा का...जागी तो सही...पुकारते-पुकारते परेशान हो गया बुलबुल तुम्हें...”

महल की चहारदिवारी के एक कोने में नौकरों के रहने के लिये कार्टर बने थे । अपने कार्टर के दरवाजे पर रात के दो बजे, जख्मी वारिस अपनी बीबी गुलनार को जगा रहा था ।

बड़ी देर के बाद छोटा-सा दरवाजा हल्की आवाज के साथ खुला और हाथ में एक छोटी-सी लालटेन लिये सत्रह-अठारह की एक बेहद हसीन सूरत दिखाई दी ।

यह थी गुलनार, वारिस की चाँद-सी बीबी । चेहरा तो इतना खुशनुमा था कि हाथ की लालटेन भी शरमा रही थी ।

“अरे, तुम हो मेरे मालिक !”—अजीब अन्दाज़ से बोली गुलनार, वारिस को देखकर ।

“तुम्हारी नरगिसी आँखों की कसम गुलनार ! ऐसी सोती हो कि बल्लाह, मैं तो मर गया जाड़े में खड़े-खड़े...”

“नींद निगोड़ी को क्या कहूँ मेरे राजा ! पकड़ लेती है तो छोड़ती ही नहीं...बड़ी जल्दी आ गये आज तो ?...अभी तो मुर्गा भी नहीं बोला....”

“कितनी देर से मुर्गे की तरह कुकुड़कूँ कर रहा हूँ मगर तुम सुनो तब तो ?....तेरी भरी जवानी की कसम बुलबुल ! आज जैसी तो तू कभी न सोई होगी...”

“मुझे माफ कर दो मेरी जान !...सच कहती हूँ, जैसे ही नींद खुली, दौड़ी आई हूँ....चलो, अन्दर चलो....”

गुलनार ने अपने मुलायम हाथों से वारिस का कुर्ता पकड़ लिया मगर तुरन्त ही चौंकर छोड़ दिया और लालटेन की धुँधली रोशनी में अपनी हथेली देखने लगी।

देखकर मदिरालु आँखें भय से फट पड़ीं। गुलनार की नाजुक हथेली पर खून के गाढ़े धब्बे पड़ गये थे।

डरकर वह दो पग पीछे हट गई—“खून !...तुम्हारे कपड़े तर-बतर हो रहे हैं मेरे सरताज ! किसकी जान लेकर आ रहे हो तुम ?...ताजा खून है यह तो....मेरे खुदा ! यह क्या क्यामत ले आये तुम ?...”

“मेरा ही खून है यह गुलनार ! कन्धे में छुरा लग गया है....” बोला वारिस।

“ओ मेरी मैया ! छुरा मेरे कलेजे में क्यों न आ लगा ?...” गुलनार लालटेन उठाकर वारिस का शरीर देखने लगी। आँखें भर आई उसकी।

“तेरी कसम गुलनार ! बहुत जरा-सी चोट है....रो मत अब तो....चल अन्दर चल...”

दोनों मकान के अन्दर आ चारपाई पर बैठ गये।

“किससे लड़ पड़े तुम ?...”

“किसी से भी नहीं....”

“जरूर उलझ पड़े होंगे किसी से....कोई बेकसूर को छुरा नहीं मारता....तुम्हें अपनी जान की फिकर नहीं तो इस मासूम गुलनार पर तो तरस खाया करो....सच कहती हूँ, कभी कबरे में सोने चले तो मैं तुमसे पहले ही तैयारी कर लूँगी....कितनी दफा कह चुकी कि मियाँ, जमाना बुरा है—पहलवानी छोड़ दो....”

“तुम तो खामखाह खफा होने लगती हो गुलनार !... वारिस को तुमने इतना जलील समझ लिया है कि अपनी जान की खातिर मैं अपने आका का खून बहता देखूँ ?... मरहूम राजा साहिब को खुदा जन्नत बख्शे ! उनका नमक हमारे खानदान की रगों में बह रहा है । वारिस उसी बाप का बेटा है, जिसने आका के लिये अपनी जान तक कुर्बान कर दी थी.... एक गुलनार की खुशी वारिस की नमकहलाली में फर्क नहीं डाल सकती....”

कहकर वारिस अपना कुर्ता उतारने लगा ।

“क्या हुआ था ?” पूछा गुलनार ने ।

“कोई शैतान का बच्चा बड़े कुँवर साहिब का खून करना चाहता था”—वारिस बोला—“यह तो कहो कि कुंवरानी साहिबा वक्त पर होशियार हो गईं... बीवी हा तो खुदा कसम ऐसी....”

“या मेरे मालिक ! यह तो बहुत बड़ा घाव है....” गुलनार चीख पड़ी ।

“थोड़ा पानी दो... खड़ी-खड़ी चीखो मत... हो तो थोड़ा साफ रुई भी लेती आओ...”

गुलनार दौड़ पड़ी । थोड़ी ही देर में वारिस के घाव की मरहम-पट्टी हो गई ।

“कौन मुआ इतना बड़ा घाव कर गया कंधे में ?....”

“कम्बख्त भैंसे के बराबर था गुलनार !.... मगर मैंने भी वह दाँव मारा बचा को कि चारो खाने चित्ता गिरे.... जब देखा कि कुश्ती में नहीं जीत सकता तो छुरा चलाकर भाग निकला हरामी का पिछा !....”

“पकड़ लाये होते सुअरजादे को तो अपनी जूती से सर चटनी कर देती”

“रहने दो, तुम्हारी जूती बड़ी कमजोर है हूर ! और उसका सर तो विसखोपड़े जैसे था....”

“विसखोपड़े जैसा !....कल्लुए की पीठ जैसा रहा होगा मजबूत, तभी तो तुम्हारा घूँसा असर नहीं कर सका...मेरी मैया ! मुझपर कभी तुम्हारा घूँसा बैठ जाता है, तब तो तारे दिखने लगते हैं मेरी आँखों को....”

“जवानी कसम ! जब तुम मेरे घूँसे की तारीफ करती हो तो मेरा हाथ खुजलाने लगता है गुलनार !”

“किसी पर शक है तुम्हारा—पहचाना नहीं उस मरदूद को ?”

“शैतान मुँह छिपाये हुए था...मुझे तो जमुना जैसा लगता था....”

“कौन जमुना !....छोटे कुँवर का मुँहलगा भतीजा ?...”

“अरे चुप !....नौकर को भतीजा बनाती है ?....जरूर वही कल्लू था बुलबुल ! देखा तो है तुमने, काला जिन्न जैसा है । रात में कभी देख लो तो दिन को बुखार चढ़ जाय । पता नहीं क्या खाता है उल्लू का पट्टा...”

“छोटे कुँवर ने भैंसा पाल रखा है चुनमुन के अच्चा !...जौ का आटा खिलाते होंगे....”

“क्या कहती हो गुलनार ! चुनमुन कौन है, कहाँ है ?”

“मेरे पेट में....” कहकर गुलनार लजा गई ।

तो वारिस ने उसे अपनी गोद में खींच लिया । बोला—
“सच कहती हो मेरी मल्का !....”

“सच कहने का इरादा तो नहीं था, मुआ एक-ब-एक मुँह से फूट पड़ा....अब तो तैयारी कर रखो बेटा खिलाने की....”

“मैं बिलकुल तैयार हूँ । तुम बेटा दिखाओ तो सही...”

“मैं क्या दिखाऊँ ?...खुदा दिखाये जब तो ?...क्यों जी ! छोटे कुँवर, बड़े कुँवर साहिब की जान लेना चाहते हैं ?...रानी माँ कुछ नहीं बोलती ?...आखिर सौतेली माँ ही तो !”

“चुप रह गुलनार ! रानी माँ का कोई कसूर नहीं, उन्हें शायद कुछ मालूम भी नहीं...छोटे कुँवर बड़े कुँवर की जान लेकर रियासत अपने कब्जे में करना चाहते हैं....और अपने बड़े कुँवर तो पूरे बकरे हैं, चाहे जो उनकी गर्दन तराश ले....ऐसों की गुजर इस दुनिया में नहीं अलबेली !....”

गुलनार उसकी गोद से उठ खड़ी हुई और नीचे जमीन पर दूर जा बैठी ।

वारिस ने पुकारा—“ऐ गुलनार ! सुनती हो....अभी से मत रूठो...खुदा कसम, जब बचा हो जायगा, तब तो तुम और भी हसीन लगोगी । मैं तो एकटक देखा करूँगा तुम दोनों को...तुम्हारी यह दिलफरेब अदा, माँ बन जाने पर तो और भी गजब ढायेगी...”

“मुझे तुम्हारी यह तारीफ जरा भी नहीं भाती...”

“लो, सच बात में कौन-सी तारीफ रखी है ?...सदके जी, सदके !...आओ थोड़ा प्यार दे दो तो मैं चला जाऊँ अपनी ड्यूटी पर....मेरे न रहने पर महल के सब पहरेदार मुर्दों से बाजी लगाने लगते हैं पाजी....”

“ऐसी हालत में तो तुम्हें नहीं जाने दूँगी मैं....” गुलनार पास आकर बोली—“तुम कितने जखमी हो....”

“अभी तो यह जखम छोटा ही है गुलनार, मगर मेरे न जाने पर कोई वारदात हो गई तो कितना गहरा जखम लगेगा कि खुदा कसम, मैं जिन्दा न रह सकूँगा...मुझे जाना ही होगा

बुलबुल ! फरमावरदार नौकर के लिये अपने जिस्मानी दर्दे की कोई कीमत नहीं, फर्ज ही उसका सब कुछ है...देर हो रही है गुलनार !”

वारिस ने गुलनार को अपने पास खींच लिया और उसके गुलाबी गालों पर एक हलकी चपत देकर बोला—“सीधे से बुलाता हूँ तो और दूर भागती हो मेरी जान !....”

रानी साहिबा ने सर उठाया । साड़ी के छोर से सुनहरे चश्मे को पोंछकर आँखों पर लगाया, फिर चंचल की ओर देखा । चंचल कुछ हिचकिचाया-सकुचाया-सा खड़ा था, जैसे कोई बात कहना चाहता हो ।

“तू गया नहीं अभी चंचल !....कह तो दिया कि जा देख आ सिनेमा ...मगर तेरी यह घूमने-फिरने की आदत मुझे जरा भी नहीं भाती....जब देखो तब सिनेमा, क्लब ! भगवान जाने इसे और भी कोई काम सूझता है या नहीं ?....अचल को देखता है कि नहीं ? दिन-रात बेचारा काम में पिसा रहता है । तू क्या और भी कभी जवान होगा ? अब तो लड़कपन छोड़ दे...बीस सावन तो देख चुका....”

“माँ ! मैं नहीं जाऊँगा सिनेमा !...” चंचल धम्म से कुर्सी पर बैठ गया ।

“क्यों ?....माँ की बातों का तीर लग गया ?....ऐसा ही हयादार होता तो तेरी जवानी को पर न निकलते...राजा का बेटा है तू तो कंगालों की तरह मारा-मारा क्यों फिरता है ?...”

“मुझे बिगड़ो मत माँ ! अचल भैया ने तुम्हारा दिमाग

खराब कर दिया है। दिन-रात उन्हीं के गुण गाती रहती हो—
जैसे मैं तुम्हारा बेटा न हुआ घूरे का कूड़ा हो गया...मेरी कोई
गिनती ही नहीं।”

“कौन तेरी गिनती नहीं करता ?....अचल और कुँवरानी
तुम्हें आँखों में भरे फिरते हैं, मेरा तो बेटा ही है तू...मगर
दुनिया में केवल रिश्ता ही प्यारा नहीं होता चंचल ! रिश्ते को
मजबूत करने के लिये इनसान में व्यवहारिक उच्चता भी होनी
चाहिये...तू अपने को सुधार तो पहले...”

“तुम अपना दिमाग सुधारो माँ ! सारी रियासत तुमने
गैरों को सौंप दी है....”

“कौन है गैर ?”

“मैं तुम्हारा बेटा हूँ, कभी मेरी भी राय लेती हो कुछ ?
अचल भैया जो मन में आता है करते हैं। देख लेना, तुम्हारे
मरने पर चंचल भीख न माँगने लगे तो कहना...”

“मगर अन्धे लड़के !”—रानी साहिब बिगड़ कर बोली—
“मैं पूछती हूँ, अचल क्या कोई गैर है ? मैं उसकी माँ न सही
मगर वह मेरे पति का बेटा तो है ?....वह मेरे पेट से पैदा नहीं
हुआ, मगर तेरे बाप का खून तो है उसके शरीर में ?....तुम्हारे
तो लाख दर्जे अच्छा है वह बड़ा कुँवर !....”

“ऐसे नहीं चलेगा माँ !...तुम अपना हिस्सा अलग कर लो...”

“अपना हिस्सा अलग कर लूँ या तेरा ?....तुम्हें अलग
रहना हो तो रह, मगर मेरे जीते जी रियासत का एक टुकड़ा
भी तुम्हें नहीं मिलेगा, इसे याद रख !....रोटी बाँटकर खाई
जाती है, मगर जायदाद बाँटने से मिट जाती है....अचल जैसा
दिमाग जिस दिन हो जाय तो सारी रियासत तुम्हें ही वह
सौंप देगा....”

“मुझे भीख नहीं चाहिये....मुझे अपना हिस्सा चाहिये...मैं नहीं जानता था कि माँ भी बेटे का गला काट सकता है....”

“चुप रह लड़के ! रियासत न तेरी है, न अचल की—मेरी है, मैं उसकी मालकिन हूँ...तू अभी दूर हो जा मेरे सामने से...”

“क्या है माताजी !....क्यों बिगड़ रही हो चंचल को ?”

अचल को देखकर रानी साहिबा का क्रोध उड़ गया। हँसने की कोशिश करती हुई बोली—“कुछ नहीं बेटा !...यह चंचल इतना बड़ा हो गया मगर तमीज नहीं आई इसे...राजा का बेटा होकर माँ से लड़ता है—जमाना मुने तो क्या कहे ?”

रानी साहिबा ने असली बात छिपा ली। सुनकर अचल को व्यर्थ का दुख होता।

अचल ने चंचल का हाथ पकड़कर कहा—“क्यों रे, माताजी से क्यों लड़ रहा था तू ?...”

“मैं कहाँ लड़ रहा था भैया !”—अभिनय-पटु चंचल ने भी अपनी ऐक्टिंग बदल दी—“माँ ने ही तो पहिले बिगड़ना शुरू किया था....”

“सुन लो कुँवर इस छोटे की बात ! साँप की तरह क्षण-क्षण पर केंचुल बदलता है यह...” रानी साहिबा ने कहा—“इतना बड़ा हुआ मगर सिनेमा और क्लब के सिवा इसे कुछ सूझता ही नहीं...”

“तुम भी तो माताजी, इसे बेकार बिगड़ने लगती हो... सिनेमा ही न देखता है या और कुछ ?...छोटा है तो खेलेगा-कूदेगा नहीं ? इसे फिक्र ही किस बात की है ?...अब खड़ा क्यों है चंचल ! जाता क्यों नहीं ? या पूरे टिकट के पैसे देकर आधा ही खेल देखने का इरादा है ?...यह भी तो एक ही शैतान है...” अचल ने छोटे कुँवर को डाँटा।

चंचल मुँह बिचका कर चला गया।

बाहर ही उसकी कार खड़ी थी। ड्राइवर ने दरवाजा खोल दिया। चंचल अन्दर जा बैठा।

“होटल चलूँ न हुजूर !...” पूछा ड्राइवर ने।

“हाँ !....जमुना कहाँ गया ?”

“वे मिस एनी को लेकर होटल में आने को कह गये हैं....” बोला ड्राइवर।

और कार तेजी के साथ दौड़ पड़ी। थोड़ी ही देर में वह शहर के सबसे बड़े होटल के सामने जा खड़ी हुई।

चंचल उतर कर भीतर की ओर चला। स्वयं मैनेजर ने दौड़ कर उसका स्वागत किया, जैसे वह अक्सर वहाँ आता रहा हो।

“कमरा खाली है ?”—चंचल ने पूछा।

“आपके लिये तो हमेशा एक कमरा रिजर्व रहता है। हुजूर !”—मैनेजर ने कहा—“आप नं० १३ में तशरीफ रखें....”

चंचल होटल की खूबसूरत चौड़ी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आया। पीछे-पीछे वर्दी पहने एक बेयरा भी था।

बेयरा ने लपक कर दरवाजा खोला। चंचल भीतर प्रविष्ट हुआ।

कमरा बड़े ही अच्छे ढंग से सजा था। आदमकद शीशे, गद्देदार पलंग, बड़ी-बड़ी दो आलमारियाँ, एक बड़ी डायनिंग टेबुल और अगल-बगल चार कुर्सियाँ, बैरा को बुलाने की घंटी, टेलीफोन का एक्सटेंशन, कोने में एक छोटा-सा रेफ्रिजरेटर, दो कीच, एक रेडियो, एक वेडसाइड टेबुल—वह कमरा खास छोटे कुँवर के लिये सजाया गया था।

चंचल एक कोच पर जाकर बैठ गया।

बेयरा ने रेडियो की स्विच खोल दी। कमरे में मधुर गायन-स्वर गूँज उठा।

“कुछ लाऊँ हजूर ?....” पूछा बैरा ने।

“अभी नहीं...” चंचल ने कहा—“मिस एनी अभी तक नहीं आई ?”

“नहीं हजूर !....वक्त हो गया है, आती ही होंगी...” कहकर बेयरा बाहर जाकर दरवाजे पर रखे स्टूल पर बैठ गया। दरवाजे पर एक हरा परदा खींच दिया।

चंचल कोच पर पाँव फैला कर पड़ गया। वह कुछ चिन्तित सा लग रहा था। जेब से चाँदी का केस निकाल कर उसने एक सिगरेट जलाई और पीने लगा। हृदय की चिन्ता धुँयें के गुबार के साथ बाहर निकल कर ऊपर हवा में उड़ चली।

कुछ ही देर बाद दरवाजे का परदा जरा-सा खिसका और एक एंग्लोइण्डियन लड़की ने प्रवेश किया।

रंग गोरा, चाल मस्तानी, आँखें कुछ भूरी मगर कातिल, पहनावा अँग्रेजी मगर बेहद आकर्षक, बाल आधुनिक ढंग से सँवारे, गालों पर पाउडर और होठों पर लिपस्टिक के कारण उम्र का अन्दाज मुश्किल, हाथ में चमकता-काला हैंडबैग, कसी पोशाक के ऊपर उठे हुए छाती के दो उठाईगीरे !

चंचल आँखें बन्द किये कुछ सोच रहा था। उसने उस लड़की का आना नहीं देखा।

“Hallo चंचल कुँवर ! How do you do ?—” लड़की ने पैर आगे बढ़ाते हुए कहा।

चंचल ने सर उठाकर देखा तो चेहरे पर हलकी मुस्कराहट आ गई, बोला—“Okay, thank you, अभी चली ही आ रही हो क्या मिस एनी ?”

“Just coming. तुम तो आज बड़ी अफसोस में नजर आती है चंचल कुँवर ! क्या बात हो गया ?....” मिस एनी चंचल के पास कोच पर बैठती हुई बोली ।

“कुछ नहीं मिस एनी ! जमुना तुमसे मिला था ? तुम्हें बुलाने गया था...”

“Mr. जमुना ?...No no, I didn't see him....हम एक friend के पास चला गया था...Mr. जमुना अब आती ही होगी Mummy से पूछ कर ...कल रात में कुछ Success मिला ?....”

“नहीं मिस एनी ! जमुना को आ जाने दो तो सब कुछ बताऊँगा...कुछ पियोगी ?....” चंचल ने पूछा ।

“Only Beer !....”

“वियर से क्या होगा ?...कुछ और लो....थोड़ा सुरूर चढ़े तो काम की बातें हों....”

“Then one peg Dry Gin....” एनी बोली ।

चंचल ने घंटी बजाई । बेयरा आया । उसने उसे ड्राई जिन लाने की आज्ञा दी ।

थोड़ी ही देर बाद तश्तरी में बोतल और गिलास रखे बेयरा आया और ‘वेड साइड टेबुल’ पर रख कर बाहर चला गया ।

“मुझे बहुत थोड़ा दो....Mummy को मालूम हो गई तो नाराज होगा....बस, that's all...”

गिलास में थोड़ी-सी जिन और सोडा डालकर चंचल ने अपने हाथों से एनी को पिलाया । फिर एनी ने भी तीन-चार पेग चंचल को पिलाया ।

“तुम एक पेग और लो मिस एनी !....” चंचल ने हठ किया

“No-no, हम जियादा नहीं पियेगा...”

“तो हम भी नहीं पियेगी”—उसी लहजे में चञ्चल ने कहा।

“तुमको पीना पड़ेगी....हम तुमको पिलाता है; तुम, जरूर पियेगी....हम तुमको कितना love करता है चञ्चल कुँवर !.... तुमको मेरी कसम ! दो Peg और पी लो darling !”—कहकर एनी ने दो पेग और पिलाया चञ्चल को।

“एनी डार्लिंग ! तुम मुझे कितना प्यार करती हो !”—चञ्चल ने एनी को अपने पास खींचते हुए कहा।

“और क्या तुम मुझको उतना प्यार नहीं करती ? कैसा बोलती है चंचल कुँवर !...” एनी गोल गेंद की तरह दुलक आई चंचल की गोद में अपने आप।

“मैं भी तुमको बहुत प्यार करता हूँ डार्लिंग ! तुमने मुझ पर जादू कर दिया है....” चञ्चल ने उसे अपने हाथों के बीच भर-जोर दबाते हुए कहा।

एनी ने एतराज नहीं किया। बोली—“जादू क्या बोलती ?... Oh you mean magio ?”

“यस !...” कहकर चञ्चल ने एनी के होंठ चूम लिये।

“Oh you Sweet beast ! तुम्हारी होंठ lipstick से लाल हो गया....हमारी Make-up खराब कर दी...Rascal है तुम Nice little rascal !”

कहकर एनी चञ्चल की गोद में सर रख कर लेट गई। बोली—“तुम हमको अपनी रानी बनायेगी चञ्चल कुँवर।

“Sure darling ! मुझे अपनी रियासत पर अधिकार कर लेने दो, फिर तो तुमसे शादी करके तुम्हें अपनी रानी जरूर बनाऊँगा....मुझ पर विश्वास करो मेरी प्यारी एनी !”

“बात देकर बदल तो नहीं जायगी तुम ?...”

“कभी नहीं....कितनी दफा तुम्हें अपना दिल खोलकर दिखा

चुका हूँ....क्या तुम्हें मुझ पर यकीन नहीं आता ?....दुनिया में मैं केवल दो ही चीजें पाना चाहता हूँ...एनी और रियासत को....”

“कल बड़ी कुँवर पर जो हमला किया उसमें Success मिला कि नहीं ? मिस्टर जमुना तो बड़ी बहादुर आदमी है। उसने बड़ी कुँवर को जरूर मार डाली होगी...”

“नहीं मिस एनी ! हम असफल रहे...कुँवरानी भाभी और वारिस के रहते हम कामयाब नहीं हो सकते...”

“वारिस कौन ? That giant ? My god he is like an elephant....तो कल भी बड़ी कुँवर बच गई ?...ऐसे कब तक काम चलेगी छोटी कुँवर ?...तुम जल्दी Success हासिल करो....”

“हम तो बहुत कोशिश कर रहे हैं मिस एनी !....अचल भैया को रास्ते से हटाने के बाद, भाभी और ललित को भी तो हटाना पड़ेगा...बड़ी मुसीबत है डालिंग !....”

“लो, मिस्टर जमुना भी आ गई...” एनी ने दरवाजे की ओर देखते हुए कहा।

उसी समय एक लम्बे-चौड़े आदमी ने प्रवेश किया, जिसका काला रंग रोशनी में अजीब ढंग से चमक रहा था। उसकी भयानक आकृति प्रकट कर रही थी कि वह व्यक्ति प्रथम श्रेणी का विश्वासघाती एवं खूनी है।

“मिस एनी ! आप यहाँ हैं ?”—उसने आगे बढ़ते हुए कहा—
“वातैसी है कि मैं आपके घर गया था। आपकी ममी से मुलाकात हुई। उन्होंने कहा कि आप एक घण्टे पहले ही जा चुकी हैं....”

“क्यों मिस्टर जमुना ! कल तो तुम्हें Success नहीं मिला....अब क्या इरादा है तुम्हारी ?....”

जमुना पास आकर एक कुर्सी पर बैठ गया।

बोला—“बातैसी है कि पता नहीं कैसे कुँवरानी साहिबा होशियार हो गई....मैं भी पकड़ लिया जाता मगर नसीब अच्छे थे, जो बच कर निकल आया...खैर ! कब तक हमारा वार खाली जायगा !...हमने दूसरा रास्ता सोच लिया है...मिस एनी ! क्या बड़े कुँवर को बातैसी है कि जहर दे देना ठीक नहीं होगा ?”

“You mean poison !....बहुत ठीक होगी....” एनी ने कहा—“poison दोगी तो बहुत जल्दी काम हो जायगी....बड़ी कुँवर के बाद कुँवरानी और ललित को भी एक साथ poison दे दिया जायगी....”

“मगर जहर मिलेगा कहाँ ?” चंचल ने कुछ संचिते हुए पूछा।

“कोई डाक्टर दे देगी—” बोली एनी।

“मैं सोच चुका हूँ—” जमुना ने कहा—“अपने फेमिली डाक्टर दास बाबू हैं न ! बातैसी है कि उन्हीं को मिलाया जाय....”

“तुम भूलते हो जमुना ! डाक्टर दास हमारे खानदान का पुराना डाक्टर है। वह कभी इस बात के लिये तैयार न होगा....”

“रुपया सब कुछ कर सकता है छोटे कुँवर !”—कहते-कहते जमुना के मुख पर एक पैशाचिक मुस्कराहट खेल गई—“रुपये से इन्सान का ईमान खरीदा जा सकता है, कानून बदला जा सकता है, बातैसी है कि खून को पानी साबित किया जा सकता है....”

“ठीक है, मगर डाक्टर दास रुपयों पर फिसलने वाला नहीं...मुझसे बढ़कर वह अचल भैया का तावेदार है...”

“Silly dootor, put him on the point of your pistol” एनी ने तेजी से कहा।

“मिस एनी ने ठीक कहा—” जमुना बोला—“रुपये से नहीं

तो पिस्तौल से डाक्टर दास ठीक हो जाँयगे...बातैसी है कि हमें यह काम जल्द से जल्द कर डालना चाहिये। वे लोग दिन पर दिन होशियार होते जा रहे हैं....”

“तो चलो, अभी डाक्टर दास से मिल लें।” कह कर चञ्चल उठ खड़ा हुआ।

एनी और जमुना भी उठ पड़े।

तीनों होटल से बाहर आकर कार पर बैठ गये। कार ने दस मिनट में ही उन्हें डाक्टर दास के दरवाजे पर पहुँचा दिया।

डाक्टर दास रोगियों से छुट्टी पाकर खाना खाने अन्दर चले गये थे।

डाक्टर का नौकर चञ्चल को पहचानता था। उसने इज्जत के साथ सबको बिठाया और अन्दर जाकर डाक्टर दास को उनके आने की सूचना दी।

दो ही मिनट बाद डाक्टर साहब लपके हुए आये।

अधेड़ अवस्था, फिर भी चाल में फुर्ती, चेहरे पर गम्भीरता आँखों में अनुभव की चमक। डाक्टर दास रामगढ़ रियासत के खानदानी चिकित्सक थे। राजा साहब उनकी बहुत इज्जत करते थे।

“ओहो, छोटे कुँवर की तबीयत आज फिर खराब हो गई ?....” कहते हुए डाक्टर दास कुर्सी पर आ बैठे।

“मैं बिल्कुल ठीक हूँ डाक्टर साहब !” बोला चञ्चल—
“एक जरूरी काम से आप के पास आया हूँ ”

“कहिये !....” कहते-कहते डाक्टर की दृष्टि एनी पर पड़ी, तो वे चौंक पड़े—“आप ?”

“ये मेरी दोस्त हैं”—चञ्चल ने कहा—“आप ने इन्हें पहले मेरे साथ नहीं देखा होगा...अभी हाल ही में दोस्ती हुई है।”

“यही तो मैं भी समझता था....” डाक्टर ने कहा—“हाँ, कहिये क्या सेवा करूँ ?....बड़े कुँवर मजे में हैं ?....”

“सब लोग ठीक हैं....मैं एक गुप्त बात कहना चाहता हूँ.... खुला दरवाजा बन्द कर देने में आपको कोई आपत्ति तो नहीं...हवा के साथ दो-एक शब्द बाहर चल गये और उन्हें किसी ने सुन लिया तो हम दोनों के लिये बुरा होगा...”

“ठीक है....दरवाजा बन्द करा दीजिये...मगर बात क्या है छोटे कुँवर ?....कोई गुप्त रोग....”

जमुना ने उठ कर दरवाजा बन्द कर दिया और भीतर से सिटकिनी भी लगा दी ।

तब चञ्चल बोला—“गुप्त रोग की बात नहीं है डाक्टर साहब !....आप हमारे पुराने डाक्टर हैं, सो कुछ मदद माँगने आया हूँ....काम हो गया तो समझिये हमारे साथ आपका भी काफी लाभ होगा...”

“आपकी रियासत से मेरी परवरिश होती है कुँवर साहब ! आप जो कहें, मैं करने को तैयार हूँ । लाभ की चिन्ता मुझे नहीं । आपकी कृपा से खाने-पहनने को काफी है । कोई बाल-बच्चे भी नहीं कि मरने के बाद की फिक्र करूँ ...”

“आप डाक्टर हैं....लोगों को दवा देकर जिलाते हैं.... है न ?....”

“जल्द आप अपना मतलब बयान कीजिए...” डाक्टर ने कहा । उसके मुख पर उद्विग्नता थी ।

“क्या आप दवा से लोगों को मार भी सकते हैं ?...” चञ्चल ने एकटक डाक्टर के मुख की ओर देखते हुए पूछा ।

डाक्टर चौंक पड़े मगर अपना भाव छिपा कर बोले—
“दवा का काम जीवन देना है कुँवर साहब ! जान लेने का काम

तो जहर ही कर सकता है। मगर जहर भी इतना घृणित नहीं। उचित मात्रा में सेवन करने से वह भी जीवन देता है—”

“मुझे जीवन देने वाली दवा नहीं, जान लेने वाला जहर चाहिये डाक्टर साहब !....एक खूराक अभी और दो खूराक बाद को...और तीन खूराक के बदले तीन हजार कैश....बोलिये, तैयार हैं आप ?”—चञ्चल ने पूछा।

“रुपयों की लालच डाक्टर को अपने फर्ज से नहीं गिरा सकती चञ्चल कुँवर !” डाक्टर ने दृढ़ स्वर में कहा—“मारने वाला वह ईश्वर है, इन्सान तो केवल अपने हाथ कलंकित करता है...डाक्टर से ऐसा कभी नहीं हो सकेगा। लोगों को जीवन-दान देकर इतना जो पुण्य कमाया है, वह एक ही पाप से धुल जायगा छोटे कुँवर !”

“अच्छा तो पाँच हजार !”

“मुझे क्षमा करें आप....”

“सात, आठ, नौ हजार !....”

“.....”

डाक्टर चुप हो रहे। रुपयों की चमक आँखों में समा रही थी। सोच रहे थे डाक्टर दास।

“दस हजार....ग्यारह, बारह हजार !....” तीर पर तीर छोड़ रहा था चञ्चल।

और अन्त में डाक्टर दास घायल हो उठे।

एक लम्बी साँस लेकर बोले—“किसकी जान लेनी है ?”

“आप तैयार तो हैं !....बारह हजार आपको कल सबेरे ही मिल जाँयगे....”

“मैं तैयार हूँ....नाम बताइये....”

“नाम से आपको क्या वास्ता ? तीन खूराक जहर की

कीमत मैं बारह हजार दे रहा हूँ, यह क्या कम है ?”—बोला चञ्चल ।

“कम तो नहीं मगर देने के पहले मैं यह जान लेना चाहता हूँ कि उसे आप अपने ही खानदान पर तो नहीं प्रयोग करेंगे”—

“अगर ऐसा ही करूँ तो ?”

“तो मैं बारह लाख पर भी तैयार नहीं...” डाक्टर की आवाज टढ़ थी ।

“सोच लीजिये खूब—”

“सोच लिया है...मैं राजघराने के साथ दगाबाजी नहीं कर सकता—”

चञ्चल ने आँखों-आँखों में जमुना से कुछ इशारा किया फिर डाक्टर से बोला—“क्या यह आपका आखिरी फैसला है !”

“बिल्कुल आखिरी...” डाक्टर उठने लगे तो—

“बैठे रहो डाक्टर !....” चञ्चल तड़प कर बोला—“तुम्हें मैं केवल रुपया नहीं दूँगा, एक और चीज दूँगा...”

“वह क्या ?...”

“मौत !—उधर देखो...”

डाक्टर ने भयभीत दृष्टि से जमुना की ओर देखा, जिसके हाथों में एक वजनी पिस्तौल चमक रही थी ।

“चञ्चल हार कर जाने नहीं आया है डाक्टर ! रुपयों की तुम्हें जरूरत नहीं मगर मौत की जरूरत है तुम्हें...देख रहे हो वह काली-सी मौत जमुना के हाथ में !....मेरा जरा-सा इशारा पाते ही वह गोली उगल देगी....बोलो, क्या कहते हो तुम ?”—

“मुझे छोड़ दीजिये....” डाक्टर ने प्रार्थना की ।

“तुम चाहो तो छूट सकते हो”—चञ्चल ने क्रूर हँसी-हँस कर कहा—“सिर्फ तीन खूराक, ज्यादा नहीं....और बारह हजार

रुपये, कम नहीं...और यह तनी हुई पिस्तौल मामूली नहीं। जरा-सा धड़ाका और तुम्हारी जान बेजान...जल्दी बोलो डाक्टर ! जमुना के हाथ काँप रहे हैं। अब पिस्तौल अधिक इन्तजार नहीं कर सकती....जमुना ! तुम डाक्टर के ठीक पीछे खड़े हो जाओ, ताकि जरूरत पड़ने पर निशाना खाली न जाय...”

डाक्टर का चेहरा पीला पड़ गया था। आँखों में भय नाच रहा था।

चञ्चल कूर आँखों से डाक्टर को एकटक देख रहा था।

जमुना डाक्टर के पीछे आ खड़ा था।

एनी खामोश थी।

“मैं तीन तक गिनता हूँ....तीसरी आवाज पर तुम्हारी मौत आ जायगी !....रेडी एक !....”

“.....”

डाक्टर का बदन काँप उठा।

उसने अपनी आँखें बन्द कर ली।

“दो !”

चञ्चल ने इतने जोर से कहा कि डाक्टर चीख उठा।

“ठहरिये....” बोला वह हाँफता हुआ—“मैं एक खूराक दे दूँगा....”

“बारह हजार पर तीन खूराक ! समझे डाक्टर ?”

“मैं रुपया नहीं चाहता....”

“मगर मैं तो तीन खूराक चाहता हूँ ! एक अभी, दो बाद में....जल्दी बोलो, नहीं तो मेरे मुँह से तीन निकल जायगा”—

“दूँगा....” डाक्टर हताश वाणी में बोला—“अभी तो एक खूराक चाहिये न ?”

“हाँ, जल्दी करो....” बोला चञ्चल ।

डाक्टर ने पास की आलमारी खोली और सफेद पाउडर की एक पुड़िया बाँध कर चञ्चल की ओर बढ़ा दिया ।

चञ्चल पुड़िया लेकर उठ गया ।

बोला—“देखो डाक्टर, तुम्हारी जवान काबू में न रही तो हमारी पिस्तौल भी बेकाबू हो जायगी...भलाई इसी में है कि अपना मुँह बन्द ही रखना । जवान हिलाते ही मौत ! समझे ?”

डाक्टर कुछ बोला नहीं । सर पकड़ कर कुर्सी पर बैठ गया ।

चञ्चल, एनी और जमुना बाहर आकर कार पर जा बैठे । कार चल पड़ी ।

रात के दस बज गये थे । छोटे से शहर की भीड़-भाड़ सन्नाटे में परिवर्तित हो गई थी ।

“जहर तो मिल गया”—बोला चञ्चल—“अब इसे देने का उपाय ?...”

“मिस एनी कर लेंगी”—जमुना ने कहा—“बड़े कुँवर मिस एनी को पहचानते नहीं । ये किसी बहाने से उनसे मिलेंगी और चाय पीने की इच्छा प्रकट करेंगी...मौका देख कर बड़े कुँवर के प्याले में....ठीक है न मिस ?”

“O. K., I will do it....” एनी ने कहा—“Poison मुझको दे दो....”

“घबड़ाना मत मिस एनी !...लो, पुड़िया सम्हाल कर रखो... भैया से खूब दिल खोल कर मिलना, मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे थोड़ी देर बाद आ जाऊँगा....मगर देखना, भैया बड़े सुन्दर हैं । कहीं उन पर लट्टू न हो जाना कि जहर का प्याला उन्हें न देकर खुद ही पी लो....”

“तुम क्या बोलती हो छोटी कुँवर ! हम जरूर Suooess करेगा....”

“Suooess तो करेगा तुम मिस एनी !” जमुना एनी की ही स्टाइल में बोला—“मगर कहीं तुम fail कर गया तो छोटी कुँवर बहुत नाराज होगी....”

“नाराज कैसे होगी ?....” एनी ने कहा—“हमारा would be husband है छोटी कुँवर !”

कार भागी चली जा रही थी। हत्या के बाँधनू बँध रहे थे।

जब से उस रात कुँवर अचलनारायण पर हमला हुआ, कुँवरानी ललित के साथ उसी के कमरे में सोती है। वह जानती है कि अचल बेहद लापरवाह है और उसकी लापरवाही किसी दिन उसकी जान ले सकती है। सारी खुराफात की जड़ चञ्चल है और चञ्चल की जरा भी शिकायत अचल सुनना नहीं चाहता।

अचल के कमरे में पलंग पर कुँवरानी बैठी है। छोटा ललित हँसता हुआ खेल रहा है। कुँवर मुग्ध दृष्टि से कभी कुँवरानी को देखता है, कभी ललित को। दाम्पत्य-जीवन में कितना सुख है, इसका अनुभव कुँवर को विस्मृत कर देता है।

“ऐ ललित ! तू सोयेगा नहीं ?” कुँवरानी ने खेलते हुए ललित का हाथ पकड़कर कहा—“सो जा बेटा ! दस बज रहे हैं....दिन को सो जाता है तब तो रात भर तेरी खुराफात चल निकलती है.... इधर आकर सो रह अब....”

“पहले बाबूजी को छुलाओ माँ ! बदे आदमी को पहले छोना चाहिये”—ललित ने तोतली वाणी में कहा ।

“तेरे बाबू जी अभी नहीं सोयेंगे...”

“क्यों माँ !....जग कल क्या कलेंगे बाबू जी ?....तुमछे बातें कलेंगे न ?”

“नहीं रे, मुझे फुसलायेंगे”—कह कर हँसती हुई कुँवरानी ने तिरछे-तिरछे कुँवर की ओर देखा ।

कुँवर भी हँस पड़ा ।

ललित बोला—“माँ ! तुम्हें बाबू जी फुछलावें तो तुम फुछलना मत....बले खलाव हैं बाबूजी ! मुझे लकली का घोला भी नहीं लाते....माँ, तुम एक घोला मुझे लादो तो मैं तुम्हें एक पैछा दूँगा । मिठाई खाना....”

“बड़ा मिठाई वाला बना है”—कुँवर ने कहा—“कभी अपने बाप को भी मिठाई खाने का न्योता दिया है वेईमान ?....”

“तुम तो लोज मिठाई खाया कलते हो...माँ को पूछते भी नहीं....माँ, बाबूजी को मिठाई मत देना, नहीं तो अपने घोले पर तुम्हें नहीं चल्हाऊँगा....वालिस मुझे घोला ला देगा, छोटा छा, लकली का....”

कमरे में बत्ती जल रही थी, परन्तु बाहर आँगन में अन्धकार था ।

कुँवरानी की दृष्टि एकाएक बाहर जा पड़ी, साथ ही वह चौंक गई ।

बाहर आँगन में कोई छाया चल-फिर रही थी परन्तु अन्धकार के कारण उसकी सूरत दिखाई नहीं पड़ती थी ।

इधर जो कुछ घटनायें राजमहल में घट रही थी, उससे कुँवरानी अत्यधिक सावधान रहा करती थी ।

धीरे से वह उठी और दबे पाँव बाहर की ओर आगे बढ़ी !
कुँवर ने रोका—“कहाँ चल दीं कविता ?”

“अभी आती हूँ....”

कहकर कुँवरानी बाहर निकल आई और धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया ।

दरवाजे की राह थोड़ा-बहुत जो प्रकाश आँगन में आ रहा था, वह भी गायब हो गया परन्तु अन्धकार में भी छाया को कुँवरानी ने देख ही लिया ।

उस छाया ने भी शायद उसे देख लिया था और रुक कर खड़ी हो गई थी ।

“कौन है ?...” धीरे से पूछा कुँवरानी ने ।

छाया हिली और कुँवरानी की ओर बढ़ने लगी । कुँवरानी सजग हो गई ।

तब तक छाया पास आ गई थी और स्पष्ट स्वर कुँवरानी को सुनाई पड़ा—“मैं हूँ हुजूर !...खुदा कसम, आपको जोर से पुकार भी नहीं सकता था....कुँवर साहिब जान जाते....”

“वारिस तुम ?....क्या....”

“धीरे बोलिये हुजूर !....बड़े कुँवर साहिब तक आवाज न पहुँचे, वे आये हैं ।”

“कौन ?....” धीरे से पूछा कुँवरानी ने ।

तो झुक कर वारिस ने कोई नाम बताया । बोला—“बहुत छिप कर आये हैं हुजूर ! कहते हैं बड़ा जरूरी काम है.... आपसे तखलिये में कुछ बातें करना चाहते हैं...बेहद डरे हुए हैं शायद । ठीक से बोल भी नहीं पाते...”,

“तुम चलो....मैं अभी आई....”

वारिस चला गया । कुँवरानी दबे पाँव कमरे के पास

आई और आहिस्ते से दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया ।

भीतर ललित से बातें करते हुए कुँवर को यह भी नहीं मालूम हुआ कि दरवाजा बन्द हो गया है ।

कुँवरानी धीरे-धीरे उस ओर बढ़ी जिधर बैठकखाना था ।

दरवाजे पर उसने वारिस के पास एक आदमी को खड़े देखा, जिसने अपने मुँह और बदन का ज्यादातर हिस्सा एक काली चादर से छिपा रखा था ।

कुँवरानी को देखकर धीरे से बोला—“बहुत छिपकर मिलने आया हूँ....उम्मीद न थी कि इतनी रात को तुमसे भेंट हो सकेगी, फिर भी चला आया....मैं जानता था कि वारिस तुम्हारा वफादार नौकर है, इसलिए इसी से बुला भेजा...कुँवर साहब को तो नहीं मालूम हुआ ?....”

“नहीं !” कुँवरानी ने गम्भीर होकर कहा ।

“तो ठीक है—” वह बोला—“बैठक में चलो...”

कुँवरानी ने बैठक का दरवाजा खोला । वह आदमी चटपट भीतर घुस गया ।

कुँवरानी भी भीतर जाते-जाते वारिस से बोली—“तुम दरवाजे पर खड़े रहो । कोई इधर आने न पावे....समझे ?....”

“समझ गया हुआ !...” वारिस बोला—“ईमान कसम, हवा को भी पास नहीं आने दूँगा....आप इत्मीनान से बातें कर लें....”

कुँवरानी ने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया । वारिस चौकन्ना होकर दरवाजे पर खड़ा रहा ।

भीतर से आवाज सुनाई पड़ी—“रोशनी कर दूँ ?....” कुँवरानी थी ।

“नहीं...कत्तई नहीं....” वह था—“मेरी बातें ध्यान से सुन लो....मुझे जल्दी है....”

इसके बाद धीरे-धीरे बातें होने लगी। वारिस कुछ सुन न सका। वह दरवाजे पर इधर-उधर टहलने लगा। उस विचित्र आदमी के आने से उसे भी हैरत में डाल दिया था। फिर भी वह एकदम तैयार था कि आफत पड़ने पर कुँवरानी उसे ज्योंही पुकारे, वह दरवाजा तोड़ अन्दर जा घुसे।

थोड़ी देर बाद कमरे के अन्दर से कुँवरानी की हिचकियाँ लेने की आवाज आई।

तड़प कर वारिस दरवाजे के पास आया और धक्का देकर पुकारा—“हजूर !...क्या बात है ? अन्दर आऊँ ?...”

दरवाजा अन्दर से बन्द था।

आवाज आई—“बोलो मत वारिस ! वहीं खड़े रहो...घबड़ाने की कोई बात नहीं...”

स्वर कुँवरानी का ही था।

वारिस दरवाजे से हटकर पुनः टहलने लगा। कभी-कभी उसके कानों में कुँवरानी की हिचकी की आवाज आ जाती थी, तो वह बेचैन हो उठता था। कमरे में क्या हो रहा है, इसे जानने का उसके पास कोई तरीका न था।

बड़ी देर के बाद दरवाजा खुला और दोनों बाहर निकले। अँधेरे में भी वारिस की तेज आँखों ने कुँवरानी का अश्रुपूर्ण चेहरा देख लिया।

“इन्हें बाहर सड़क तक पहुँचा कर जल्द आओ....मैं यही खड़ी हूँ”—कुँवरानी ने वारिस से कहा।

वह आदमी वारिस के साथ चला गया। कुँवरानी हृदय में अगम चिन्ता का भार लिये वहीं खड़ी रहीं।

वारिस थोड़ी ही देर में लौट आया। उतावली के साथ बोला—“बात क्या थी हजूर ?...आप रो रही थीं...”

कुँवरानी धीरे-धीरे वारिस से कुछ कहने लगी । वह बड़ी देर तक उसे कुछ समझाती रही ।

सुन कर वारिस बोला—“आप खातिरजमा रखें कुँवरानी साहिबा ! वारिस की वफादारी में खुदाकसम कभी धब्बा नहीं लगेगा...आपने जैसा कहा है, वैसा ही होगा....कोई जान भी नहीं सकेगा कि यह आदमी इतनी रात को आपसे मिलने आया था...”

कुँवरानी ने साड़ी की छोर से अपनी आँखें पोंछी, फिर कुँवर के कमरे की ओर चल पड़ी ।

धीरे से दरवाजा खोलकर अन्दर आ गई । अब तक उसने अपने को सम्हाल लिया था ।

“कहाँ चली गई थीं तुम ?....देखो, ललित सो गया....” कुँवर बोला ।

“आपने उसे डाँट-डपटकर सुला दिया होगा....”

कहकर कुँवरानी ने कमरे की बत्ती बुझा दी और आकर कुँवर के पास पलंग पर लेट गई ।

“क्या बात है कुँवरानी ?....बाहर से आते ही बहुत गंभीर हो गई हो....” पूछा कुँवर ने ।

“कोई बात नहीं....अब सो जाइये....”

“कोई बात तो जरूर है...तुम्हारी आवाज भी काँप रही है”

“बबड़ाइये मत...जरा-सी कै हुई है”—कुँवरानी ने बहाना कर दिया ।

“कै ?”—कुँवर बोला—“डाक्टर दास को बुलाऊँ ?...मेरी चिन्ता करते-करते तुमने तो अपना स्वास्थ्य खराब कर लिया कुँवरानी !...मैं अभी वारिस को भेजकर दास बाबू को बुलाता हूँ...”

कुँवर उठने लगा तो कुँवरानी ने रोक दिया ।

बोली—“अब तवियत ठीक है । सोने से आराम मिल जायगा...”

“अच्छा, सो रहो....रात में तवियत खराब लगे तो मुझे जगा लेना....”

“अच्छा !”

कुँवर तो आराम की नींद सो रहा, परन्तु कुँवरानी की वह रात जागते ही कटी । उस विचित्र आदमी के मिलते ही उसे जाने कौन-सी चिन्ता हो आई थी । सारी रात उसकी आँखों से आँसू बहते रहे, मगर उदासीन अचल को इसका क्या पता ?

बैठकखाना खूब सजा है । दरवाजों और खिड़कियों पर सुन्दर परदे पड़े हुए हैं । एक कौंच, चार कुर्सियाँ और एक बड़ी-सी मेज है ।

मेज पर बैठा हुआ अचल कुछ लिख रहा है । यही उसका आफिस-रूम है । आराम की सभी वस्तुएँ वहाँ हैं, परन्तु विलासिता की एक भी चीज मौजूद नहीं ।

अचल अपने कार्य में पूर्णतया निमग्न है । अभी प्रातःकाल के आठ बजे हैं, परन्तु अचल को सबेरे ही स्नान-ध्यान करके अपने कार्य में लग जाने की आदत है ।

कमरे की दो खिड़कियाँ खुली हैं, जिनसे प्रातःकाल की खुशनुमा धूप कमरे में आ रही है, हलके हरे रंग के परदों से छन-छन कर ।

लम्बे-चौड़े पहलवान वारिस ने प्रवेश किया परन्तु अचल उसका आना न जान सका। वह सर झुकाये लिखता रहा।

“हजूर !....” वारिस ने धीरे से पुकारा।

तो कुँवर सजग हो गया। सर उठा कर बोला—“क्या है वारिस अली ?...”

“एक मेम साहिवा तशरीफ लाई हैं गरीबपरवर !...हजूर से मिलना चाहती हैं, इसी वक्त....” बोला वारिस।

“मेम साहिवा ?” कुँवर आश्चर्य से बोला—“कौन हैं ?...कुछ पूछा नहीं तुमने ?...मुझसे क्यों मिलना चाहती हैं ?”

“खुदा कसम ! उन्हें आज के पहले इस गरीब ने देखा तक नहीं था....कहती हैं, हजूर से उनकी यह पहली मुलाकात है। दूर से आई हैं....बेहद हसीन, मुँह से मर्द को औरत बना देती हैं....बोलती हैं—तुम्हारी बड़ी कुँवर अन्दर हैं ?”

कुँवर कुछ सोचने लगा फिर वारिस से बोला—“तुम उन्हें इज्जत के साथ अन्दर पहुँचाओ....”

“जो हुक्म !”

वारिस चला गया और कुछ ही देर बाद एक एंग्लो-इण्डियन युवती के साथ वापस आया।

“यही हैं हजूर !” कहकर वारिस चला गया।

कुँवर ने सर उठाकर उस युवती को देखा तो चौंक पड़ा। वह उसे पहचानता तो न था परन्तु उसकी सुन्दरता ने उसे आश्चर्यचकित कर दिया था। उसने पहले कभी ऐसा नशीला सौन्दर्य नहीं देखा था।

“तशरीफ रखिये”—उसने युवती से नम्र स्वर में कहा।

युवती मेज के सामने कुर्सी पर बैठती हुई बोली—“बड़ी-कुँवर आपको ही बोलती ?...”

उसकी टूटी-फूटी भाषा कुँवर की समझ में जरा देर से आई। बोला वह—“जी हाँ! मैं ही बड़ा कुँवर हूँ....आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?...”

“I am an orphan Sir!—” युवती बोली—“हमारी नाम मिस एनी रदरफोर्ड है, but you may call me only Anne. आपका तारीफ़ सुनकर बहुत दूर से हम आया है...” हमको Service देगी आप?”

“कैसी नौकरी चाहती हैं आप?” कुँवर ने पूछा।

“हम आपका private secretary होना चाहता है....”

“मुझे अफसोस है मिस एनी! आपके लायक हमारे पास कोई काम नहीं...” कुँवर बोला।

“But please try...” एनी ने अपने सुन्दर चेहरे पर दुख का भाव लाकर कहा और नशीली आँखों से कुँवर की ओर देख कर एक घातक कटाक्ष किया।

परन्तु सभी प्रकार के नशे से दूर रहने वाले कुँवर पर एनी की नशीली आँखों का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वह हिला तक नहीं।

बोला—“I am very-very Sorry miss!”

“Never mind—” एनी ने कहा—“हमको एक कप चा पिलायेगी आप? Really too tired I am....”

“कोई बात नहीं, मैं अभी चाय मँगाता हूँ....वारिस!...” पुकारा कुँवर ने वारिस को।

“हुजूर....” कहता हुआ वारिस अन्दर आया।

एनी गौर से उस दृढ़-कट्टे वफादार नौकर की ओर देखने लगी, जिसकी बहादुरी की तारीफ़ वह अक्सर चंचल और जमुना से सुनती आई थी।

“चाय लाओ—” कुँवर ने आज्ञा दी।

बारिस चला गया। कुँवर फिर अपना काम करने लगा।

एनी गौर से चारों ओर देख रही थी।

तभी कमरे में चंचल ने प्रवेश किया। उसे देखकर एनी ने इस तरह से मुँह फेर लिया कि जैसे वह उसे पहचानती ही नहीं।

“भैया, मुझे पाँच सौ रुपये चाहिये—” चंचल बोला—

“एक नया सूट सिलाया है....अरे, आप कौन हैं ?....” एनी की ओर अनजानी दृष्टि से देखकर अपना वाक्य समाप्त किया चंचल ने—“इन्हें तो पहले कभी नहीं देखा था...”

“आ चंचल ! आप हैं मिस एनी रदरफोर्ड । नौकरी की तलाश में आई हैं...और मिस एनी ! यह है मेरा छोटा भाई, कुँवर चंचल नारायण !” कुँवर ने कहा।

“ओह, छोटी कुँवर ! आपसे मिलकर बहुत खुश हुआ...” एनी ने भी पहले-पहल मिलने का भाव प्रदर्शित किया।

“भैया !...” चंचल ने कहा—“मुझे पाँच सौ दोगे तो ?.... नहीं तो कल दे देना....बहुत जरूरत है।”

“देखो चंचल ! रुपयों के लिये तुम माता जी से कहो।”

“वे बिगड़ पड़ती हैं भैया ! मैं उनसे नहीं कहता, तुमको अपने पास से देना पड़ेगा, नहीं तो मैं भाभी से माँग लूँगा.... बोलो, दोगे न ?”—चंचल ने बनावटी हठ किया।

“दे दूँगा भाई, मेरा सर मत खा सबेरे-सबेरे...” कुँवर ने कुछ लिखते-लिखते कहा।

तभी चाय की ट्रे लिये हुए बारिस आ गया। एक गहरी नजर उसने एनी और चंचल पर डाली, फिर ट्रे मेज पर रखकर बाहर चला गया चुपचाप।

“भैया ! चाय तो तुम अधिक नहीं पीते...”

“मिस एनी के लिये मँगवाया है....”

“Oh no-no, आपको भी चा पीनी पड़ेगी बड़ी कुँवर !....”
मैं अकेला चा नहीं पीता....” एनी ने कहा ।

“मैं भी पी लूँगा”—कुँवर बोला—“चंचल ! चाय तैयार करो....”

चंचल ने चाय तीन प्यालों में ढाली ।

कुँवर सर झुकाये कुछ लिख रहा था ।

एनी के हाथ में कोई पुड़िया थी ।

चंचल ने कुछ इशारा किया । एनी के हाथ की पुड़िया भट-
पट खुल गई और उसमें का सफेद पाउडर एक प्याले में जा पड़ा ।

अचल कुछ देख न सका ।

मगर बाहरा दरवाजे के परदे की ओट से भाँकती हुई दो
तेज आँखों ने सारा मामला देख लिया और तब परदे के पीछे
गायब हो गई ।

“लो बड़ी कुँवर ! चा पियो....” जहरीली चाय का प्याला
कुँवर की ओर खिसकाती हुई एनी बोली ।

कुँवर ने कलम रख दी और प्याला लेकर अपने आगे रख
लिया । धीरे से प्याला उठा कर उसने अपने होठों की ओर
बढ़ाया ।

एनी और चंचल की आँखों में एक अजीब चमक दिखाई
दी । दोनों का कलेजा धड़कने लगा, जोर-जोर से ।

“हजूर !....” तभी तेजा से वारिस अन्दर घुसा । उसके
हाथ में शीशे की एक गिलास थी, जिसमें दूध भरा हुआ था ।

वारिस को देखकर एनी और चंचल चौंक पड़े । शैतान
कैसे बेवक्त आ पहुँचा !

कुँवर के होठों तक पहुँचा हुआ प्याला रुक गया ।

बोला कुँवर—“क्या है वारिस !...”

“हजूर, कुँवरानी साहिबा ने फरमाया है कि कड़ी चाय पीने से हजूर की सेहत पर खराब असर पड़ता है, इसलिये उसमें दूध ज्यादा मिलाकर पियें। मैं दूध लेता आया हूँ सरकार ! प्याला इधर कर दें, थोड़ा ढाल दूँ...”

“तुम लोग बराबर मेरे पोछे परेशान रहते हो—” कुँवर ने हँसकर कहा—“लो, ढाल दो थोड़ा दूध...”

वारिस ने प्याला ले लिया और उसमें गिलास का दूध ढालने लगा।

एनी और चंचल एकटक वारिस की ओर देख रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर इस शैतान नौकर का इरादा क्या है ?

“बस करूँ हजूर !...प्याला तो खुदा कसम, भर गया। तश्तरी में भी थोड़ा दूध ढाल दिया है...बिल्कुल गरम है सरकार !”

“ठीक है, लाओ...” कुँवर ने प्याला लेने के लिये हाथ बढ़ाया।

वारिस ने लबालब भरा प्याला आगे किया।

तभी एकाएक उसका हाथ काँप गया और गर्म चाय का प्याला फर्श पर गिरकर कई टुकड़े हो गया। चाय इधर-उधर बह चली। कुछ बूँदें छोटे कुँवर के कपड़ों पर भी जा पड़ीं।

वारिस ने लपक कर कुँवर का पैर पकड़ लिया। बोला—
“माफ फरमाये गरीबपरवर ! बड़ी गुस्ताखी हो गई...”

“बड़ा लापरवाह है तू वारिस ! जा, दूसरी चाय ला...”

कुँवर ने कहा।

मगर चंचल को तो बेहद क्रोध चढ़ आया था, क्योंकि इस

मनहूस नौकर ने उसकी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया था।

वह गरज कर बोला—“बेहूदा कहीं का...एटीकेट जरा भी नहीं जानता, बेवकूफ !”

“मैं क्या जानूँ पेटीकोट हजूर छोटे कुँवर साहिब !...” वारिस बोला—“हाथ बेतरह हिल गया सरकार !...मैं माफी चाहता हूँ....अभी दूसरी चाय लाया...गलती तो सभी से होती है हजूर ! मैंने जान बूझकर कोई गुस्ताखी नहीं की है...”

कहकर वारिस चला गया। एनी और चञ्चल आँखों में निराशा का भाव लिये बैठे रहे।

तब तक वारिस दूसरी ट्रे लिये आ पहुँचा।

इस बार वारिस ने खुद चाय बनाई और कुँवर को प्याला अपने हाथों से दिया। सब लोग चाय पीने लगे। वारिस वहीं खड़ा रहा।

चाय पीकर एनी उठ खड़ी हुई और बोली—“अब हम जाता है बड़ी कुँवर ! Thank you....”

साहब-सलामत के बाद एनी चली गई।

चञ्चल भी थोड़ी देर तक चुप रहा, फिर उठकर बोला—“भैया ! शाम तक पाँच सौ दोगे न ?...नहीं-नहीं से काम नहीं चलेगा...मैं लेकर ही छोड़ूँगा”

चंचल चला गया। कुँवर फिर लिखने लगा।

उसे क्या पता कि आज उसके वफादार नौकर की बदौलत ही उसकी जान बच पाई, वरना चाय के प्याले में घुले हुए जहर को पीकर अब तो वह सदा के लिये सो गया होता।

तीन घंटे बाद वारिस ने पुनः प्रवेश किया। बोला—“गाँव का एक आदमी हजूर की खिदमत में हाजिर है...”

“किस गाँव का ?....” कलम मेज पर रखते हुए कुँवर ने पूछा ।

“रमजानपुर का....” वारिस ने कहा ।

“भेज दो....”

मटमैले कपड़े पहने हुए एक ग्रामीण ने कुँवर के सामने पहुँचकर अदब के साथ अभिवादन किया ।

“क्या है भाई ! रमजानपुर में सब कुशल तो है ?” पूछा कुँवर ने ।

“सब आपकी दाया है अन्नदाता !....गरीब प्रजा उजड़ी जा रही है । दिन-दहाड़े लोगों को जानें जा रही हैं—” बोला ग्रामीण ।

“बात क्या है ?....”

“रमजानपुर के पास का जंगल बहुत घना है मालिक !... आजकल एक चीते ने बड़ा उत्पात मचा रखा है । बारह आदमियों को वह अब तक फाड़ चुका अन्नदाता !....हम तो हज़ूर की प्रजा हैं । फरियाद कर दिया, अब मालिक का जो हुकुम हो सो करें । दिन को भी खेत-क्यारी करना मुहाल हो रहा है सरकार !....हम लोग कैसे जियेंगे ? आप राजा हैं, आपका ही भरोसा हम गरीबों को है । आप खयाल नहीं करेंगे तो कौन करेगा ?”

“ऐसी उत्पात तो उधर कभी नहीं होती थी—” बोला कुँवर—
“उस जंगल में भेड़िये और अजगर तो बहुत हैं मगर दरिन्दों की बात तो आज ही सुनी....”

“पहले ही पहल वह चीता कहीं से भटक कर आ गया है अन्नदाता !....अब तक तो आपकी किरपा से हम लोग बड़े सुखी थे, किसी बात का गम न था....अब तो जान के लाले पड़ गये हैं भाई-बाप !”

“तुम जाओ....मैं कल तुम्हारे गाँव आऊँगा....हाँका करने के लिये कुछ आदमी तैयार रखना....”

“जुग-जुग जियो माई-बाप ! बड़े सरकार से भी दयालु हो छोटे राजा !....”

आशीर्वाद देता हुआ ग्रामीण चला गया ।

“वारिस !....” कुँवर ने पुकारा ।

“आया हुजूर !....”

वारिस आ खड़ा हुआ ।

“इसे साफ करा दो....फर्श पर चाय गिर गई है, चींटियाँ लग जायेंगी” कुँवर ने कहा ।

“खुदा कसम ! इन चींटियों के मारे तो जान परेशान हो जाती है हुजूर ! अल्लाह ने इन्हें पैदा भी किया तो इतना छोटा कि आँख से दीखती भी नहीं....मैं अभी फर्श साफ करा देता हूँ सरकार !....तू-तू !....आ-आ, तू-तू...”

“तू-तू क्या कर रहा है ?”

“कुत्ता बुला रहा हूँ सरकार !...अल्लाह कसम, ये कुत्ते अपनी जीभ से जैसी सफाई कर देते हैं, वैसी गुलशन की झाड़ू भी क्या करेगी ?....तू-तू !....आ-आ....लीजिये, आ गया एक....”

“तू तो बेकार के काम किया करता है वारिस !....एक कपड़ा लेकर पोंछ दिया होता फर्श !” कुँवर ने कहा ।

“इसे ही चाट लेने दीजिये हुजूर ! गरीब की जवान को थोड़ा स्वाद ही मिल जायगा....इन कुत्तों को भी हमों लोगों का तो सहारा है....आ बेटा ! ले चाट चपाचप....खुदा कसम, बड़ी मीठी चाय गिरी है फर्श पर....”

कुत्ता आगे बढ़कर फर्श पर गिरी हुई चाय चाटने लगा ।

पूरी सफाई कर दी उसने। फिर वारिस उसका कान पकड़ कर बाहर घसीट ले गया।

कुँवर सोफे पर बैठकर एक पुस्तक पढ़ने लगा।

आधे घंटे के बाद वारिस पुनः आया—“हजूर !”

“क्या है वारिस ?” कुँवर ने पुस्तक पढ़ते-पढ़ते ही पूछा।

“यह मर गया हजूर !”

“कौन ?...” कुँवर ने सर उठा कर देखा।

वारिस के हाथों पर वही कुत्ता था, जिसने थोड़ी देर पहले ज़मीन पर गिरी हुई चाय चाटी थी।

“कैसे मरा यह ?....” कुँवर ने पूछा आश्चर्य से।

“वही चाय चाट कर हजूर !....खुदा कसम ! आजकल लिपटन की चाय भी ज़हरीली होने लगी है....हजूर भी खाने-पीने में जरा होशियार रहा करें....”

“क्या बकता है वारिस ! जा, कुत्ते को फेंककर अपना काम देख....”

कहकर कुँवर पुनः अपनी पुस्तक पढ़ने लगा।

वारिस थोड़ी देर तक मरे हुए कुत्ते को अपने हाथों पर लिये खड़ा रहा चुपचाप, इस आशा में कि कुँवर साहब सर उठाये तो वह कुछ अर्ज करे मगर कुँवर तो पुस्तक पढ़ने में इतना तल्लीन हो गया था कि उसने यह भी नहीं देखा कि वारिस गया या नहीं।

बेचारा वफादार वारिस अपने मालिक को शिष्टतापूर्वक एवं सप्रमाण यह बताने आया था कि उसके चाय के प्याले में ज़हर था मगर लाचार होकर उसे वापस लौट जाना पड़ा।

होटल के अपने कमरे में कोच पर चंचल और एनी बैठे हैं। सामने की कुर्सी पर जमुना भी उपस्थित है। छोटी-सी मेज पर सोडा और जिन की खाली बोतलें और गिलासे पड़ी हैं, जिनसे प्रकट होता है कि कुछ ही देर पहले तीनों ने मदिरा से अपनी प्यास बुझाई है।

एनी आवश्यकता से अधिक गम्भीर है मगर चञ्चल और जमुना में बातें हो रही हैं।

जलती सिगरेट का धुआँ खींच कर बोला चञ्चल—“काम तो बड़ी सफाई से हुआ था मगर कामयाबी न मिल सकी... एनी ने भैया के सामने ही जिस चालाकी से उनके प्याले में जहर मिलाया कि मैं तो आश्चर्यचकित हो उठा...मगर बेहूदे वारिस ने पहुँचकर सारी आशाओं पर पानी फेर दिया.... शैतान ने दूध डालते-डालते हाथ से प्याला ही गिरा दिया।”

“वह बड़ा ही चालाक है कुँवर साहब !...उसने छिप कर सब कुछ देख लिया होगा...वातैसी है कि....” जमुना बोला।

“नहीं जी, उसने देखा नहीं था....जिस समय एनी प्याले में जहर डाल रही थी, मैं चौकन्ना होकर चारों ओर देख रहा था....इत्तफाक से प्याला उसके हाथों से छूट गिरा....कुछ देख लिया होता तो भैया से जरूर बता देता वह...”

“अब क्या होगा ?....क्या इरादा छोड़ ही दिया जाय ?...”

“इतनी दूर आगे बढ़कर अब यह नहीं हो सकता...हम कोशिश करते चलेंगे। देखें, कब तक सफलता नहीं मिलती ?”

“अब क्या करने का इरादा है ?”—जमुना ने पूछा।

“इरादे को मैंने कार्यरूप में परिणत भी कर लिया है....जहर का मामला नाकामयाब होते ही मैंने दूसरा रास्ता सोच लिया...”

“तो मेरी मदद की भी जरूरत पड़ेगी शायद...”

“जरूर !...मैंने एक गरीब आदमी को अपनी तरफ मिला, सिखा-पढ़ा कर दोपहर को भैया के पास भेज दिया था...उसने जाकर कहा कि रमजानपुर में एक चीते ने उपद्रव मचा रखा है...सां अचल भैया कल रमजानपुर जायेंगे....समझे कुछ मेरी चाल ?...”

“वातैसी है कि मैं सब कुछ समझ गया छोटे कुँवर !... रमजानपुर के पास का जंगल बहुत घना है...बड़े कुँवर को शिकार के बहाने जङ्गल में ले जाकर अकेला छोड़ देंगे आप... फिर एक ही गोली सारा काम कर देगी....है न !”

“बिल्कुल !....मैं भी भैया के साथ जाने का हठ करूँगा.... तुम मेरी पिस्तौल लेकर छिपे-छिपे हमारा पीछा करोगे...जंगल में मौका देखते ही तुम अपना निशाना साधना...मगर जरा होशियार रहना...दूर से कहीं मेरी ही खोपड़ी मत उड़ा देना...”

“मुझसे ऐसी गलती नहीं हो सकती छोटे कुँवर !....यद्यपि बड़े कुँवर का कद भी आप ही जैसा है और दूर से देखकर भ्रम का होना सम्भव है मगर जमुना की आँखें मीलों दूर की चीजें देख लेती हैं...”

“फिर भी खूब होशियारी से काम करना...बाहर जाते समय हम दोनों भाई एक-सी ही पोशाक पहनते हैं, इसे न भूलना...पहले निश्चय करके तब गोली चलाना...”

“ऐसा ही होगा कुँवर साहब !....जमुना की गोली छोटे कुँवर को कभी नहीं लग सकती, इसका आप विश्वास रखें...”

“तो अब चलना चाहिए...आठ बजे रात भैया माँ से

मिलने आते हैं, रोज ! आज वे उनसे रमजानपुर जाने की आज्ञा लेंगे...मेरा भी उपस्थित रहना जरूरी है....पौने आठ बज रहे हैं...अरे, मिस एनी ! सो रही हो क्या तुम ?....”

“बातैसी है छोटे कुँवर कि मिस एनी को नशा कुछ तेज हो आया है....मुझे इन्हें इनके घर तक छोड़ने जाना पड़ेगा शायद—एनी !...ओ मिस एनी ?”

“Don't disturb me rasool !....” एनी आँखें बन्द किये हुए ही बोली ।

चंचल उठता हुआ बोला—“तुम इन्हें किसी ताँगे पर पहुँचा देना...मैं कार पर जाता हूँ....”

होटल से बाहर आकर चंचल अपनी कार पर राजमहल को रवाना हो गया । रास्ते भर वह अनेक बन्दिशें बाँधता रहा ।

रानी साहिबा चञ्चल को जितना डाँटती थीं, उससे बढ़कर उसे प्यार भी करती थीं, इसे चञ्चल जानता था । तभी उस दिन बिगड़ा जाकर भी वह अपनी माँ से नाखुश नहीं हुआ था ।

वह यह भी जानता था कि रानी साहिबा अचल को भी अपना ही बेटा समझती हैं, तभी तो वह चञ्चल का कुछ ख्याल न करके अचल को रियासत सौंपना चाहती हैं ।

अपनी माँ से मतैक्य न होने पर भी चञ्चल को रानी साहिबा पर क्रोध न था । उसका सारा क्रोध अचल पर था, जो उसका बड़ा भाई बन कर पैदा हुआ था और सौतेला होने पर भी जिसके अधिकार में सारी रियासत चली जाने वाली थी ।

चञ्चल दृढ़-प्रतिज्ञ था । वह राजा बनना चाहता था । उसके रास्ते में जितनी बाधाएँ थीं, उन्हें वह शीघ्र से शीघ्र दूर कर देना चाहता था । अचल, कुँवरानी, ललित और अवसर पाने पर यदि रानी साहिबा की सख्ती की बाधा बनी तो उन्हें भी

निर्दयतापूर्वक दूर करने में चंचल को संकोच न था। चाहे जिस तरह हो, वह सम्पूर्ण राज्य पर अधिकार करना चाहता था।

राजमहल आ गया।

रानी साहिबा के महल के सामने कार रुकी। चंचल उतर कर अपनी माँ के कमरे की ओर चला। हाथ की घड़ी पर नजर डाली तो आठ बज कर पाँच मिनट बीत चुके थे।

वक्त का पावन्द अचल ठीक आठ बजे रानी साहिबा से मिलने आ गया था। इस समय वह उनके सामने कुर्सी पर बैठा बातें कर रहा था।

रानी साहिबा पलंग पर तकिए के सहारे बैठी थीं।

चंचल दरवाजे के बाहर रुक कर अन्दर की बातें सुनने लगा।

“माताजी ! आपका कहना ठीक है”—अचल कह रहा था—
“मगर हमें अपनी जान बचाकर प्रजा का रोना नहीं सुनना चाहिये....गाँव का जो आदमी यह समाचार लेकर आया था, उसकी बातें आप सुनती तो रो पड़तीं। चीते के डर से लोगों का घर से बाहर आना जाना बन्द हो गया है। पता नहीं कब किस पर वह भयानक पशु हमला कर दे....”

“ऐसा तो होता ही रहता है बेटा !...जंगली गाँव है....जानवरों का डर तो बना ही रहेगा....इस बात की फिक्र हम लोग कब तक करते रहेंगे ?....राजा साहब शिकारी थे। वे होते तो मुझे जरा भी डर न लगता....मगर तू तो अभी नादान है अचल, चीते का मुँह भी कभी देखा नहीं होगा....मैं कैसे तुझे जाने की आज्ञा दे दूँ ?...”

“आज्ञा तो देनी ही पड़ेगी माताजी !”—बोला अचल—

“मैं उस आदमी से कल आने का वादा कर चुका हूँ....”

“तू अपने मन का वादा क्यों करता है रे अचल ?....मैं क्या

मर गई थी ?...उसे हमारे पास क्यों नहीं भेजा ?....” रानी साहिबा ने मीठी झिड़की दी।

“आपके पास भेजता तो आप मेरी जान के खौफ से उसे टका-सा जवाब दे देतीं....गाँव वाले बहुत कष्ट में हैं माता जी ! विश्वास कीजिये...गाँव हमारी रियासत में हैं। हम वहाँ की मालगुजारी वसूल करते हैं तो वहाँ के लोगों का दुख-दर्द कौन सुनेगा ? आप कुछ सोचिये तो—पिताजी होते तो क्या उनका कष्ट चुपचाप देख लेते ?...”

“उनकी बात क्या कहता है रे अचल !” रानी साहिबा बोलीं—“उनकी आँखों में वरदान भरा था....जिसकी ओर देख लेते थे, उसका सारा दुख दूर हो जाता था....तुम लोग तो अभी अवोध हो...एक वह चंचल का बच्चा है, कहीं सिनेमा में बैठा हुआ नाच-गाना सुन रहा होगा...उसे तो जैसे किसी की कोई फिक्र ही नहीं....राजा का बेटा बनते हैं...”

“राजा का बेटा आ गया माँ !...चंचल का बच्चा !” भीतर प्रवेश करते हुए कहा चंचल ने।

“देखा न अचल ?...इसे छिप कर बातें सुनने की आदत पड़ गई है....जाने कब से विल्ली की तरह दुबका हुआ दरवाजे के बाहर खड़ा था !”

“विल्ली की तरह नहीं माँ, मैं तो विल्कुल छिपकिली जैसा दीवार से चिपका हुआ था....” कहता हुआ चंचल रानी साहिबा के पास आ बैठा—“मैंने सब सुन लिया है...मैं भी अचल भैया के साथ जाऊँगा....अकेले अचल भैया को मत जाने दो माँ....”

“तुम दोनों मेरा दिमाग खराब कर दोगे...जाओ, जो मन में आये करो...”

“लो अचल भैया ! माँ ने आज्ञा दे दी....अब जाकर चटपट तैयारी कर डालो....सवेरे-सवेरे ही चल देंगे हम लोग”—
चंचल बोला ।

“आप क्या कहती हैं माताजी ! तो कल जाऊँ मैं ?....
चंचल की बातों का ख्याल मत करें...आप जो कहेंगी, वही मैं
करूँगा...हमारे न जाने से प्रजा दिन पर दिन दुखी होती
जायगी । आपकी आज्ञा पर ही रमजानपुर की जनता का सुख-
दुख निर्भर है...’

“प्रजा के सुख-दुख का ख्याल मुझे है अचल !...रानी बन
कर सोचती हूँ तो प्रजा का दुख आँखों के सामने नाच उठता
है....परन्तु माँ का हृदय बेटे का चीते के आगे जा पड़ने की
आज्ञा देना नहीं चाहता...तुम लोग जाना चाहो तो जा सकते
हो....परन्तु अपने को सुरक्षित लौटा लाने का वचन दो मुझे....
मैं प्रजा के लिये अपने बेटों का खोना नहीं चाहती...” रानी
साहिबा ने कहा ।

“मैं अपने को तो लौटा लाऊँगा माँ ! एकदम सुरक्षित...”
चञ्चल बोला—“मगर अचल भैया को जरा समझा दो तुम...
कहीं जंगल की शोभा देखते-देखते ये वहीं न रह जायँ...प्रकृति
की छटा इन्हें बहुत प्यारी लगती है माँ, जानती तो हो....”

“तो हम लोग कल सवेरे ही प्रस्थान करेंगे....ठीक है न
माँ !...” अचल ने पूछा ।

“तू बार-बार मुझसे क्या कबूल कराता है रे अचल !....
चले जाना कल और परसों ही लौट आना...”

इसके बाद अचल उठ खड़ा हुआ और रानी साहिबा का
पैर छूकर कमरे से बाहर हो गया ।

चञ्चल भी अपने महल को चला गया ।

“तुमको शक हो गया है कुँवरानी !....” अचल ने पलंग पर लेटे-लेटे ही कहा ।

“शक नहीं हुआ है मुझे....बात बिल्कुल सत्य है....” अचल के पास बैठती हुई कुँवरानी ने कहा ।

“कैसे मान लूँ मैं तुम्हारी बात कविता !...चञ्चल लाख बुरा है मगर अपने भाई की जान का भूखा वह नहीं हो सकता....इन्सान अपने भाई को जहर देने की कोशिश करे, यह बात मैं सोच भी नहीं पाता कभी...और तुम कहती हो कि सुबह जो चाय पी रहा था, उसमें जहर था....”

“मैं ठीक कह रही हूँ, मगर आप मानते नहीं....वारिस ने प्याला तोड़ा न होता तो गजब हो गया होता...”

“मगर चाय का प्याला तो वारिस से अनजान में ही टूट गया था और उसके लिये उसने माफी भी बहुत माँगी थी...”

“माफी तो सिर्फ दिखाने के लिये माँगी थी उसने....वास्तव में जानबूझ कर ही उसने प्याला नीचे गिराया था....उसने उस लड़की को आपके प्याले में कुछ डालते हुए अपनी आँखों से देखा था...”

“और मैंने क्यों नहीं देखा ?”

“आप सर झुकाये लिख रहे थे...दोस्त-दुश्मन को पहचानने की कोशिश किया कीजिये कुँवर साहब !”

“तुम कहती हो, उस लड़की ने जहर मिलाया...मगर वह तो पहले-पहल आई थी मेरे पास....उसकी मुझसे क्या दुश्मनी हो सकती है ?”

“आपके पास वह पहली बार आई रही होगी मगर चंचल की वह गहरी दोस्त है...होटल में रोज दोनों मिलते हैं...” कुँवरानी ने कहा।

“तुम्हें कैसे मालूम ?”

“वारिस ने पता लगाया है...”

“तुम और वारिस, दोनों का दिमाग खराब होता जा रहा है”—अचल बोला—“कभी कोई मुझ पर हमला करता है, कभी कोई मुझे जहर देता है, यही तुम दोनों हमेशा सोचा करते हो... मगर तुम्हारी इन शिकायतों का कोई सबूत मुझे मिल नहीं पाता...बिना किसी पक्के सबूत के मैं तुम लोगों की बात पर विश्वास कर लूँ कविता ?...”

“आप सबूत देखकर भी तो समझ नहीं पाते।”

“मुझे सबूत किसने दिया ?”

“आज सवेरे वारिस ने एक कुत्ता नहीं दिखाया था आपको ?”

“कैसा कुत्ता ?”

“जो फर्स पर गिरी हुई चाय को चाटने के बाद ही मर गया था...”

“ओह, हाँ ! दिखाया तो था...”

“और आपने देख कर भी कुछ नहीं समझा...उल्टे बेचारे वारिस को डाँट दिया....”

“मगर कविता ! मैं कैसे मान लूँ कि वह कुत्ता चाय के ही जहर से मरा ?...पहले से ही उसे कोई बीमारी रही होगी...”

“मैं कैसे समझाऊँ आपको ?”—कुँवरानी परेशान होकर बोली—“दुनिया में सीधे आदमियों की गुजर नहीं और आप

तो बहुत ही असावधान हैं....कभी आप पर कोई आफत आ गई तो मैं कहाँ जाऊँगी ?”

“बार-बार आफत का नाम ले रही हो तुम”—बोला कुँवर—“मगर वारिस के अतिरिक्त और भी कोई गवाह है तुम्हारे पास ?”

“वारिस जैसे स्वामिभक्त नौकर की हर बात विश्वसनीय है । कोई कारण नहीं कि आप उसकी गवाही की उपेक्षा करें.... बेचारा वारिस, जो अपने मालिक के पीछे पागल है, जो उसके दर्द से परेशान है, उस पर अविश्वास करना मनुष्यता को धोखा देना है, उसकी नमकहलाली का उपहास करना है...”

“वारिस की तारीफ रहने दो कुँवरानी !...मैं जानता हूँ कि वारिस तुम्हारे खिलाफ कभी जा ही नहीं सकता...” कहते कहते अचल का स्वर गम्भीर हो गया ।

उसकी गम्भीरता कुँवरानी से छिपी न रही । उसके आखिरी वाक्य में, जो अप्रकट व्यंग्य छिपा था, वह भी कुछ-कुछ समझ गयी वह ।

बोली—“वारिस केवल मेरा ही नौकर नहीं...मैं तो कुछ ही सालों से यहाँ आई हूँ....वह तो आपके यहाँ बचपन से है । उसे जितना आपने पढ़ा होगा, उतना मैंने नहीं....”

“मगर तुमने तो उसे अपने वश में कर लिया है...”

कुँवरानी चौंक पड़ी—“क्या कहते हैं आप ?...”

कुँवर गम्भीर स्वर में बोला—“ठीक ही तो कह रहा हूँ, तभी तो जब रात में तुमसे कोई मिलने आता है तो वारिस चुपके-चुपके तुम्हें बुला ले जाता है....और तुम भी जब जाने लगती हो तो मेरे कमरे का दरवाजा बाहर से बन्द करती जाती हो... मगर वह खिड़की बन्द करना शायद तुम भूल ही जाती हो....”

कुँवरानी का चेहरा थोड़ी देर के लिये पीला पड़ गया ।

मगर अपने को सम्हाल कर वह बोली—“तो आप सब कुछ जान चुके हैं ?”

“सब कुछ तो नहीं”—कुँवर ने कहा—“उस खिड़की से निकल कर मैंने केवल यही देखा कि तुम किसी आदमी के साथ बैठकखाने में कुछ देर तक अन्धकार में रही और वारिस बाहर खड़ा पहरा देता रहा....सुन नहीं सका मैं कुछ । मगर इतना देखना क्या काफी नहीं था कुँवरानी ?...कब की दोस्ती थी उससे तुम्हारी ?....”

“आप कैसी बात कर रहे हैं आज ?”

“केवल अपनी शंका का समाधान करना चाहता हूँ मैं... तुम्हारा पति हूँ न, इतना अधिकार तो मुझे है ही....बताना न चाहो तो मेरी ओर से कोई जबरदस्ती नहीं....तुम घबरा उठी हो बहुत...”

“आपने यह बात ऐसे ढंग से उपस्थित की है कि मैं परेशान हो उठी हूँ....मैं तो स्वयं ही इसे आपको बताना चाहती थी....”

“अच्छा ! इतना साहस है तुममें ?....” बनावटी आश्चर्य के साथ अचल ने कहा—“अपने गुप्त-प्रेम की बात अपने पति के सामने साहस-पूर्वक प्रकट करने की यह घटना शायद नारी-जाति के इतिहास में पहली ही है...तुम कहो, मैं सुनूँगा....”

“आपको शक हो गया है....”

“आँखों से देखने पर विश्वास होता है कविता ! शक नहीं...”

“आपको कोई सन्देह था तो रात में ही आपने मुझसे क्यों नहीं पूछा ?....आपकी इस खामोशी का मुझे बहुत दुख है....”

“दुख तो मुझे भी बहुत हुआ, अपनी पत्नी को अन्धेरे कमरे में एक अनजाने पुरुष के साथ काफी देर तक रहते देख कर

मगर मैं खामोश रह कर इस बात का पता लगाना चाहता था....इस समय अनायास ही मेरे मुँह से वह बात निकल आई...क्षमा करना...”

“वह आदमी अनजान नहीं था—” कुँवरानी ने कहा।

“हाँ, तुम तो उसे बहुत पहले से जानती रही होगी, तभी तो वह तुमसे मिलने आया था सो भी रात को, छिपकर....”

“मैं तो जानती ही हूँ, और आप भी उसे कम नहीं जानते.... उम्र भी उसकी कुछ कम नहीं, मेरे पिता के बराबर है...”

“कौन था वह ?”—शान्त स्वर में पूछा कुँवर ने।

“डाक्टर !”

“कौन डाक्टर ?”

“दास बाबू....”

कुँवर अब और भी गम्भीर बन गया।

पूछा—“वे इतनी रात को छिप कर क्यों आये थे ? और तुमसे ही मिलकर क्यों चले गये ?”

“उन्हें अपनी जान का खौफ था....और मुझसे ही केवल इसीलिये मिले कि आप उनकी बातों का विश्वास न करते....”

“किन बातों का ?...”

“शाम को चंचल, जमुना और वह लड़की उनके यहाँ गये थे और उन्हें डरा-धमका कर एक पुड़िया ज़हर ले आये...दास बाबू मुझे सावधान करने आये थे, उसी के फल स्वरूप आज सुबह वारिस ने आपकी जान बचाई....”

“उलझन बढ़ती जा रही है”—हैरान स्वर में कहा अचल ने—“खैर, मैं वापस आकर डाक्टर से मिलूँगा....”

“कहाँ से वापस आकर ?....क्या आप कहीं जा रहे हैं ?...”

“हाँ !... मुझे कल सबेरे ही रमजानपुर जाना है। वहाँ एक चीते ने उपद्रव मचा रखा है....माताजी की आज्ञा मैं ले चुका हूँ....”

“मैं भी साथ चल्दूँ ?...”

“नारी का साथ सेज पर ही अच्छा लगता है कुँवरानी !” इस बार अचल जरा हँस कर बोला—“लड़ाई के मैदान में तो मर्दों का ही कलेजा काम करता है...”

“तो वारिस को अपने साथ ले जाइए...वह तो मर्द है न !....”

“चञ्चल तो मेरे साथ रहेगा ही....”

“चञ्चल ?...” कुँवरानी पुनः चौंक पड़ी—“वह किस काम से जा रहा है ?....”

“मेरा साथ देने...”

“साथ देने के लिए क्या कोई दूसरा आदमी नहीं मिल सकता ?....”

“मिल तो सकता है मगर भाई का साथ अधिक विश्वसनीय होता है...”

“आपको अब भी मेरी बातों पर विश्वास नहीं हुआ ?....” कुँवरानी दुखित स्वर में बोली।

“कल मुझे जाना जरूरी है, नहीं तो रुक कर तुम्हारी बातों की सत्यता का प्रमाण खोजता....अब लौट कर ही छान-बीन करूँगा...चञ्चल का मेरे साथ जाना सुनकर अगर तुम्हें मेरी जान का डर हो आया हो तो मैं तुमको वचन देता हूँ कि मैं पूर्ण सावधान रहूँगा....”

इसके बाद कुँवरानी कुछ नहीं बोली। ललित को एक ओर खिसका कर वह चुपचाप पलङ्ग पर लेट गई।

वह बहुत दुखी थी इस समय। विवाह के पश्चात् आज पहले-पहल ही अचल को उस पर शंका हुई थी।

शंका भी तो गुप्त प्रेम की !

बेचारी कुँवरानी अचल को कैसे विश्वास दिलाये ?

रात में जब डाक्टर दास उससे छिपकर मिलने आये और उसने उनसे अचल को जहर देकर मार डालने के षड़यन्त्र की बात सुनी तो वह अपने पति की विपत्ति का ख्याल करके रोने लगी थी। वृद्ध डाक्टर ने जब बहुत समझाया, तब जाकर कहीं उसका रोना बन्द हुआ !

मगर अचल को तो इन बातों पर विश्वास ही नहीं है। उसे तो कुँवरानी पर शंका है। और पति की शंका पत्नी के लिये कितनी घातक हो सकती है, इसे कुँवरानी जानती है !

रमजानपुर रामगढ़ रियासत के अन्तर्गत एक छोटा-सा गाँव था जो एक भयानक-जंगल के किनारे बसा हुआ था। वहाँ के निवासी कृषक थे, जहाँ आस-पास की जमीन जोत-बोकर अपनी जीविका चलाते थे। रमजानपुर के आस-पास और भी कई गाँव थे।

रामगढ़ के स्वर्गीय राजा साहब अच्छे शिकारी थे। वे अक्सर रमजानपुर शिकार खेलने के लिये आया करते थे।

रमजानपुर में उन्होंने एक छोटा बँगला भी बनवा लिया था, जहाँ वे शिकार के लिये आकर ठहरा करते थे।

राजा साहब के मरने के पश्चात् अब तक वह बँगला उजाड़ पड़ा हुआ था।

परन्तु आज उसकी सफाई हो गयी है। बड़ी चहल-पहल दिखाई पड़ रही है वहाँ।

अचल और चञ्चल कुर्सियों पर शिकारी पोशाक पहने बैठे हैं। दोनों के बदन पर एक ही रंग की पोशाकें हैं। बगल में दो बन्दूकें भी रखी हैं। सामने ही दस-बारह किसान खड़े हैं, हाथ जोड़े हुए, अदब के साथ।

“तो तुम लोगों में से कोई भी हमें इत्तला करने नहीं गया ?...” अचल ने पूछा।

“नहीं सरकार !...” एक किसान बोला—“हमें कोई तकलीफ होती, तब तो हुजूर को खबर देते ?... यहाँ तो सब राजी खुशी है अन्नदाता !....”

“और वह चीते के उत्पात की खबर....” चंचल ने पूछा।

“एकदम भूठ है माई-बाप !.... यहाँ से तो कोई यह खबर लेकर नहीं गया.... किसी बदमाश ने बेकार हुजूर लोगों को परीशान किया...” बोला किसान।

“अजीब बात है !”—अचल आश्चर्य से बोला—“उस आदमी को हमें यहाँ व्यर्थ बुलाने से क्या मिला ?.... तुम लोग गाँव के सभी आदमियों को यहाँ बुलाओ। मैं पहचानूँगा कि कौन यह भूठी खबर लेकर मेरे पास गया था...”

“जो हुक्म अन्नदाता....”

थोड़ी ही देर के बाद गाँव के सभी आदमी बारी-बारी से अचल के सामने आने लगे।

सैकड़ों आदमियों को देखकर भी अचल ने उस आदमी को नहीं देखा, जिसने यह भूठी खबर उसे दी थी।

“अब कोई नहीं बचा है सरकार !”—एक किसान ने कहा।

“सब आदमी के सामने ?”

“हाँ, हुजूर !...”

अचल परेशान होकर कुछ सोचने लगा ।

चञ्चल बोला—“जाने दो भैया ! किसी मसखरे का काम था यह...”

“भगर अजीब था वह आदमी चञ्चल ! इस तरह से गिड़-गिड़ाकर बोल रहा था, जैसे सचमुच ही गाँव पर बहुत बड़ी आफत आ गई है...उसके चेहरे से ज़रा भी बनावटीपन नहीं टपक रहा था...खैर, आज रात तो मैं यहीं रहूँगा । शाम को एक बार फिर सब आदमियों को देखूँगा....उस आदमी का चेहरा अब भी मुझे याद है....”

“अब आप आराम करें भैया !...” बोला चञ्चल ।

“आराम तो नहीं करना चाहता चञ्चल ! सोचता हूँ, जंगल में चलकर कुछ हिरन या सुअर आदि का शिकार ही करूँ.... चलोगे तुम ?...वेकार यहाँ बैठ कर क्या किया जायगा ?....”

“चलिये, शिकार के लिये तो मैं साथ आया ही हूँ...” चञ्चल अपने दिल की खुशी छिपा कर बोला ।

वह तो स्वयं ही प्रस्ताव रखने वाला था परन्तु अचल पहले ही प्रस्तुत हो गया । चञ्चल का रास्ता अपने-आप साफ होने लगा ।

“तो कब चलोगे भैया ?”

“बस, बन्दूक उठाओ और पैदल ही चल दो....वेचारे गाँव वालों को छुट्टी दे दो और शोफर से कहो कि कार उधर लाकर धो डाले और सफाई कर ले...रास्ते की धूल से एकदम भर गई है....”

चञ्चल बाहर चला गया और थोड़ी ही देर बाद लौट कर बोला—“चलो भैया ! सब ठीक कर दिया है...”

“कारिन्दा से कह दो चञ्चल कि हम लोग शाम को लौट कर खुद ही शिकार पकायेंगे....सामान सब तैयार रखे...”

“मैंने कह दिया है भैया ! अब चलो । दोपहर होने को आई....अब देर करना ठीक नहीं....”

अचल उठ खड़ा हुआ । बन्दूक उठा कर बाहर निकला और धूल भरी पगडंडी से पैदल ही जंगल की ओर रवाना हुआ ।

चञ्चल भी अपनी बन्दूक लिये उसके पीछे-पीछे चला ।

इस समय उसके हृदय में अनेक प्रकार की भावनाएँ उदय हो रही थीं । आज अचल को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था उसने । सुनसान जङ्गल के बीच, जो अमानुषिक कार्य होगा, उसकी गवाही कोई भी नहीं दे सकेगा । चञ्चल का काम भी बत जायगा और वह बेदाग निर्दोष भी प्रमाणित होगा ।

“चंचल ?....”

“मैं ठीक पीछे ही हूँ भैया ! बड़े चलो....सूरज सर पर आ गया है...”

अचल तेज चलने लगा ।

कुँवरानी को अपने सावधान रहने का वह जो वचन दे आया था, उसे भूल गया । चञ्चल पर उसे तनिक भी शंका नहीं थी । भोला-भाला अचल तेज पैरों से जङ्गल में चला जा रहा था ।

काफी देर तक चलते रहे दोनों ।

गाँव चार मील पीछे छूट चुका था । इधर का जंगल बहुत घना था । जानवरों के पैरों द्वारा बनी हुई लीक पर दोनों चले जा रहे थे । आस-पास दीर्घाकार वृक्ष और घनी झाड़ियाँ थीं ।

अब तक उनकी दृष्टि में कोई जानवर न पड़ा था, जिसका वे शिकार करते ।

चलते-चलते चंचल की दृष्टि कुछ दूर की एक भाड़ी के पीछे जा पड़ी।

रुक कर वह आगे-आगे जाते हुए अचल से बोला—“भैया ! तुम चलो....मैं उस भाड़ी से थोड़ी-सी बेर चुन लूँ....देखकर तबियत ललच गई है....ज्यादा नहीं, दस-बीस तोड़ूँगा सिर्फ....”

“तोड़ लो...” कह कर अचल ने पैरों की गति धीमी कर दी और धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा।

चञ्चल उस भाड़ी की ओर बढ़ा, जिसमें पकी हुई लाल-लाल बेरें दिखाई पड़ रही थीं।

वह बेर तोड़ने लगा। थोड़ी देर बाद धीरे से बोला—“जमुना !....”

भाड़ी के पीछे से एक हलकी आवाज आई—“मैं तैयार हूँ छोटे कुँवर !....वातैसी है कि पिस्तौल मेरे हाथों में मुस्तैद पड़ी है...गोली चलाऊँ क्या ? बड़े कुँवर यहाँ से साफ दीख रहे हैं....”

“अभी नहीं....और घने जंगल में पहुँच कर तब पिस्तौल उठाना....”

“मगर छोटे कुँवर ! आप दोनों साथ रहेंगे तो मैं दूर से पहचान न सकूँगा....एक-सा ही कपड़ा पहन रखा है....मैं बहुत दूर से आपके पीछे हूँ, मगर जब-जब आप दोनों को देखा है, तब-तब वातैसी है कि मैं संशय में पड़ गया हूँ....”

“मैंने तो पहले ही कह दिया था....” चंचल बोला।

“मगर मुझे विश्वास नहीं था कि मेरी आँखें इतनी बेकाम हो जायँगी....,”

“नजदीक से निशाना लगाने पर भैया तुम्हें देख सकते हैं...खैर, मैं आगे चल कर किसी चट्टान पर सुस्ताने के लिये भैया के साथ बैठ जाऊँगा....थोड़ी देर बाद किसी बहाने से उठ

कर मैं कुछ दूर चला जाऊँगा, तब तुम उस चट्टान पर बैठे हुए आदमी को अपना लक्ष्य बनाना...समझ गये ?”

“ठीक है....” भाड़ी के पीछे से वही धीमी आवाज सुनाई दी। पास की ही दूसरी घनी भाड़ी के आँचल से बाहर झाँकती हुई दो प्रज्वलित आँखें उधर देख रही थीं, मगर चंचल या भाड़ी के पीछे छिपे हुए जमुना दो में किसी की भी दृष्टि उधर नहीं पड़ी।

जब चंचल बेर तोड़कर उधर चला, जिधर अचल जा रहा था तो वे आँखें उस भाड़ी में घुस कर गायब हो गईं।

जमुना भी हाथ में पिस्तौल लिये तीन सौ गज के फासले पर दोनों कुँवर का पीछा करने लगा।

चंचल तेज चल कर अचल के पास पहुँच गया।

“बड़ी देर कर दी चञ्चल ?”

“भाड़ी में काँटे बहुत थे भैया !...अकेले डर लगता था क्या ?” कह कर चञ्चल हँसा।

“नहीं तो....मगर-ऐसे भयावने जंगल में दोनों का साथ रहना आवश्यक है...अभी तक कोई जानवर भी दिखाई नहीं पड़ा....”

फिर दोनों चुपचाप आधे घण्टे तक तेजी के साथ चलते रहे।

अब जंगल काफी घना हो चला था। भाड़ियाँ तो इतनी अधिक थीं कि दो-चार हाथ आगे देख सकना भी मुश्किल था।

एक चट्टान की ओर इशारा करता हुआ बोला चञ्चल—
“थकावट आ गई अब तो भैया ! इस चट्टान पर आओ थोड़ी देर बैठ लें....”

अचल कुछ बोला नहीं। चुपचाप चञ्चल के साथ चट्टान पर आ बैठा।

“बड़ा घना जङ्गल है !...” चञ्चल बोला ।

“और भयानक भी...मगर कितना खुशनुमा लगता है यह जङ्गल ! कितना शान्त !...कितना नीरव ! यहाँ की चिड़ियों का भी जवान नहीं कि कुछ बोल सकें...”

कह कर अचल चारों ओर आँखें घुमा कर जङ्गल की शोभा देखने लगा ।

चट्टान से दस गज दूर की एक झाड़ी पर अचल की आँखें रुकीं, फिर आगे बढ़ गई ।

मगर थोड़ी ही देर बाद फिर वहीं लौट आई ।

झाड़ी के पीछे कोई था ।

अचल सावधान हो गया ।

उसने गौर से झाड़ी की ओर देखा ।

छिपकर कोई खड़ा था और अचल को अपने पास आने का इशारा कर रहा था ।

अचल ने कुछ कहना चाहा तो उसने चुपचाप अपने पास आने का इशारा किया ।

अचल बहुत परेशान हो उठा । इधर जाने कैसी घटनायें हो रही हैं कि उनका तारतम्य अचल कहीं से जोड़ नहीं पाता ।

वह धीरे से उठने लगा ।

“कहाँ भैया !....”

“अभी आया चञ्चल ! लघुशंका करके....”

कहकर अचल उस झाड़ी की ओर बढ़ा ।

उसे आते देखकर वह आकृति झाड़ी में जा छिपी ।

चञ्चल को कुछ शंका नहीं हुई । अचल इतना चतुर होगा, इस पर उसे कभी विश्वास नहीं था । वह चुपचाप चट्टान पर बैठा रहा । यह भी उसे याद नहीं रहा कि उसने जमुना से क्या

कहा है ? उसने कहा था कि अचल के साथ एक चट्टान पर जा बैठेगा, फिर स्वयं किसी बहाने उठ जायगा, तब जमुना अचल पर गोली दागेगा ।

मगर यहाँ तो अचल ही उठकर चला गया था और चंचल चट्टान पर कुछ सोचता हुआ बैठा था ।

वहाँ से लगभग ३०० गज दूर की एक भाड़ी में छिप कर बैठे हुए जमुना ने अचल को उठ कर जाते देखा तो उसने समझा कि अपने कथनानुसार चंचल ही उठकर चला गया है और चट्टान पर बैठा हुआ व्यक्ति अचल है ।

उसने पिस्तौल उठाई ।

उधर चंचल के पास से उठकर अचल उस भाड़ी के पीछे पहुँचा तो वह चौंक कर बोल उठा—“वारिस तुम ?...”

वारिस ही था वह ।

बोला—“हाँ, हुजूर ! मैं ही हूँ...”

“यहाँ क्यों आये ?...”

कुँवरानी साहिबा ने मुझे छिपे-छिपे भेजा है हुजूर !... खुदा कसम ! इस वक्त आपकी जान बेहद खतरे में है....”

“क्या बकते हो तुम ?”

“आहिस्ता बोलिये हुजूर !....इधर आइये...” कहकर वारिस ने अचल का हाथ पकड़ लिया और खींचता हुआ उसे कुछ दूर ले गया ।

पीपल का एक सघन पेड़ था, जिसके चारों ओर आदमकद ऊँची भाड़ियाँ थीं ।

वहाँ पहुँच कर वारिस बोला—“यहीं रुक कर अब देखिये क्या होता है ?...इस दरार से देखिये हुजूर ! वह सामने छोटे कुँवर बैठे हैं... देखते चलिये, अभी आपकी समझ में सब कुछ

आ जायगा...अपने को छिपाये खड़े रहिये...मैं जरा उधर जाकर जमुना को देख लूँ...खुदा कसम ! वह शैतान भी हाथ में पिस्तौल लेकर छिपे-छिपे आया है....”

बन्दूक कन्धे पर रखे वारिस चल पड़ा ।

आश्चर्यचकित अचल उसी पीपल के पेड़ के नीचे खड़ा रहा ।

छिपते-छिपते सौ कदम की दूरी पर जाकर वारिस की निगाह जमुना पर पड़ी । वह वहीं छिप कर उसकी गतिविधि देखने लगा !

जमुना ने चट्टान पर बैठे हुए व्यक्ति को अचल समझा था और उसकी ओर निशाना साध कर उसकी पिस्तौल तन चुकी थी ।

दूसरे ही क्षण धाँय की आवाज हुई । जमुना की पिस्तौल की गोली मौत बन कर छूटी....

और तुरन्त ही सारा जंगल चंचल की चीख से गूँज उठा ।

वारिस के मुख से खुशी की हलकी आवाज निकली । उसने अपने मालिक की जान बचा ली थी और दुश्मन की गोली खुद दुश्मन को ही जा लगी थी ।

चंचल की चीख सुनकर जमुना को अपनी गलती मालूम हो गई । वह उठकर चंचल के पास जाने लगा ।

तभी एक और जोरदार चीख सुनाई पड़ी, जो अचल के गले की थी ।

वारिस चौंक पड़ा । अचल की चीख ने उसका शरीर कंपा दिया ।

वह दौड़ पड़ा उस पीपल की ओर, जहाँ वह अचल को खड़ा छोड़ आया था ।

अचल के मुख से लगातार तीन चीखें मुनाई दीं और तब सन्नाटा छा गया।

वारिस सरपट भाग रहा था उस पीपल की ओर।

तभी जमुना की दृष्टि वारिस पर जा पड़ी। वह समझ गया कि इन सारी खुराफातों की जड़ वारिस ही है।

वह भी दौड़ा वारिस के पीछे।

वारिस दौड़ता हुआ जब उस पीपल के पास पहुँचा तो वहाँ का दृश्य देखकर भय से उसका शरीर काँप उठा।

उसके मुख से निकला—“या खुदा! तेरी मेहरबानी!.... जिसे तू मारना चाहें, उसे जिलाने की ताकत वारिस में नहीं.... रहम कर अल्लाह!...”

एक अजगर था, भयानक, पेड़ के तने जैसा मोटा।

पीपल के पीछे से निकल कर उसने अचल का सर अपने मुँह में रख लिया था और धीरे-धीरे उसे निगलता जा रहा था। जल्दी-जल्दी में उस भयानक अजगर को अचल के शरीर को लपेटने का मौका नहीं मिला था।

थोड़ी देर तक वारिस उस दर्दनाक नजारे को देख कर अपनी छाती पीटता और खुदा का नाम रटता रहा मगर तुरन्त ही उसे होश आ गया।

अचल का कमर तक का हिस्सा अजगर के मुँह के भीतर था।

वारिस ने अपनी बन्दूक उठाई और अजगर की ओर करके निशाना साधा।

तभी उसके सर पर पीछे की ओर से तेजी के साथ कोई वजनी चीज गिरी। उसका सर चकरा गया, बन्दूक हाथों से छूट पड़ी और वारिस बेहोश होकर गिर गया जमीन पर।

वारिस के पीछे-पीछे दौड़ता हुआ जमुना ठीक उसी समय

वहाँ चहुँचा, जब वह अजगर को मारने के लिए अपनी बन्दूक तान चुका था।

एक ही नजर में जमुना सारा मामला समझ गया। उसने बन्दूक का बजती कुन्दा वारिस के सर पर जोरों से पटक दिया।

सर से खून का फौवारा छूट पड़ा। कटे पेड़-सा वारिस जमीन पर गिर कर निश्चल हो गया।

अब इधर की चिन्ता छोड़ कर जमुना उस ओर बढ़ा, जिधर से चट्टान पर बैठे हुए चञ्चल की चीख उसने पहले सुनी थी।

मगर चट्टान सूनी थी। चञ्चल गायब था।

जमुना ने चारों ओर दृष्टि दौड़ाई, मगर वह कहीं दिखाई न पड़ा।

वह सोचने लगा, क्या चञ्चल को भी कोई जंगली जन्तु उठा ले गया ?

अपने से तो वह कहीं जा नहीं सकता था, क्योंकि जमुना की गोली उसे जा लगी थी।

“छोटे कुँवर !....” जमुना ने जोर से पुकारा।

“तभी चट्टान के पीछे से चञ्चल का सर उठता हुआ दिखाई पड़ा।

जमुना लपक कर वहाँ चहुँचा। बोला—“छोटे कुँवर ! आप सकुशल तो हैं ?... बातें सी है कि मैंने जल्दबाजी कर दी.... कहीं चोट तो नहीं आई आपको ? ..”

“गलती मेरी ही थी जमुना !” चञ्चल चट्टान की ओट से निकल कर बैठता हुआ बोला—“मुझे अपनी गलती का खयाल तब हुआ जब तुम्हारी गोली सनसनाती हुई मेरे सर के ऊपर से निकल गई और रोकते-रोकते भी मैं जोरों से चीख उठा... फिर मैंने सोचा, शायद तुम दूसरी गोली भी चलाओ.... इस-

लिये मैं दौड़कर नीचे जा छिपा....उधर अचल भैया की भी कई चीखें सुनाई पड़ी थीं और किसी जन्तु की फुफकार की....पता लगाओ तो..."

"मैं सब लगा चुका हूँ"—जमुना क्रूर अट्टाहास्य करता हुआ बोला—"ईश्वर इस समय आपकी मदद पर हैं छोटे कुँवर ! उन्होंने कालदेव को अजगर बनाकर भेजा है, जो बड़े कुँवर को निगल रहा है, धीरे-धीरे...वातैसी है कि वारिस भी शैतान न जाने किधर से मिट्टी सूँघता पहुँच गया था, और अजगर को मार कर बड़े कुँवर की जान बचाया चाहता था...मगर मैंने उसे भी ठीक कर दिया....चलिये, आप भी देख लीजिये...."

चञ्चल जमुना के साथ उस पीपल के नीचे आया। दूर खड़े होकर उसने देखा, एक विकराल अजगर, और उसके मुँह से बाहर निकले हुए दो पैर, और कुछ दूर पर बेहोश पड़ा हुआ वारिस।

देखते ही देखते दोनों पैर भी अजगर के मुख में समा गये, और तब चञ्चल के मुख से एक ठंडी साँस निकली।

जमुना बोला—"अब तो सब खतम हो गया छोटे कुँवर !....आनन्द का बंसी बजाइये...."

"अभी तो महल में एक बार तूफान खड़ा होगा....इस वारिस को भी यहीं खत्म कर दो...."

"वारिस खत्म हो गया होगा छोटे कुँवर !....ऐसी गहरी चोट मारी थी कि मुँह से आवाज भी नहीं निकली गिरते-गिरते....खैर, कुछ चोटें और कर दूँ....वातैसी है कि इसका बचना खतरनाक होगा...."

जमुना बेहोश वारिस के पास आ खड़ा हुआ। बन्दूक का कुन्दा ऊपर उठा, और प्रबल वेग से नीचे गिरा। रुई की तरह

धुनने लगा जमुना, बेहोश वारिस के शरीर को । सर कई स्थानों पर फट गया । बदन के हर हिस्से से खून की धारा बह चली ।

“बस करो जमुना !...इसे यहाँ से घसीट कर जानवरों के रास्ते पर रख दो....मुर्दे के माँस की बेचारे दावत ही कर लेंगे....”

वारिस की एक टाँग पकड़ कर जमुना, मरे कुत्ते सा उसे घसीट ले चला । पीपल से दो फर्लाङ्ग की दूरी पर उसने उसे बीच रास्ते पर छोड़ दिया । वह रास्ता मनुष्यों का नहीं, जानवरों का था ।

इसके बाद दोनों हँसते हुए रमजानपुर की ओर तेजी से चल पड़े ।

ऊँची चहारदिवारी के अन्दर बने हुए तीनों महल इस समय हाहाकार कर रहे हैं ।

शाम हो गई है । अँधेरा धीरे-धीरे गाढ़ा हो चला है । वक्तियाँ जल रही हैं । आसमान पर चाँद भी चमक रहा है ।

परन्तु लगता है, जैसे सभी जगह अन्धकार हो ।

तीनों महलों में चीख-चिल्लाहट, करुण पुकार गूँज रही है । नौकर-चाकर सब घबड़ाये हुए इधर से उधर दौड़ रहे हैं ।

कोई भयानक घटना घट गई है शायद ।

रानी साहिबा अपने महल में पलंग पर पड़ी हुई, मछली की तरह छटपटा रही हैं । उन्हें होश रहते भी होश नहीं है । सर के बाल बिखर गये हैं । मस्तक पटक-पटक कर रोने के कारण कई जगह गुमटियाँ उभर आई हैं ।

चंचल सामने सर मुकाये खड़ा है। कपड़े उसके फट गये हैं। बालों पर धूल जमी हुई है।

“अरे चंचल ! तू तो पूरा दगावाज निकला...” रानी साहिबा सर पीटती हुई बोली—“तूने मेरे अचल को चबा डाला....तूने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी....तूने मुझे डुबो दिया बीच नदी में....”

“मैं क्या करता माँ ?....” चंचल बनावटी शोक के साथ बोला।

“क्या करता ?....पूछता है मुझसे ?....अरे कुलाङ्गार ! भाई को आफत में देखकर भी तू खड़ा-खड़ा छाती पीटता रहा ?....कुछ करते न बना तुझसे ?...अचल के बदले तूने ही अपने को अजगर की पेट में क्यों नहीं डाल दिया...पूछता है, मैं क्या करता ?....मर जाता तू वहीं, मगर अपना काला मुँह दिखाने न आता मुझे...लोग कहेंगे, सौतेली माँ ने बच्चे को खा लिया....मेरी छाती पर तूने कोड़े मार दिया रे चंचल !....”

“माँ ! तुम यह समझती हो कि सारा कसूर मेरी ही है”—चंचल रुँआसा होकर बोला—“ईश्वर ने मेरे ही लिये काल भेजा होता तो तुम्हारा कलेजा ठंडा हो जाता...मुझे कसूरवार समझती हो तो गला काट लो मेरा....तुम्हारी छाती पर से कोड़ों के दाग मिट जाँय। दुनिया वाले भी तुम्हें निर्दोष समझें....भैया के मरने पर मुझे भी जीने की चाह नहीं रही....मैं स्वयं ही अपनी जान दे दूँगा....”

“चुप रह रे चंचल !....तेरे मुँह में कीड़े पड़ गये हैं क्या, जो जीने-मरने की बात करता है तू ?....अचल तो चला ही गया, अब क्या तू भी इस बुढ़िया की दुनिया उजाड़ जायगा ?....वह अजगर नहीं, मेरे भोले बच्चे का काल आया था और उसे

निगल भागा....तूने उसे पकड़ा भी नहीं....उसका बदन बन्दूक से छेद भी नहीं दिया...उसका पता भी नहीं लगाया कि वह काल मेरे बड़े कुँवर को निगल कर कहाँ जा छिपा....तूने कुछ नहीं किया चञ्चल ! तू दगाबाज है....”

“मैंने बहुत कुछ किया माँ !...वह शैतान बरगद के तने जैसा मोटा था, कैसे पकड़ता उसे...भैया को निगल कर वह न जाने कहाँ खिसक गया ? बहुत खोजा, मगर पता न लगा....”

“हाय मेरा लाल ! तू कहाँ गया ?....मेरा अचल कहाँ चल दिया मुझे छोड़ कर....” रानी साहिबा पलंग पर अपना सर पटकने लगी ।

चञ्चल भी रोने लगा ।

तभी किसी ने रानी साहिबा का सर पकड़ लिया और उनके मस्तक को अपनी गोद में रख कोमल हाथों से बूढ़े बालों को सहलाना शुरू किया ।

रानी साहिबा कुछ आश्वस्त हुईं ।

वोलीं चञ्चल से—“कल उस जंगल में सैकड़ों आदमियों को मेज कर पता लगवाओ और उस काल का पकड़ कर मेरे पास, मेरे सामने लाओ....जरा मैं देखूँ कि वह कैसा है, जिसने मेरे लाल को अपने पेट में भर लिया है....अरे चञ्चल ! मेरी वह भोली-भाली वह सुनेगी इसे, तो कैसे जिन्दा रह सकेगी ? . वह तड़प-तड़प कर अपनी जान दे देगी...चाँद से पति को खोकर कौन स्त्री धीरज रख सकती है....तू उसे खबर कर दे बेटा ?...हाय मेरी बहू ! तेरा भाग्य आज फूट गया बेटी !.... चञ्चल ! बुला तो वहू को....समझा-बुझा दूँ उसे....”

“भाभी आ गई हैं माँ ! तुम्हारे सर को गोद में लिये बैठी हैं...तुम्हारा माथा सहला रही हैं वही तो...”

“बहू !....” चौंक कर रानी साहिबा उठ बैठी ।

कुँवरानी पर उन्होंने दृष्टि डाली तो उसने अपना सर नीचा कर लिया ।

मगर रानी साहिबा को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि सागर का वक्ष अन्तर में ज्वालामुखी छिपाये एकदम शान्त था इस समय ।

आँखें लाल तो थीं, मगर भीगी नहीं ।

मुख उजड़ा हुआ था, मगर उस पर असीम गम्भीरता थी ।

“बहू !....” रानी साहिब ने कुँवरानी को पुकारा !

“माता जी !....” कुँवरानी के मुख से निकला हुआ स्वर सुनकर रानी साहिबा आस्मान से गिरी ।

यह स्वर वे जीती-जागती कुँवरानी का सुन रही हैं या किसी मुरदे का ?

दुख के आवेग ने कुँवरानी को पागल कर दिया था, परन्तु हृदय पर पत्थर रख कर उसने अपनी आँखों का पानी पी डाला था । नारी की सहनशक्ति की वह पराकाष्ठा थी—आँखों में एक आँसू नहीं, कलेजे में धड़कन की एक आवाज नहीं, मुख से दुख की एक आह तक नहीं ।

हाथों की चूड़ियाँ फूट गई थीं, माँग का सिन्दूर धुल गया था, बदन की चमकती साड़ी का रंग सफेद हो गया था, कल की हँसती-बोलती प्रतिमा आज विधवा बन गई थी, उसका संसार उजड़ गया था !

नारी की यह कितनी बड़ी मजबूरी है कि पुरुष के मरते ही उसकी सारी तमन्नायें मर जाती हैं । उसकी हँसी, उसका सुहाग, उसका सुख—सब कुछ पुरुष की चिता पर स्वाहा हो जाता है । और नारी बेचारी मर कर भी जिन्दा रहती है ।

“हाय ! आज मेरी फूल सी बहू विधवा हो गई....” रानी साहिबा पुनः रोने लगीं ।

तो कुँवरानी ने उनका सर खींच अपनी गोद में रख लिया । गम्भीर होकर बोली—“माता जी ! आप धीरज रखें....छोटी-छोटी नदियाँ हिमालय का बाँध नहीं तोड़ सकती....दुःख-सुख तो आते ही रहते हैं और आँखों के आँसू कभी सूखते भी नहीं.... जो होना था, वह तो हो चुका...”

कहते-कहते कुँवरानी का गला रुंध गया । इसके आगे वह कुछ बोल नहीं सकी ।

बूढ़ी रानी साहिबा अपनी इस छोटी-सी बहू के आगे एक-दम बची हो गई हैं । वे रो रही हैं और....और वह उन्हें समझा रही है !

सर पर किसी के पहाड़ गिर पड़े और अडिग रह जाय, ऐसी है यह कुँवरानी कविता !

रानी साहिबा को बड़ी ग्लानि हुई ।

कहाँ तो उन्हें कुँवरानी को समझाना चाहिये था, कहाँ वही उनको समझा रही है !

वे उठकर बैठ गईं और लपक कर कविता को उन्होंने अपने कलेजे से दाब लिया । दो जलते दिलों की आग मिल कर लपटें फेंकने लगीं, मगर दोनों नारियों ने उन लपटों को अपनी आँखों के भीतर कैद रखा ।

“वह दगाबाज चला गया बेटी ! मगर तू धीरज रख... धोखेबाजों के लिये आँसू गिराना ठीक नहीं...” रानी साहिबा कविता का सर सहलाते हुए बोली ।

“इन्सान रोना चाहे, तो जिन्दगी के पग-पग पर आँखों से आँसू निकल चलते हैं माताजी !...धोखेबाज लोग अच्छे तो नहीं

होते, मगर दिल जिससे एक बार प्यार पा जाता है, उसे भूल नहीं पाता कभी... भगवान ने मेरे सुखों को आँसुओं के सागर में डुबो दिया है माँ ! मगर कविता इससे विचलित नहीं होगी... नारी कमजोर होती है जरूर, मगर आँसू की बूँदें उसका क्या बिगाड़ लेंगी ?" कुँवरानी कविता ने कहा ।

“चञ्चल ! जाकर कपड़े बदल डाल”—रानी साहिबा ने कहा ।

चञ्चल एकटक अपनी भाभी का वह गम्भीर सौन्दर्य देख रहा था । अन्तर की आग की लपटों से बदन का गोरा रंग सुनहला हो गया था । विधवा भाभी का वह देदीप्यमान रूप देखकर चञ्चल चलायमान हो उठा ।

माँ का स्वर सुनकर धीरे से वह उठा और शोक-सन्तप्त होने का नाट्य करता हुआ कमरे से बाहर हो गया ।

“ललित अकेला होगा बेटी ! चल तुझे पहुँचा दूँ....” रानी साहिबा ने कविता से कहा ।

“मैं चली जाऊँगी माताजी !”—बोली कुँवरानी—“वे तो चले गये, लेकिन मेरी चलने-फिरने की ताकत नहीं गई । पति के न रहने पर नारी के लिये और सभी चीजें बेकार हैं । पुरुष के गम में तड़पते-तड़पते जान निकल जाय, इसी में नारी के जीवन की सार्थकता है....”

“क्या कह रही है कविता तू ?... रो ले बेटी ! तबियत हल्की हो जायगी । आँसू किसी जहर से कम नहीं होते । इन्हें पीते ही इन्सान को मौत आ जाती है... ताकत बची हो देखने की, तो बेटे में पति की छाया देखकर सन्न कर... चल, पहुँचा दूँ तुझे...”

रानी साहिबा कविता के साथ उसके महल तक आई । पलंग पर घंटों बैठ कर उसे समझाती रहीं ।

कुँवरानी कविता कुर्सी पर बैठी-बैठी चुपचाप सब सुनती रही।

रानी साहिबा जब चली गई तो वह टूटे कगार की तरह शोक सागर में गिर कर छटपटाने लगी।

आज उसकी पलंग सूनी थी। सोये ललित को उसने कस कर अपने सीने में छुपा लिया, परन्तु शोख पति की याद को भोले बच्चे की मासूमियत दूर नहीं कर सकी।

सुनसान देख कर आँखों का सागर भी उमड़ पड़ा। रोने लगी कविता... धैर्य का बाँध तोड़ कर।

कल जिस मुख पर बासन्ती बहार थी, आज उससे सावन-भादों की धार बरस रही थी। काली-काली अलकों के बीच की माँग पतझड़ बन गई थी।

रात बीतने लगी। ऊपर चढ़ता चढ़ता चाँद धीरे-धीरे नीचे उतर कर जा छिपा।

कविता के आँसू नहीं रुके।

जवान पति की अचानक मृत्यु के बाद की पहली रात नारी किस प्रकार तड़प-तड़प कर काटती है, इसकी कहानी कोई कविता के आँसू से पूछ ले।

रात की जवानी ढल चली। जागरण का सन्देश लेकर दूर से मुर्गे की आवाज आई।

अभी अँधेरा ही था। कविता जाग कर रो रही थी।

तभी बाहर दरवाजे पर कुछ खटपट की आवाज हुई।

किसी ने पुकारा—“दरवाजा खोलिये हुजूर !....”

स्वर किसी स्त्री का था। रुँआसा, दर्द भरा।

कविता ने चटपट उठकर दरवाजा खोल दिया। देखा—
धुंधले-अँधेरे में कोई स्त्री-मूर्ति खड़ी है।

कविता ने बाहर की बत्ती जला दी। उजाले में गुलनार को वहाँ खड़ी देखा उसने... उसके कंधे से लगकर और भी कोई खड़ा था, बदहवास, लहलुहान, सर आगे की ओर लटका हुआ।

यह तो वारिस है !

कपड़े खून और धूल से सनकर लथपथ हो रहे हैं, जगह-जगह से फट गये हैं। सर में लम्बे-लम्बे घाव दिखाई पड़ रहे हैं, जिसमें माँस के लोथड़े उतरा आये हैं। नीचे जमीन पर अब भी ताजा रक्त चूर रहा है।

बरगद जैसे वारिस की जड़ कट गई है, मामूनी जटायें उसे अब अधिक देर तक खड़ा नहीं रख सकती।

... गुलनार चुप है। अपने पति को वह पहचानती है, अपनी जान पर खेल कर वह अपने मालिक की जान बचाने वाला है।

मगर आज आधी साँस लिये, एक पैर कब्र में लटकाये वह अपनी मालकिन से मिलने आया है। जान बाहर निकलने को तड़प रही है, परन्तु उसकी स्वामिभक्ति से मौत को भी परास्त होना पड़ा है।

“देर हो रही है...गुलनार !...” वारिस के मुख से अस्फुट शब्द निकले—“जरा जल्दी....बुला दे...”

“क्या है वारिस ?...” कुँवरानी आश्चर्यचकित-सी आगे बढ़ आई।

“मुझे जमीन पर बिठा दे गुलनार !....”

जमीन पर धीरे से बिठाया गया उसे।

बोला वारिस—“जान...हलक में आकर....अटकी हुई है....हजूर !...खुदा कसम ! बदन की एक-एक हड्डी टूट...गई है....किसी कदर घिसटते-घिसटते एक फर्ज की याद लिये.... यहाँ तक....आ पहुँचा हूँ....वक्त ज्यादा नहीं...कुछ सुन लें तो,

मेरी जान को निजात मिल जाय तड़फड़ा रही है हजूर....निकल जाने के लिये....”

“गुलनार !...मैं इसे देखती हूँ....तु बाहर जाकर नौकरों को डाक्टरों के पास भेज....शहर में जितने डाक्टर हों, सब को बुला....वारिस की जान जाने के पहले मेरी दौलत जायगी....”

गुलनार दौड़ती चली गई ।

कविता ने वारिस को सहारा दिया

वारिस की आँखें बन्द थीं । जबान लटपटा कर चल रही थी—“बेकार है हजूर !....डाक्टरों के आने...के पहले ही मौत आ जायगी....आपसे मुझे...माँ की...मुहब्बत मिली है कुँवरानी साहिबा !...आपकी...गोद...में मेरी जान निकल रही...है...दुनिया में किस नौकर...की ऐसी किस्मत...होगी हजूर !...कुँवर साहब को साँपों...से बचाया तो अजगर ने निगल....लिया....मैं कुछ नहीं कर सका सरकार !...वारिस....की इस....गलती....को....माफ कर....दे....”

और वारिस का सर एक ओर को लटक गया ।

कुँवरानी ने एक दीर्घ निश्वास ली और वारिस के शरीर को धीरे से जमीन पर लिटा दिया ।

उस समय पिछली रात का अंधेरा धीरे-धीरे दूर हो रहा था ।

“ओह, चंचल कुँवर !—” होटल के कमरे में घुमते हुए एनी ने कहा—“By God, हम तुमको देखने के लिये बहुत anxious था....आज बीस दिनों के बाद तुम यहाँ आई है....Isn't it ?”

“आओ मिस एनी !....” कोच पर उसे बैठने की जगह देता हुआ बोला चञ्चल—“मैं बहुत व्यस्त था....”

“How are you Mr. जमुना ?” बैठती हुई एनी ने जमुना से पूछा ।

“सब आपकी मिहरबानी है मिस साहिबा !—” जमुना ने कहा—“वातैसी है कि छोटे कुँवर अपने भाई के क्रिया-कर्म में फँसे हुये थे....”

“Congratulations छोटी कुँवर !....आखिर बड़ी कुँवर को खुदा ने बुला ली....”

“वात बड़े ताज्जुब की है छोटे कुँवर !....” एकाएक जमुना बोला ।

“कौन-सी बात ?....”

“उस शैतान वारिस की”—जमुना ने कहा—“उसकी हड्डी पसली तोड़कर जंगल में रख आया था मैं....मगर शैतान विस-टता-विसटता उसी रात महल आ पहुँचा....”

“मर तो गया ही होता वह, मगर भाभी ने पानी की तरह रुपये बहा कर उसे बचा लिया....” कुँवर चञ्चल ने कहा ।

“रानी साहिबा भी तो कम परेशान नहीं हुई उसके लिये.... दिन में तीन बार उसे देखने जाती थीं....नौकर क्या हुआ, बिलायती कुत्ता हो गया....अब तो चलने-फिरने भी लगा है । कल देखा था उसे एक नजर । ललित को छोटी गाड़ी पर घुमाने निकला था....बदन की अकड़ वैसी की वैसी ही है...वेइमान ने हमारी खूब शिकायत की होगी कुँवरानी से....शायद रानी साहिबा से भी कहा हो...”

“माँ से उसने कुछ कहा होता तो वे मुझसे जरूर पूछतीं... और भाभी का भी व्यवहार पहले जैसा ही नम्र है...वारिस ने

किसी से कुछ कहा नहीं शायद । कह दिया होता तो अब तक आफत आ जाती... उसने चोट करते तुम्हें देखा नहीं था, वरना उसकी जवान चुप न रहती अब तक...." घोला चञ्चल ।

"महल का क्या हाल-चाल है ?...."

"धीरे-धीरे सब ठीक होता जा रहा है" चञ्चल ने कहा—
"भैया की याद लोग भूलते जा रहे हैं । पहले तो भाभी ने कई दिनों तक खाना नहीं खाया, मगर अब खाती भी हैं, सोती भी हैं, और हँसती-बोलती भी....माँ का शोक भी अब बहुत-कुछ दूर हो गया !..."

"तो फिर अब धीरे-धीरे दूसरी कारवाई शुरू की जाय... ललित और कुँवरानी को भी दूर करना है ?..." जमुना बोला ।

"केवल ललित को...पति और बेटे को खोकर नारी का प्यार सूना हो जायगा और वह आँखें पसार कर किसी दूसरे का प्यार खोजेगी, तब मैं उसके सामने जा पड़ूँगा...अगर ! भाभी ने मुझे चुना, तब तो ठीक, नहीं तो बाद में उसे भी...."

"चञ्चल कुँवर !"—एनी तेज स्वर में बोली—"तुमने तो मुझसे शादी की वादा की थी, फिर अपना भाभी का Love क्यों पाना चाहती है ?..."

"तुम चुप रहो एनी !...." चञ्चल ने कुछ कठोरता के साथ कहा—"एक आदमी क्या दो औरतें नहीं रख सकता ?..."

"But the love is divided then"—एनी ने कहा—
"हम इसे पसन्द नहीं करता...तुमने हमसे शादी करने का वादा की थी...हमको धोखा देगी तो अच्छी नहीं होगी...."

"नहीं होगी, न सही....इस समय चुप रहो तुम...." चञ्चल ने उसे डाँट दिया ।

एनी लाल-लाल आँखों से उसे घूरती रही ।

“तो पहले ललित को दूर किया जाय ?....”

“हाँ !....”

“कैसे ?....”

“सुबह वारिस उसे गाड़ी पर हवा खिलाने ले जाता है न !....”

“बस समझ गया....तो कब ?...”

“कल ही....दो तीन आदमी रहना....वारिस अभी कमजोर है तो क्या, ललित को बचाने के लिये वह अपनी जान दे देगा....” बोला चंचल ।

“मैं खूब सावधान रहूँगा छोटे कुँवर !....मगर बातैसी है कि बच्चे की हत्या करते....”

बच्चा कहते हो उसे जमुना ?...वह तो साँप है, साँप !... कल को जवान होकर आधी रियासत का हकदार बन जायगा ...नहीं-नहीं, उसे अपने रास्ते से हटाना ही होगा....”

“ठीक है....मैं तो तावेदार हूँ आपका....कल सुबह ही वारिस से उसे छीनकर गला टीप दूँगा उसका....फिर रात में उसकी लाश कहीं जमीन की गोद में दफन कर दी जायगी....”

“जगह जरा सुनसान देखकर छापा मारना....अब चलो....”

कहकर चंचल उठ खड़ा हुआ और दरवाजे की ओर बढ़ा ।

जमुना उसके पीछे-पीछे चला ।

एनी से बगैर कुछ कहे दोनों कमरे से बाहर निकल गये ।

अपनी यह उपेक्षा देखकर एनी की आँखें क्रोध से जल उठीं । वह इतनी मासूम नहीं थी कि चुपचाप पुरुष का दुर्व्यवहार सहन कर लेती । ।

वह थी आधुनिक नारी ।

दिन के दौरान में भले ही कुँवरानी अपने पति की याद भूली रहती हो, परन्तु रात की नीरवता में उसके आँसू बहने लगते हैं।

इधर बीस दिनों में वह मुश्किल से बीस घंटे सोई होगी। और वह निद्रा भी कैसी—

कभी विकराल अजगर दीखता है सपनों में, कभी अचल की करुण चीख सुनाई पड़ती है।

बेचारी कविता आँखें बन्द कर भी सो नहीं पाती।

वारिस उसके पति की जान बचाने गया था, सो वह भी अपनी जान आधी लेकर लौटा। कविता पति को खोकर ऐसे वफादार नौकर को खोना नहीं चाहती। उसने उसके पीछे रुपयों की दीवार खड़ी कर दी। धन-लोलुप डाक्टरों ने मौत से भयानक युद्ध किया।

और आज वारिस भला-चढ़ा है।

कविता का अहसान वह भूल नहीं सकता। दोनों मियाँ-बीबी कुँवरानी का गुण-गान करते रहते हैं।

मगर कविता की आँखों में लहराते हुए सागर को सुखाने की ताकत गरीब वारिस में नहीं। उसके अन्तर की आग को बुझाने की शक्ति वह कहाँ से लाये?

अपनी जान देकर भी यदि वह उनके चेहरे पर मुस्कुराहट देख ले, तो इस कुर्बानी के लिए वारिस हर मिनट तैयार है।

मगर छटपटा कर भी वारिस कविता का दुख दूर नहीं कर पाता।

छोटे ललित की परवाह भी कविता ने बहुत कुछ कम कर दी है, सो बेचारा वारिस उसकी माँ बनकर दिन भर उसे गोद में लिये रहता है। कभी कुँवर की याद उसे सताती है तो वह पहाड़-सा पहलवान मासूम ललित को कलेजे से लगा किसी कोने में जाकर दो-चार धार रो लेता है।

गुलनार भी कम दुखी नहीं। बफादार नौकर की बीबी दिन-दिन और रात-रात भर कविता के सामने हाजिर रहती है। कोई दुख न हो कविता को, कुँवर की कोई चीज उनकी आँखों के सामने पड़कर उनके आँसुओं को न उसकाये, इन बातों का बेहद ख्याल रखती है गुलनार।

कभी-कभी कविता इन मियाँ-बीबी पर बेतरह भल्ला उठती है।

वह जानती है कि ये दोनों रानी साहिबा के हुक्म से उसकी निगरानी कर रहे हैं, ताकि अपने जीवन से ऊब कर वह अपना गला न दबा सके।

कभी-कभी वह सोचती है कि वह रानी साहिबा से सारी बातें कह दे। उन्हें बता दे कि उनके पेट से आदमी का बच्चा नहीं, साँप का पाँआ पैदा हुआ था। सारी खुराफातों की जड़ उनका चंचल है।

मगर रानी साहिबा का प्यार उसकी जवान पकड़ लेता है।

किस मुख से वह सारी बात उनसे कहेगी? सुनकर उन्हें क्या कम दुख होगा? इतना गहरा धक्का शायद उनका बूढ़ा शरीर बरदाश्त न कर सके और मौत की गोद में आराम करने चल दे।

अचल भी तो कहा करता था कि माता जी से चंचल की कोई शिकायत मत करना।

पति के बाद अब कौन रह गया है कविता के पास, जिसकी रक्षा के लिये वह चञ्चल की शिकायत करे ? बेटे की शैतानी सुनकर बूढ़ी रानी साहिबा का दिल टूट जायगा ।

कविता ने अब तक अपनी जबान बन्द ही रखी है और हमेशा बन्द रखेगी ।

आसमान पर उषा खेल रही थी । ऊपर उठते हुये सूर्य की लालिमा फैल चुकी थी, गोला अभी क्षितिज के आँचल में छिपा था ।

कविता अभी-अभी पूजा करके उठी थी और अचल की फोटो के सामने सर झुका रही थी ।

तभी गुलनार तेजी से आकर बोली—“हुजूर ! एक लड़की आपसे मिलने आई है....अँगरेज है....बड़ी जल्दी में है...रोका तो रुकती ही नहीं थी....लीजिये, वह आ ही पहुँची...”

कविता ने देखा—दरवाजे पर अँग्रेजी पोशाक पहने एक गोरी युवती खड़ी थी ।

चौंक पड़ी वह—“आप....”

“Excuse me Sister !....” युवती बोली—“मेरा नाम एनी है...जल्दी था, इसलिये बिना पूछे चला आया हम....”

एनी !...

नाम तो कभी सुना है कविता ने ।

याद आया, वारिस कह रहा था कि यही लड़की चंचल की प्रेमिका है और उस दिन अचल को जहर देने आई थी ।

सोच कर कविता का मस्तक भन्ना उठा, परन्तु बाहर से वह शान्त रह कर बोली—“आइये, बैठिये....”

एनी पलंग पर आकर बैठ गई ।

कुँवरानी ने सर से पाँव तक उसे एक बार देखा, फिर बोली—“कैसे कष्ट किया आपने ?”

“आप हमको नहीं जानता कुँवरानी साहिबा !...हम छोटी कुँवर की Beloved है, I mean माशूका .. हम आपसे कुछ पोशीदा बात कहने आया है....आप सुनेगा तो आपका फायदा होगी....”

“आप कहिये...” कविता ने कहा ।

“आप हमारी मदद करेगा न I am disappointed ... हमको धोखा दिया गया है...छोटी कुँवर शैतान है...वह बड़ी कुँवर का जान लेना चाहती थी...अब आपको अपना wife बनाना चाहती....”

“मुझे मालूम है”—कविता ने शान्त स्वर में कहा ।

“You know everything ?—My goodness, yet you are silent ?”

“आप हिन्दी में बात कीजिये...मुझे यह जवान नहीं आती....” कविता बोली ।

“Oh, sorry, हम बोला, आप सब कुछ जानता हुआ भी अब तक खामोश है....अपना खाविन्द खोकर भी आपने रानी साहिबा से शिकायत नहीं बोला ?...Too strange ! हम खुद रानी साहिबा के पास जायगा...”

“अभी आप कुछ दिनों तक खामोश रहिये....वक्त आने पर रानी माँ सब कुछ जान लेंगी....”

“No-no, हम वक्त का इन्तजार नहीं कर सकता...हम छोटी कुँवर को बरबाद कर देगा....”

“मस एनी !” कविता गम्भीर स्वर में बोली—“मुझे देखो, मैं लुट कर चुप हूँ, केवल खानदान की भलाई के लिये । तुम भी कुछ दिनों तक चुप रहो । तुम्हारे साथ पूरा-पूरा न्याय होगा...”

“Do you promise !.....I mean, क्या आप वादा करता है ?....”

“हाँ, समय पढ़ने पर मैं स्वयं रानी माँ के सामने सारी बातें रख दूँगी। उस समय क्या तुम सच्ची गवाही दोगी ? सब कुछ बता दोगी, जो तुम जानती हो ?....”

“By God, हम सब कुछ बता देगा...रात में जमुना ने बड़ी कुँवर पर knife लेकर हमला बोला, छोटी कुँवर डाक्टर दास का पास जहर माँगने गई, चा का प्याली में हमने जहर डाला, बड़ी कुँवर को जंगल में ले जाने के लिये भूठा आदमी भेजा, Mr. जमुना पीछे-पीछे पिस्तौल लेकर गई...बाद को कुँवरानी को अपना wife बनाना बोला, ललित का जान मारने को Mr. जमुना को कहा...I will tell everything Madam !”

“ललित की जान ?....” कविता चौंक पड़ी।

“ओह, हम भूल गया था....” एनी जल्दी-जल्दी बोली—
“यही बात कहने हम इतना morning में आया...”

“कौन सी बात ?....”

“आज ललित का जान मारा जायगा....छोटी कुँवर ने Mr. जमुना को सब कुछ समझा दी है....”

“भगवान ! अबोध ललित ने किसी का क्या बिगाड़ा है ?... कैसे उसकी जान ली जायगी मिस एनी ? क्या जहर से ?...”
कुँवरानी भयभीत हो उठी थी।

“No-no, आज सुबह को Mr. वारिस जब ललित को टहलाने ले जायगी, उसी वक्त Mr. जमुना हमला बोलेगी... आप आज ललित को walking के लिये मत जाने देना....”

कविता के मस्तक से पसीना छूट पड़ा। वह चिल्लाई—
“गुलनार !....”

“आई मालकिन !....”

दौड़ी आई गुलनार ।

“वारिस कहाँ है ?....” बदहवास स्वर में पूछा कविता ने ।

“वे तो हजूर ललित कुँवर को गाड़ी पर हवा खिलाने ले गये हैं....”

“कितनी देर हुई ?....”

“घंटे भर से ऊपर...”

“उफ् ! क्या होना चाहता है”—कविता ने अपना सर पीट लिया—“वारिस अभी कमजोर है...ललित को कैसे बचा सकेगा वह ?....”

कविता की आँखों के सामने अँधेरा छा गया । सूरज निकल आने पर सितारे छिटकने लगे । सर पकड़ कर बैठ गई वह पलंग पर ।

परन्तु, तुरन्त ही कुछ निश्चय कर लेने के बाद उसने सर उठाया ।

बोली—“मिस एनी ! तुम जाओ....गुलनार ! तुम यहीं रहना...”

कहती हुई कविता तेजी से उठी और आलमारी के पल्ले खोलकर कुछ खोजने लगी ।

दूसरे ही क्षण उसके हाथों में एक भयानक पिस्तौल थी ।

हाथ में पिस्तौल दबाये वह बढ़ चली दरवाजे की ओर ।

तभी दौड़े आते हुए वारिस पर उसकी नजर पड़ी । उसके पीछे-पीछे ललित की छोटी गाड़ी भी बेतहाशा भागी आ रही थी ।

“आ गया मेरा ललित !....वारिस उसे लौटा लाया...”
कविता के मुख पर सन्तोष की आभा झलकी ।

वारिस पास आ गया । कविता आगे बढ़कर गाड़ी के पास

खड़ी हुई। गाड़ी में दृष्टि डालते ही उसके पैरों के नीचे की जमीन काँप उठी।

चिल्लाई वह—“वारिस !...मेरा ललित ?... कहाँ है मेरा बच्चा ?....”

वारिस बदहवास-सा था। गिड़गि़ाकर कविता के पैरों पर गिर पड़ा—“मेरी माँ ! माफ़ करो...ललित खो गया मुझसे...खुदा कसम, मेरा कोई कसूर नहीं हज़ूर !...”

“क्या हुआ ? जल्दी बताओ”—

“सड़क के किनारे वाले बर्गाचे में कनेर के फूल लगे थे”— वारिस बोला—“ललित मचल गया लेने को...मैं तोड़ने अन्दर गया, लौट कर देखा तो गाड़ी खाली थी...बहुत खोजा हज़ूर मगर पता न लगा...मुझे आपने जिन्दगी दी है, और मैंने आपका बच्चा खो दिया...मेरी जान ले लो सरकार ! मेरी बोटी बोटी काट दो...वारिस की जवान उफ़ करे, तो कहना...”

“मैं समझ गई...” कोमल नारी का स्वर गम्भीर था और आँखें प्रतिहिंसा की भावना से जल रही थीं।

वारिस वह प्रचण्ड रूप देखकर डर गया। बोला—“हज़ूर !”

“मैं अब सहन नहीं कर सकती...” चिल्ला कर बोली कविता—“मैं रानी माँ से सब कुछ कह दूँगी। मेरे ललित को कोई नहीं छू सकता...आज मैं चञ्चल का खून करूँगी...”

हाथ में पिस्तौल ताने कविता दौड़ पड़ी, रानी साहिबा के महल की ओर।

वारिस, गुलनार और एनी आश्चर्यचकित से खड़े रह गये।

आज कविता सिंहनी बन गई थी। पति की मृत्यु पर भी मूक रह जाने वाली जवान, बेटे के शोक में खुलने जा रही थी।

हाथ की पिस्तौल गोली उगलने के लिये तैयार थी। दृढ़ उँगलियाँ घोड़े पर थीं।

रानी साहिबा के कमरे के पास आकर कविता रुक गई।

रानी साहिबा पलंग पर बैठी थीं। परेशान चञ्चल सामने खड़ा था।

कविता दरवाजे की आड़ में छिप गई। पिस्तौल नीची करके भीतर की बातें सुनने लगी।

“मैं पूछती हूँ कि तुम लोग लम्बी तानकर क्यों सोये रहते हो?” रानी साहिबा तड़पकर बोली—“इतनी बड़ी घटना हो गई और तुम्हें पता तक नहीं...कहे देती हूँ, ऐसे नहीं चलेगा चञ्चल!....या तो अपनी आँखें खोल और इन घटनाओं का पता लगा, नहीं तो तुम्हें जेल में डाल दूँगी...तू मुझे केवल माँ मत समझ....मैं रानी भी हूँ....जुर्म को दवाना मेरा काम है....”

“तो क्या मैंने यह सब किया है माँ....” चञ्चल बोला।

“किया हो या नहीं मगर अचल नहीं रहा, तो तू ही उसका काम सम्हाल...मुझे पता लगाकर बता कि वे लोग कौन थे जो उसे उठाये जा रहे थे?...”

“सारी दगावाजी भाभी की है माँ! मुझे बदनाम करना चाहती हैं....लोगों से कहती फिरती हैं कि अचल भैया को मैं ही निगल गया....खुद रात के वक्त पराये पुरुषों से मिलती हैं....”

“क्या बकता है तू लड़के?...”

“भैया थे तब की बात है.... मुझे पता लगा था कि कोई आदमी उनसे रात के वक्त मिलने आया था, जिसके साथ वे बैठक में काफी देर तक रहीं...और वह वारिस का बच्चा पहरा देता रहा...भूठ नहीं कहता माँ! ऐसी आदत है भाभी की, तो कभी तुम भी जान लोगी....”

सुनते-सुनते कविता का क्रोध उमड़ पड़ा। यह आस्तीन का साँप सबको ढँस चुकने पर भी सीना ताने खड़ा है !

उसका हाथ उठा। पिस्तौल सीधी हुई। उँगली घोड़े पर जम कर बैठ गई।

तभी पलंग के उस पार, नीचे से किसी बालक का स्वर सुनाई पड़ा—“लानी माँ ! मैं घोला लूँगा, लकली का....”

सुनकर कविता चौंक पड़ी। पिस्तौल छूट कर जा गिरी जमीन पर।

“मेरा ललित !....” पागल की तरह दौड़ पड़ी कविता कमरे के अन्दर।

पलंग के उस पार बैठ कर खेलते हुए ललित को उठाकर उसने अपने सीने में छुपा लिया। आँखों से बेतरह पानी बहने लगा।

“ललित !....मेरा बच्चा !....” हिचकियाँ ले-लेकर वह ललित का मुख चूमने लगी।

“अरी ओ ललित की बच्ची !...छोड़ उसे, पहले इधर मुझे जवाब दे...” रानी साहिबा ने कहा।

कविता ललित को छोड़कर उठ खड़ी हुई। बच्चे को पाकर उसका सारा क्रोध पानी बन गया। मुख की वेदना अजीब ढंग से मुस्कुरा रही थीं।

“क्या है माता जी ?...”

“मैं पूछती हूँ कि उस बड़े कुँवर के मरते ही तू क्या पागल हो गई है ?...अपने को तो भूलती ही जा रही है, मगर इस खिलौने का भी क्या तुझे कुछ गम नहीं ?....देख बहू ! तुम सब ऐसे रहोगे तो एक-एक को निकाल बाहर करूँगी...”

“बारिस इसे टहलाने ले गया था माता जी !...”

“मगर चहारदीवारी के बाहर जाने की क्या जरूरत थी ?....
आने दो उस वारिस के बच्चे को ! छड़ी से मार-मार कर उसकी
जान न ले लूँ तो कहना...टहलाने ले गया था !.... फूट-सा बच्चा
कहीं इतनी दूर टहलाया जाता है, कि हवा लगते ही मुरझा
जाय ?....”

“मैं इसे ही खोजने दौड़ी आई थी माता जी !....”

“चुप रह बहू ! मेरा महल कोई भूलभुलैया नहीं है कि यहाँ
खोजने दौड़ी आई....यह तो कह कि मेरी नजर उन बदमाशों
पर पड़ गई....हवा खाकर लौट रही थी कार पर, तो उस बाहर
वाले बगीचे के पीछे से किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई
दी । कार रोक कर दौड़ी गई । मुझे देखते ही वे शैतान भाग
गये । देखा, तो यह ललित था...तुम लोग इतने लापरवाह हो
गये हो कि कोई तुम्हारा गला काट कर चल दे और तुम्हें खबर
भी न हो जरा सा....इसे पैदा करते वक्त तुम्हें पीड़ा नहीं हुई थी
क्या कविता ?....हुई थी तो इसकी परवाह क्यों नहीं करती तू ?
मिट्टी के खिलौने की तरह क्यों इसे इधर-उधर फेंकती चलती
है ?....तुम सब लोग बागी हो गये हो । अचल चला गया,
मगर मैं मरी नहीं....अब ललित को मार कर तुम लोग मेरी
जान लेना चाहते हो, ताकि इतनी बड़ी रियासत तुम्हारी हो
रहे...मैं अन्धी नहीं....एक दिन सबको जेल में कर दूँगी...”

चञ्चल सन्नाटे में आकर खड़ा हुआ सब सुन रहा था ।
यद्यपि रानी साहिबा वे बातें सबको लक्ष्य कर कह रही थीं, परन्तु
चञ्चल को लगा, जैसे उसी के लिये यह सब कहा जा रहा है,
जैसे रानी साहिबा के अन्तर में उसके प्रति कोई शंका घर कर
गई है, जिसे वे अव्यक्त रूप से व्यक्त कर रही हैं ।

रानी साहिबा कहे जा रही थीं—“बहू ! अब तू चल दे

यहाँ से.. इस ललित को तू नहीं सम्हाल सकती, हो यह तुझे अब मिलेगा भी नहीं....मैं जानती हूँ, हमारे बहुत से दुश्मन पैदा हो गये हैं...अब तक जितनी खुराफातें हो रही हैं, सबका कारण मैं समझती हूँ, फिर भी खामोश हूँ...वक्त आने पर जो कसूरवार साबित होगा, उसे फाँसी दे दूँगी....”

सुनते-सुनते चञ्चल का सर चकरा गया । तो सीधा उसी के ऊपर कटाक्ष है।

“माता जी ! ललित को ले जाऊँ ?....” कविता ने प्रार्थना की ।
तो रानी तड़प कर बोली—“नहीं, कभी नहीं....ललित मेरे साथ रहेगा....तू उसे खो देगी बहू !....हठ करेगी तो निकाल बाहर करूँगी....जा यहाँ से....चञ्चल ! तू भी चल दे अब...ओ रे ललित ! इधर आ बेटा !....लकली का घोला लेगा....”

“लूँगा लानी माँ !....”

“यहाँ रहेगा तू ?....”

“जलूल !....हमको मिठाई दोगी लानी माँ ?....”

“जलूल !....” रानी साहिबा ने भी उसी टोन में जवाब दिया ।

कविता हँसने लगी । चञ्चल चला गया था ।

ललित को पाकर कुँवरानी सब कुछ भूल गई थी । ललित चाहे उसके पास रहे, चाहे रानी साहिबा के पास । रानी साहिबा के महल में वह एकदम सुरक्षित रहेगा ।

सूरज उगता और गर्मी उगल कर चला जाता । चाँद आता और चाँदनी बिखेर डूब चलता । दिन आते तो चहल-पहल मच जाती । रातें आती तो सपने जग पड़ते ।

समय तूफानी गति से निकल जाता है और इन्सान की आँखें देखकर भी नहीं देखती।

कई महीने बीत चुके।

याद की पीड़ा ढल चली है। गुजरे लोगों की सूरत लोग भूलते जा रहे हैं। वेदना के आँसू अब पलक के कोरों पर नहीं उतराते।

कविता का गम बहुत कुछ दूर हो चुका है। ललित तभी से रानी साहिबा के पास रहता है। उससे निश्चिन्त होकर अब कविता और भी असावधान हो गई है।

चंचल ने अब ललित की जान लेने का विचार त्याग दिया है। रानी साहिबा के महल में उसकी एक भी चाल नहीं चल सकती। इधर रानी साहिबा चञ्चल से कुछ होशियार भी रहने लगी हैं, जिसका आभास चञ्चल को उनकी बातों से अक्सर मिलता है। वह भी जल्दवाजी करके कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहता, जिससे रानी साहिबा के सन्देह का अंकुर पनप कर वृक्ष का रूप धारण करे।

एनी चंचल से दूर हो गई है। कई बार वह उससे मिलने उसके घर पर भी गया, परन्तु उसकी माँ ने उससे मिलने न दिया।

चंचल उससे अब मिलना भी नहीं चाहता। उसकी आँखों की सारी प्यास अब कविता की ओर केन्द्रित हो गई है। कविता यदि उस पर सद्य हो जाती है, तो उसकी वासना को एक आकर्षक आधार मिल जाता है और रियासत भी उसकी होकर रह जाती है।

आजकल वह कविता का बहुत ख्याल रखता है। दिन में कई-कई बार वह उससे मिल आता है। कभी-कभी रात के दस

बजे तक वह अपनी भाभी के पास बैठा-बैठा मीठी-मीठी बातें किया करता है।

वह उसे हँसाने की कोशिश करता है। ऐसा भाव प्रदर्शित करता है, जैसे उसके एक-एक सुख के पीछे वह बेकरार है उसकी जरा-सी फीकी हँसी के लिये वह पागल है।

कविता सब कुछ समझती है।

चञ्चल की सारी खुशामद उसे भाती नहीं, फिर भी वह अपने पति के छोटे भाई के साथ उपेक्षा का व्यवहार नहीं कर पाती कभी।

और इसीलिए चञ्चल की आशा उत्तरोत्तर बलवती होती जा रही है। वह समझ रहा है कि धीरे-धीरे बुलबुल उसके जाल में आ फँसेगी।

रात सयानी होती जा रही थी। काली चादर चारों ओर खूब तनी थी।

कविता सोने की तैयारी कर रही थी। पलंग पर लेटी-लेटी नौद लाने के लिये कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ रही थी।

तभी—

“भाभी !....सो गई क्या तुम ?....”

कविता ने सर उठाया, तो चञ्चल को भीतर आते देखा। चौंक पड़ी वह।

इतनी रात को उसके कमरे में चञ्चल को देखकर कोई क्या समझेगा।

चञ्चल ने धीरे से दरवाजा बन्द कर दिया, फिर आकर कविता के पास पलंग पर बैठ गया।

कविता उठ खड़ी हुई। बोली—“इतनी रात को कैसे आये कुँवर ?....कोई देखे तो क्या कहे ?....”

“कहेगा क्या भाभी ?” चञ्चल हँसा—“तुमसे मेरा अटूट सम्बन्ध है। भाभी के पास आने के लिये मुझे दिन और रात की पाबन्दी नहीं....तुम उठकर खड़ी क्यों हो गई ?....दरवाजे की सिटकिनी लगा दूँ क्या भीतर से ?...”

और कहता-कहता चञ्चल उठकर दरवाजे की सिटकिनी भी बन्द कर आया।

कविता का माथा ठनका, फिर भी वह संयत स्वर में बोली—“दरवाजा क्यों बन्द कर दिया तुमने ?....”

“ताकि किसी के आने का डर न रहे...” बोला चञ्चल एकटक कविता का सौन्दर्य पीता हुआ।

“कोई काम है क्या छोटे कुँवर ?...” कविता ने पूछा।

“नहीं तो ! शाम को आज तुम्हारे पास नहीं आ सका था, सो तबियत बेचैन थी भाभी ! इस समय अवकाश मिलते ही दौड़ा आया हूँ...न कहोगी चञ्चल के दिल को...बेचैन रहता है तुम्हें देखे बिना...ऐसे अब तक चलेगा भाभी ?...”

“कैसे ?....”

“तड़पते-तड़पते....”

“कौन तड़प रहा है ?...”

“तुम भाभी, और कौन ?...तुम्हारा यह जोगन का रूप मुझसे देखा नहीं जाता...”

“तो आँखें बन्द कर लो अपनी...”

धीरे-धीरे कविता आलमारी के पास पहुँच गई थी, पीछे हटते-हटते।

“तुम मजाक करती हो भाभी !....इसीलिये तो मैं तड़प रहा हूँ तुम्हारे लिये...इधर आकर बैठो न ! भैया के गम में कब तक घुलती रहोगी ?... यह चंचल भी तुम्हें कम प्यार नहीं करता।”

“मैं जानती हूँ कुँवर ! तुम मुझे बहुत चाहते हो....अगर तुम्हारी आँखों में बीघे-दो-बीघे जगह होती तो मेरे रहने के लिये वहाँ एक बँगला तुम बनवा देते...” कविता बनावटी मुस्कराहट होठों पर लाकर बोली ।

“बड़ी वैसी हो भाभी ! हर बात में मजाक !...एक बात कहूँ, बुरा न मानना...दिल का दर्द सुना रहा हूँ तुम्हें...सुन कर ठुकरा न देना... रात-रात भर नींद नहीं आती....”

“डाक्टर दास के पास जाओ....मेरे पास नींद की कौन-सी दवा रखी है ?—”

चंचल उठता हुआ बोला—“मेरी दवा तो तुम्हारे ही पास है भाभी !....एक खुराक दे दो तो नींद आ जाय, सारा दर्द दूर हो जाय....”

“एक खुराक नहीं, मैं तो तीन खुराक दे दूँ, मगर दे सकोगे बारह हजार !....” कविता ने गम्भीर स्वर में कहा ।

हाथ पीछे करके उसने आलमारी में रखी पिस्तौल उठा ली थी, धीरे से ।

बारह हजार की बात सुनते ही चंचल का चेहरा पीला पड़ गया । रुकता हुआ बोला—“क्या कहती हो भाभी ?...”

“घबड़ाओ मत कुँवर ! डाक्टर दास ने तुम्हारे साथ दगा नहीं की है...यह भेद तो मुझे वारिस के जरिये मालूम हुआ है...मैं सब कुछ जानती हूँ चंचल !....पति को खोकर भी मैं खामोश हूँ, केवल उस देवी का ख्याल कर जिसने तुम जैसे राक्षस को जन्म दिया । तुम्हारी चालवाजी की बातें सुनकर रानी माँ आत्महत्या कर लेंगी...”

कहते-कहते कविता का स्वर कठोर हो चला था । काँपते हाथों में पीठ पीछे पिस्तौल दबी थी चुपचाप ।

अपने लिये राजस का सम्बोधन सुनकर चंचल की भवें तन गईं। क्रूर हँसी हँस कर बोला वह—“तो तुम सब कुछ जानती हो भाभी!....और माँ से कहने का साहस तुममें है नहीं, यह भी अच्छा ही है मेरे लिए...मुझे कुछ छिपाना नहीं है तुमसे, इस समय मेरा रास्ता साफ है। मैं ही राजा हूँ। मुझे पसन्द कर लो तो तुम भी रानी बनकर ऐश करोगी भाभी!....”

“मुझे ऐश नहीं करना है...भला चाहो तो चले जाओ यहाँ से...” कविता जोर से बोली।

“मैं जाने नहीं आया हूँ भाभी!...तुम्हें अपनी बनाने आया, हूँ”—कह कर चंचल झपटा कविता की ओर।

“दूर खड़े हो जाओ चंचल!...ठीक नहीं होगा, मेरा बदन छुओगे तो...” चिल्लाई कविता।

“धीरे-धीरे बोलो भाभी! चीख सुनकर नौकर-चाकर इकट्ठे हो जायेंगे, फिर वह बात जिसे केवल हम दोनों को ही जानना चाहिये, सभी की जवान पर होगी....”

चंचल ने कविता का हाथ पकड़ना चाहा।

तभी चमक कर एक काली-सी पिस्तौल बीच में आ तनी।

चौंक कर चंचल दो कदम पीछे हट गया। फिर हँसता हुआ बोला—“पिस्तौल का मुझे डर नहीं....शौक से मेरी जान ले लो तुम....मगर मरते दम तक मेरी जवान यही रटेगी कि भाभी गैरों से रात में मिलती थीं, मैंने देख लिया तो मेरी जान ले ली...फिर तो मरते आदमी की बात को कौन भूठ समझेगा...माँ के सामने तुम कौन-सा मुख दिखाओगी? वफादार वारिस तुम पर थूक देगा घृणा से...चलाओ न गोली?...पिस्तौल की नली नीचे झुकी जा रही है भाभी! हाथ काँप रहा है तुम्हारा...”

और कविता के कम्पित हाथों से छूट कर जा गिरी पिस्तौल जमीन पर ।

“चिल्लाना चाहो तो चिल्लाओ....लोग आकर देखें कि एक विधवा अपने देवर के साथ इतनी रात को बन्द कमरे में क्या कर रही है ? मैं उनसे सब कुछ बता दूँगा भाभी ! तुमने हमको बुलाया था अपनी हसरत मिटाने के लिये, इसे सुन कर लोग बड़े खुश होंगे । माँ तो तुम्हें देवी ही समझेंगी...सर नीचा किये क्या सोच रही हो रानी ! करना हो जो कुछ, जल्दी कर डालो, वरना मैं आगे बढ़ता हूँ....”

कविता ने अपना सर पकड़ लिया और बदहवास सी होकर दीवार से लग गई ।

शिकार को विवश देखकर शिकारी की आँखें चमक उठीं ।

भुक कर जमीन पर पड़ी हुई पिस्तौल उठा ली चंचल ने और उसे ले जाकर आलमारी में रख दिया ।

फिर कविता के शरीर को अपने हाथों में बाँधता हुआ बोला—“देखा रानी ! चञ्चल कभी हारता नहीं...शेर के पास कोई हथियार नहीं होता, केवल अपनी ताकत होती है !... आओ, पलंग पर बैठो...”

ढोर में बँधी पतंग सी कविता खिंची चली गई पलंग पर ।

आज वह लुटी हुई नारी और लुटेगी । सब कुछ खोकर, उसके शरीर पर जो थोड़ा-सा गोरा चाम बच रहा है, उस पर भी अब धब्बा लग जायगा, कलंक का, बदनामी का, चरित्र-हीनता का ।

कविता की आँखें बेहोश हो चलीं ।

“कभी-कभी तो तुम दिन में दस-बारह बार दिखाई पड़ोगे और कभी दस-दस दिन तक गायब रहोगे...कुछ पता ही नहीं लगता मुझे कि तुम कहाँ लुप्त हो जाते हो....” चञ्चल ने जमुना से कहा।

इस समय वह अपने महल के एक कमरे में बैठा हुआ था, और उसके सामने खड़ा था जमुना।

“क्या करूँ छोटे कुँवर !....” बैठता हुआ जमुना बोला।

“करोगे क्या ?...दस दिन के बाद आज तुम्हारी काली सूरत दिखाई पड़ी है....ऐसा ही है तो तुम मेरा साथ छोड़ दो....”

“अब तो मौत ही साथ छुड़ायेगी छोटे मालिक !...आप सुनिये तो...बातैसी है कि मुझे बुखार आ गया था, ऐसा कि आज पूरे दस दिनों के बाद चारपाई छूटी है....मैं खुद परेशान था आप से मिलने को...इधर का समाचार कुछ बताइये। बहुत ढोरे डाल रहे थे, पतंग कटी या नहीं ?

“कटते-कटते फिर उड़ गई जमुना ! क्या कहूँ अपनी किस्मत को ?....” ठंडी साँस लेकर बोला चञ्चल।

“बड़ी ठंडी साँसे भर रहे हैं....बात क्या है ?” जमुना ने पूछा।

“क्या बताऊँ ? उस रात भाभी को फाँस चुका था, सिर्फ दस मिनट की देर थी कि माँ पहुँच गईं...”

“रानी साहिबा ?...बाप रे बाप !....उतनी रात को वे वहाँ कैसे पहुँच गईं ?....”

“पता नहीं” चञ्चल बोला—“दरवाजा बन्द पाकर उन्होंने खटखटाया मैंने खोला....माँ का चेहरा गम्भीर हो गया था.... मैं तो डर गया था। मगर माँ ने मुझसे कुछ नहीं कहा। भाभी से बोली—“ललित सो नहीं रहा है, बड़ा परेशान करता है बहू !....इसके बाद मैं वहाँ से चला आया....”

“फिर ?....”

“दूसरे दिन मुझसे माँ ने पूछा कि मैं भाभी के कमरे में उतनी रात बीते क्यों गया था, तो मैंने कह दिया भाभी ने बुलाया था...भाभी को माँ की नजरों से गिराना है न इसीलिये मैंने ऐसा कहा।”

“रानी साहिबा सब कुछ जान तो नहीं गईं ?....बन्द कमरे के बाहर खड़ी-खड़ी सुनती न रही हों सब कुछ ? और मौका देखकर खटखटा दिया हो दरवाजा....”

“शक तो मुझे भी है जमुना ! कि माँ मेरी चालों को बहुत कुछ समझ गई हैं, परन्तु उनकी आकृति देखकर मुझे विश्वास नहीं होता....जान लेने पर वे अब तक चुप न रहतीं....मगर भाभी तो सभी कुछ जानती हैं....”

“तो क्या उनसे कुछ कम डर है ?”

“नहीं माँ से मेरी शियाकत करने का उसमें साहस नहीं, इसका मुझे पक्का विश्वास है। जो स्त्री पति की मौत पर भी अपनी जवान बन्द रख सकती है, वह छोटी-छोटी शिकायत लेकर माँ के सामने नहीं जायगी...”

“आगे का इरादा ?....”

“मैंने चाल चल दी है” बोला चञ्चल—“भाभी से मुझे अब कोई आशा नहीं। जोर-जबर्दस्ती से चाहे वे दो क्षण को आत्म समर्पण कर दें, मगर उन्हें हमेशा के लिये अपनी बनाना एक

सपना है....ऐसी चाल फेंकी है जमुना, कि एक ही बार में भाभी और ललित दोनों का सफाया !....थोड़ी-सी हिम्मत कर जाओ, तब देखो कि क्या गुल खिलता है...”

“अपनी चाल मुझे समझाइये...हिम्मत की कमी जमुना में नहीं...” उत्सुक होकर बोला जमुना, भयानक मुख पर हँसी लाकर।

“सुनो....”

जमुना के कान में न जाने क्या कहता रहा चञ्चल थोड़ी देर तक। जमुना भी बड़े गौर से सुनता रहा।

फिर बोला—“पक्की चाल है छोटे कुँवर ! इस बार तो जमुना जीत कर ही लौटेगा...”

“मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता...माँ को सन्देह हो जायगा। सारी जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है। वारिस साथ रहेगा। होशियार रहना...जीत कर लौटेंगे तो भरपूर इनाम के लिये कोट के सभी जेब खाली किये आना....”

“आप विश्वास रखें छोटे कुँवर !....”

“तो तुम जाओ अब...मैं भी जरा माँ से मिल लूँ...देखूँ उधर का क्या हाल है....”

जमुना चला गया।

चञ्चल कपड़े बदलकर रानी साहिबा के महल की ओर बढ़ा। अपने कमरे में रानी साहिबा पलंग पर लेटी थीं। ललित इधर-उधर दौड़कर खेल रहा था।

तभी तेजी के साथ कविता वहाँ आ पड़ी।

देखकर रानी साहिबा बोलीं—“आओ बहू ! ललित को देखने आयी हो या मेरा पाँव देखने ?....पूछो मत बहू !....कल से ही गठिया तेज हो गई है। रात भर दर्द से परेशान रही....”

इस समय तो कुछ आराम है, दर्द उठता है तो हिलना-डुलना मुश्किल हो जाता है....बैठो कविता !....”

कविता बैठ गई। रानी साहिबा के मुख की ओर उसने देखा, तो आश्चर्यचकित रह गई।

चेहरे पर गम्भीरता के पीछे छिपी हुई गहरी वेदना की स्पष्ट छाया झलक रही थी। लगता था, जैसे कोई गुप्त चिन्ता, उन्हें दिन-रात सताया करती है। पीड़ा से वे घुलती जा रही हैं।

“माता जी ! तबियत तो आप की ठीक रहती है न ?....” पूछा कविता ने।

तो रानी साहिबा करुण स्वर में बोली—“बूढ़ी तबियत का क्या पूछना बेटी ?....साँस चलती चले, इतना ही बहुत है.... एक बात बता....चञ्चल इधर फिर तेरे पास गया था कभी ?...”

“नहीं तो...” चौंक कर कविता बोली—“क्यों ?....”

“ऐसे ही पूछ बैठी...मैं जानती हूँ कि मेरी बहू लक्ष्मी है। वह कभी कोई ऐसा काम नहीं करेगी, जिससे राजा साहेब के खानदान में धक्का लगे....मगर चञ्चल को क्या कहूँ कविता ?.... इतना बड़ा हो गया, फिर भी समझ नहीं आई उसे। कोई गलती की हो उसने तो माफ करना बेटी ! इस बूढ़ी का खयाल करके।”

“आप क्या कहती हैं माता जी ?....छोटे कुँवर से मुझे कोई शिकायत नहीं...उन्होंने कभी कोई ऐसा काम नहीं किया, जिससे मुझे दुख पहुँचे...”

“मैं सब समझती हूँ कुँवरानी ! तू मुझे समझाने की कोशिश मत कर...दुनिया देख-देख बूढ़ी हो चली, मगर नारी की कोख से साँप होते नहीं देखा....”

कविता चौंककर रानी साहिबा का मुख देखने लगी।

तो क्या रानी साहिबा भी कुछ-कुछ जानती हैं ?

“वह तेरे हाथ में कैसा कागज है कविता ?....कोई चिट्ठी है क्या ?....”

“मैं इसीलिए तो आई थी, मगर भूलती जा रही थी....” कहकर कविता ने वह कागज रानी साहिबा के आगे रख दिया।

वे उसे पढ़ने लगीं।

“तेरे मैके का पत्र है यह तो बहू !....तबियत ज्यादा खराब है तेरे पिता की....पता नहीं कब चल बसें...तुम्हें बुलाया है, साथ ही ललित को भी...यह किसकी लिखी चिट्ठी है कविता ?”

“मुनीम जी ने लिखी होगी...”

“बूढ़े हो गये तेरे पिता ! कौन जाने इस बीमारी में क्या हो ?...कल से ही बोल बन्द है...तुम्हें जाना ही चाहिये बेटी !”

“मैंने तैयारी कर ली है माताजी ! बाहर कार खड़ी है... चारिस भी जा रहा है...ललित को लेने आई हूँ...”

“ललित को तो यहीं छोड़ जा कविता ! अब तो इसके बिना मेरा जी ही नहीं लगता...गठिया आ गई, नहीं तो मैं खुद चलती तेरे साथ...” बोलीं रानी साहिबा।

“कहीं पिताजी को कुछ हो गया तो ललित को देखने की लालसा अधूरी ही रह जायगी...मैं इसे कल ही भेज दूँगी माताजी !...”

नहीं-नहीं अकेले मत भेजना इसे नौकरों के साथ...वहाँ होशियारी से रहना और उसे अपने साथ ही लेकर आना... दर्द कुछ कम हुआ तो मैं भी कल परसों तक आकर देख लूँगी... ओ ललित ! जा माँ के साथ...”

खेलता हुआ ललित रानी साहिबा के पास आकर बोला—
“लानी माँ ! तुम हमको अपने महल छे निकाल लही हो ?...”

“नहीं बेटा ! जाकर अपने नाना को देख आ... मैं भी कल आऊँगी वहाँ...”

“नाना मुझे लकली का घोला देंगे लानी माँ ?”

“हाँ... अब जा राजा बेटा !...”

कुँवरानी ने ललित को गोद में उठा लिया ।

तभी आ पहुँचा चञ्चल ।

कविता मुँह फेर कर बाहर चली गई । चंचल की ओर देखा भी नहीं उसने ।

मगर रानी साहिबा ने इस बात को बड़े गौर से देखा ।

बाहर कार खड़ी थी, छोटी, मगर तूफान-सी चलनेवाली । ड्राइवर काफी हट्टा-कट्टा था और उसी की बगल में बन्दूक लिये बैठा था वारिस, तन्दुरुस्त बरगद जैसा ।

कविता को देख कर ड्राइवर ने दरवाजा खोल दिया । वह ललित के साथ पिछली सीट पर जा बैठी ।

ड्राइवर ने कार स्टार्ट की तो वारिस उससे बोला ।—“देखो भाई शंकर ! कार खूब तेज ले चलो... दुश्मन हमारे हजार हैं... खुदा कसम, जाने क्यों हाथ काँप रहा है मेरा...”

कार भाग चली । छोटा-सा शहर शीघ्र ही खत्म हो गया, सड़क हरे-भरे खेतों से घिरी गुजरने लगी । कभी-कभी दूर पर गाँवों की झोपड़ियों की दीवारें दिखाई पड़ जाती थीं ।

कार की रफ्तार चालीस मील थी ।

घंटे भर बाद ही सड़क के दोनों ओर छोटी-छोटी खुशनुमा पहाड़ियाँ दौड़ने लगीं । कोसों तक कहीं गाँव-गिराँव का नाम नहीं । बड़े-बड़े दैत्याकार पेड़ों के अतिरिक्त गुजरनेवाले किसी आदमी की वृ तक नहीं ।

वारिस चौकन्ना होकर चारों ओर देख रहा था । मंजिल

का यही हिस्सा सबसे सुनसान और खतरनाक था—और वारिस के ऊपर इस समय दो कीमती जानों का भार था।

एकाएक वारिस चौंक पड़ा।

तेज स्वर में ड्राइवर से बोला—“भाई शंकर ! खुदा कसम, कार की चाल कम कर दो...फौरन !...”

वारिस के घबड़ाये स्वर ने कविता को चैतन्य कर दिया।

“क्या है वारिस ?...” पूछा उसने

“होशियार हो रहिये हजूर !....खुदा कसम, वारिस का कलेजा बेकार नहीं धड़कता....सामने देखिये...सौ हाथ की दूरी पर...किसी बदमाश ने हमारी कार को रोकने के लिये सड़क पर इस पार से उस पार तक एक मोटा रस्सा बाँध दिया है....”

ड्राइवर ने भी शायद देख लिया था। उसने कार की रफ्तार कम कर दी। मगर तेज जानेवाली कार रुकते-रुकते भी सड़क पर बँधे हुए रस्से से दस हाथ की दूरी तक पहुँच गई।

उसी समय वारिस चिल्लाया—“कार घुमा कर पीछे दौड़ा ले चलो....यहाँ एक मिनट भी न रुको....”

ड्राइवर ने कार घुमाई।

तभी न जाने कहाँ से निकल कर सात-आठ आदमियों ने कार को चारों ओर से घेर लिया।

वारिस बन्दूक रख कर नीचे कूद पड़ा। सामने के दो आदमियों को दोनों हाथों के घूँसे जमा कर उसने गिरा दिया।

चिल्ला कर बोला—“शंकर ! तुम भी आओ जल्दी....इन बदमाशों से निपटना है....खून को पानी बना कर बहा दो जवान !....”

वारिस चिल्ला भी रहा था और प्रबल वेग से बदमाशों से

लड़ भी रहा था। जो भी उस भीमकाय पहलवान के सामने पड़ता, वह जमीन सूँघने लगता था।

कार स्टार्ट छोड़कर लम्बा-चौड़ा शंकर भी क्रूद पड़ा। जम कर लड़ाई होने लगी।

“हुजूर ! आप पिस्तौल निकाल कर इन शैतानों को दागिये—” वारिस गरज कर बोला—“खुदा कसम ! वारिस की जान जब तक बाकी है, कोई मर्द का बच्चा आपको छू तक नहीं सकता...”

कुँवरानी इस अचानक आक्रमण से घबड़ा उठी थी। उसे स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि अपने वीमार पिता को देखने जाते समय उस पर यह विपत्ति आयेगी।

सभी आक्रमणकारी भिन्न-भिन्न पोशाकों से अपना मुँह और शरीर छिपाये हुए थे, जिससे उनका पहचानना कठिन था।

वारिस की पुकार पर कुँवरानी सजग हुई।

उसने अपनी पिस्तौल उठाई।

धाय !....

चीखकर एक बदमाश लोट गया।

वारिस के मुँह से खुशी की एक चीख निकली—“एक-एक को ताक-ताक कर हुजूर !....जवानी कसम, इन कुत्तों की खाल खींच लूँगा....”

बदमाशों का सरदार थोड़ी दूर पर खड़ा चुपचाप इस भयानक लड़ाई का दृश्य देख रहा था।

कुँवरानी की गोली से अब तक दो बदमाश बेकार हो चुके थे।

सरदार ने धीरे से पिस्तौल निकाली और कविता की ओर निशाना ठीक किया।

तभी लड़ते-लड़ते वारिस की दृष्टि उधर जा पड़ी। चिल्लाया-
“हुजूर ! सर नीचा कीजिये...गोली...”

चिल्लाता हुआ वारिस कूदकर सरदार के सर पर जा पहुँचा।
गोली छोड़ने के पहले ही पिस्तौल जमीन पर जा गिरी।
सरदार का मुँह एक घूँसे से लहलुहान हो गया।

“ये लोग आपकी जान लेना चाहते हैं हुजूर !”—वारिस पुनः
तड़पा—“आप सीट के नीचे छिप जाइये...ललित को भी...”

इस समय वारिस की बहादुरी देखते ही बनती थी। जान
की बाजी लगाकर नमक अदा करनेवाला वह नौकर साक्षात्
काल बन गया था। जिस्म की एक-एक साँस रहते तक वह
कविता की जान और आन पर घेरा ढाले रहेगा। किसकी
मजाल कि उसके पास पहुँच सके।

उधर शंकर भी कम खतरनाक नहीं था।

मालिक के लिये जी-जान से लड़नेवाले इन दो बहादुरों के
आगे किराये पर लाये हुये गुण्डे शिथिल पड़ते जा रहे थे।

“शंकर ! तुम कार ठीक रखो...मैं आया....”

शंकर ! कार पर आ बैठा। मशीन पहले से ही चल रही थी।
वारिस ने तीन बदमाशों को साथ ही पटका और कूदकर
कार पर चढ़ गया।

कार में गति आई।

और देखते-देखते वह काफी दूर निकल गई।

“अब सीट पर बैठ जाइये हुजूर !....” वारिस ने कहा।

कविता नीचे से उठकर सीट पर बैठ गई। ललित को भी
उसने गोद में बिठा लिया।

“किधर चल रहे हो वारिस ?....” पूछा उसने। इतनी
घबड़ा गई थी वह कि दिशा का ज्ञान भी भूल बैठी थी।

“महल को लौट रहा हूँ हुजूर !...” वारिस ने कहा—
 “खुदा कसम आगे जाने में बेहद खतरा है...यह छोटे कुँवर
 की कोई चाल थी सरकार !...मेरा दिल कह रहा है कि वह
 खत नकली था...आपके वालिद हुजूर अभी लाख बरस जिन्दा
 रहेंगे....सीधे महल पहुँच कर कार रुकेगी अब तो....और
 तेज शंकर !...यह बियावान पीछे छूट जाय तो आहिस्ता
 चलना...”

कार की तेजी बढ़ी। नीचे भागती हुई जमीन एक भूरे परदे
 सी नजर आने लगी।

“हमारा पीछा किया जा रहा है....कार की आवाज...”
 वारिस ने पीछे घूम कर देखा—“कार ही तो है...बड़ी तेज
 आ रही है....वे ही बदमाश सवार हैं...शंकर ! और तेज...”

तभी पिछली कार से धाँय की आवाज आई और एक गोली
 वारिस के सर पर से दन्नाती हुई निकल गई।

“हुजूर ! पिस्तौल मुझे दीजिये...आप सीट पर लेट जाइये....
 शंकर ! खुदा कसम वे लाग पास आते जा रहे हैं....”
 कविता ललित को लेकर सीट पर लेट गई। वारिस पिस्तौल
 ताने उठ खड़ा हुआ।

धाँय !....

वारिस की गोली छूटी।

और पिछली मोटर पर एक जोरदार धड़ाका हुआ।

“वह मारा !....” वारिस खुशी से चीख पड़ा—“उनकी
 पहिया पंचर कर दी मैंने....अब भाग चलो शंकर !...दो-तीन
 कोस रह गया है शहर !...शुक्र है तेरा अस्लाह ! वारिस की
 इज्जत तूने रख ली...अब ठीक से बैठ जाइये हुजूर !....”

कविता पुनः उठ कर बैठ गई।

पन्द्रह मिनट बाद ही सड़क कुछ चौड़ी मिली, मगर धूल से भरी। आते जाते दो-एक मुसाफिर भी दीखने लगे।

अधेड़ उम्र का एक सौदागर टट्टू पर बहुत सा सामान लादे पैदल ही चला आ रहा था। बेचारा तेज आती हुई कार का धक्का खाते-खाते बचा।

शंकर अब भी कार को तेज लिये जा रहा था।

“वह देखिए हजूर !...” वारिस बोला—“आगे सड़क के किनारे...कैसी अजीब पोशाकें हैं उनकी ?...खुदा कसम ! साँप की खाल पहने हैं....एक छोकरी है, एक जवान...दोनों इसी तरफ देख रहे हैं...”

कहते-कहते वारिस रुक गया और गौर से उस ओर देखने लगा, जहाँ सौ गज आगे सड़क के किनारे एक युवती और एक युवक खड़े हुए कार की ओर आश्चर्य के साथ देख रहे थे। दोनों के बदन पर विचित्र ढंग की पोशाकें थीं।

एकाएक वारिस चौंक कर बोला—“हजूर !....उस जवान को आप देख रही हैं, जो उस लड़की के बगल में खड़ा है ?....खुदा कसम ! वारिस की आँखों ने कभी इतना बड़ा धोखा नहीं खाया था....वहीं हैं सरकार !...बिल्कुल वही...अपने बड़े कुँवर साहिब !....या अल्लाह ! मेरी आँखों को क्या हो गया है आज ?....कहाँ अजगर का खौफनाक जबड़ा, कहाँ इस जंगली लड़की का साथ....”

कविता भी उसी ओर देख रही थी।

तभी कार उस स्थान से होकर गुजरी, जहाँ वे दोनों खड़े थे ! वारिस के मुख से खुशी की एक चीख निकली।

कविता के मुख से सुनाई पड़ा गम्भीर स्वर—“शंकर ! कार रोको...”

थोड़ी दूर आगे जाकर कार रुकी ।

“पीछे लौटाओ....” कविता ने आज्ञा दी—“तुम वारिस अपने होश दुरुस्त कर रखो.... ज्यादा चिल्लाओ मत....”

मगर सच बात तो यह थी कि उस विचित्र लड़की के साथ सड़क के किनारे खड़े युवक को एक नजर देख कर ही कविता का कलेजा धड़कने लगा था ।

हे ईश्वर ! आज यह क्या गुल खिलना चाहता है ?

पीछे घिसटती हुई कार उस स्थान पर आ खड़ी हुई, जहाँ वे दोनों खड़े थे ।

कविता और वारिस गौर से उस युवक को देखने लगे ।

युवक भी इन्हीं की ओर देख रहा था, मगर इन्हें पहचानने का कोई भाव उसके चेहरे पर नहीं था ।

अर्द्ध-पागल-सा वह इन्हें घूर रहा था ।

कविता परेशान हो उठी । जिससे कभी मिलने की आशा न हो, उसे सामने देख कर कौन होश में रह सकेगा ?

मगर कविता के जागरण एवं सपनों में, उसकी आँखों पर तिरनेवाली यह प्यारी-प्यारी सूरत उसके पास होकर भी उसे पहचानती क्यों नहीं ?

“वारिस ! जाकर पूछो...” उसने आज्ञा दी ।

वारिस भी अब तक सम्हल चुका था । कार से उतर कर वह उधर को चल पड़ा ।

उसे आते देखकर उस युवती ने युवक को अपने पीछे कर लिया ।

वारिस कुछ बातें करके कविता के पास लौट आया ।

बोला—“इनका दिमाग फिर गया है...देखती नहीं, सूरत कैसी पागलों जैसी हो रही है ?...ये किसी को पहचान नहीं पा रहे हैं...”

“हैं तो वही न ?....” कविता ने पूछा ।

इस समय आवेग से उसका चेहरा लाल हो रहा था ।

“बिल्कुल वही हैं सरकार !...खुदा कसम, जरा भी फरक नहीं...नाक पर का छोटा-सा तिल आप देख लीजिये...”

“तो ले चलो इन्हें”—कविता ने कहा—“वह लड़की रोके तो धक्का दे दो...”

वारिस घूम पड़ा । पास जाकर उसने युवक का हाथ पकड़ा और उसे कार की ओर घसीट ले चला ।

युवक छटपटा रहा था । बड़ी कठिनाई से वारिस ने उसे कार के अन्दर ठकेला और स्वयं उसे पकड़ कर कविता के पास बैठ गया ।

तभी वह युवती ‘परदेसी-परदेसी’ चिल्लाती हुई दौड़ी आई, तो वारिस ने उसे पीछे ठकेल दिया ।

कार भाग चली वेग से ।

“मुझे छोड़ दो...मुझे जाने दो...मेरी मैना ! वह युवक चिल्ला रहा था और वारिस के हाथों से छूटने के लिये जोर मार रहा था ।

वारिस के हाथों में कई जगह उसने अपने दाँत लगा दिये थे ।

“हुजूर ! बड़े कुँवर साहिब एकदम पागल हो गये हैं”—वारिस बोला—“मुझे इनके हाथ-पैर बाँधने और मुँह में कपड़ा ठूँसने की इजाजत दें...गुस्ताखी माफ हो सरकार ! इनको कब्जे में करना मुश्किल हो रहा है...”

कविता बेहोश-सी हो रही थी । उसने इशारों से अपनी आज्ञा व्यक्त की ।

कार खड़ी कर दी गई । शंकर और वारिस ने मिलकर

उस युवक के हाथ-पैर कस दिये और मुँह में कपड़ा डाल आवाज बन्द कर दी।

कार पुनः चल पड़ी।

कविता की आँखों से आँसू बहने लगे—एक आँख से अचल को पा लेने की खुशी के, और दूसरी आँख से उसका दिमाग खराब हो जाने के गम के।

“या खुदा यह सब कैसे हो गया?...हुजूर कुँवर साहिब अजगर के पेट में जाकर भी कैसे बच गये?...इनका दिमाग कैसे खराब हो गया?...ॐ मेरे अल्लाह ! तू सबको बुलाकर फिर वापस भेज दिया करे ऐसे ही...अब क्या होगा हुजूर ! कुँवर साहिब का दिमाग कैसे ठीक होगा?...”

“सब ठीक हो जायगा वारिस !”—प्रगाढ़ चिन्ता में निमग्न कविता बोली।

“इन्हें पा लिया है सरकार ! मगर खुदा कसम इनके खो जाने का बेहद डर है...ओटे कुँवर को पता लगा तो आफत मचा देंगे....”

“मैंने सोच लिया है वारिस !”—बोली कविता....“जब तक इनका दिमाग ठीक नहीं होता, मैं इन्हें अपने महल में छिपाकर रखूँगी। डाक्टर दास विश्वासी आदमी हैं। अपनी बीमारी के वधाने उन्हें बुलाकर इनका इलाज कराऊँगी...देखूँ, क्या फल होता है...”

ॐ अचल अजगर के पेट से कैसे बचा, कई महीनों तक वह कहाँ था, इस बीच उस पर क्या-क्या विपत्तियाँ आईं, उसका दिमाग कैसे खराब हुआ, उसके साथ की लड़की कौन थी—आदि बातें ‘परदेसी’ के प्रथम खण्ड में दी जा चुकी हैं।

शहर आ गया था। शाम हो चली थी।

चहारदिवारी के अन्दर कार घुसी और कविता के महल के सामने आ रुकी।

“तुम इन्हें पीठ पर लाद कर चुपके से मेरे कमरे में पहुँचाओ”—कविता ने वारिस से कहा—“कोई देखने न पाये... मैं ललित को रानी माँ के पास छोड़कर अभी आती हूँ....तब तक तुम इनके पास रहना....”

उसने ललित को गोद में उठा लिया और रानी साहिबा के महल की ओर चल पड़ी।

रानी साहिबा लेटी हुई चञ्चल से कुछ बातें कर रही थी। कविता को देखकर चौंक पड़ी। बोली—“बहू! तू लौट आई?...”

“बीच से ही वापस आना पड़ा माँ!....वह खबर भूठी थी...”

कविता ने ललित को रानी साहिबा के पास पलंग पर बिठा दिया।

“भूठी खबर थी?...क्या कहती है बहू?...”

“रास्ते में सात-आठ बदमाशों ने हम पर हमला किया था...वारिस जान पर खेल गया...किसी तरह हम लोग बच कर निकल आये...”

“हूँ...” कहकर रानी साहिबा गम्भीर हो कुछ सोचने लगी। चञ्चल तो कविता को देखते ही मुर्दा-सा बन गया था। सोच विचार कर चली हुई उसकी यह चाल भी असफल रही।

“तू जा बहू!”—रानी साहिबा बोली—“मुझे कुछ न कुछ अब करना ही पड़ेगा...बदमाशों की बदमाशी बढ़ती ही जा रही है....मैं सुबह वारिस को बुलाकर पूछूँगी...”

कविता को भी जल्दी थी। वह उठकर चल पड़ी अपने महल की ओर।

थोड़ी देर बाद चञ्चल भी चला गया।

ललित को गोद में लिये रानी साहिबा कुछ सोचती रही।
चेहरे की बूढ़ी नसें कभी-कभी बेहद फूल उठती थीं। वेदना की
छाया आँखों में आँसू बन दो-चार बूँदों में ढल जाती थी।

कोई महान चिन्ता थी रानी साहिबा को। कोई दुर्दमनीय
कष्ट था, जो इस बुढ़ापे में इन्हें दुख दे रहा था, उन्हें बेचैन
किये जा रहा था।

दूसरे दिन शाम को—

चञ्चल अपने कमरे में बेचैनी से टहल रहा है। कल, जब
से उसने कविता और ललित को अपने जाल से बचकर निकल
आते देखा है, क्रोध से वह जल रहा है।

उसे नींद नहीं आती, खाना नहीं अच्छा लगता।

जमुना भी उससे फिर नहीं मिला। मरा है अब तक या
जीता, कुछ पता नहीं।

चञ्चल ने कल रात से आज शाम तक पीते-पीते दों बोतलें
खत्म कर दी हैं। नशे से भरा हुआ दिमाग और भी उड़ता जा
रहा है।

तभी महल के बाहर किसी कार के रुकने की हलकी आवाज
आई और थोड़ी ही देर बाद परेशानी की मुद्रा धारण किये हुए
जमुना अन्दर आया।

उसे देखकर चञ्चल का क्रोध और भी उद्दीप्त हो उठा। लपक
कर वह उसके पास आया। लाल-लाल आँखों से उसे घूरता

हुआ बोला—“अब लौट रहे हो जीत कर तुम ?...कल शाम अपनी सूरत दिखाने की हिम्मत नहीं पड़ी तुम्हें ?...मैं फिर कहता हूँ कि तुम हमारा साथ छोड़ दो, अपना रास्ता लो...”

“सुनिये तो छोटे कुँवर !...” जमुना बोला—“बातैसी है कि मैं बड़ी परेशानी में पड़ गया था...सब कुछ बताता हूँ... कल आपके कथनानुसार सात गुंडों को लेकर मैं उस छोटी-सी पहाड़ी के पास छिपा था। सड़क पर इस पार से उस पार तक हमने रस्सा बाँध दिया था...जैसे ही कुँवरानी की कार आई और रुकी, वैसे ही हम लोग दूट पड़े...वारिस और शंकर ने हमसे जम कर लड़ाई की। मैंने कुँवरानी और ललित पर पिस्तौल तानी, मगर वारिस ने देख लिया...इमें परास्त कर वे भागे...कार पर हमने पीछा किया...शैतान वारिस ने हमारी पहिया पंचर कर दी...दूसरा पहिया लगाते-लगाते वे लोग काफी आगे भाग चुके थे...फिर भी हमने पूरी तेजी से पीछा किया...आखिर वे लोग नहीं ही मिले....”

“मिला क्या, खाक ?...”

“खाक नहीं छोटे कुँवर !....एक लड़की ! किसी विचित्र गाँव की रहनेवाली, मगर बेहद सुन्दर....देखेंगे आप तो खुश हो जायेंगे...रास्ते में मिल गई। साँप का चमड़ा पहने हुए थी...और एक भयानक आदमी उसका हाथ पकड़ कर घसीटे लिये जा रहा था। वह भी कोई सँपेरा मालूम पड़ता था। मैंने मोटर रोक कर लड़की को छुड़ाया...अपना नाम मैना बताती है छोटे कुँवर ! कहती है, वह एक परदेसी के साथ भाग कर शहर आई थी, जिसे कुछ लोग पकड़ कर शहर की ओर ले गये....और उसे घसीट कर ले जाने वाला उसी के गाँव का टिकोरा नामक एक सँपेरा था, जिसने उसके बाप की जान ली

और उसका पीछा करता-करता वहाँ तक आया था...पहले तो यह बहुत उछली-कूदी, मगर जब मैंने उसे यह विश्वास दिलाया कि शहर ले चल कर उसके परदेसी की खोज करूँगा, तब वह चुपचाप साथ चली आई....”

“कहानियों पर मुझे विश्वास नहीं होता जमुना !...”

“कहानी नहीं कुँवर साहब ! सत्य घटना है....वह लड़की मेरे साथ आई है...कल रात में देर ज्यादा हो गई थी इसलिये नहीं लाया आपके पास...दिन में उसे लेकर आता तो लोग शंका करते, इसलिये अब शाम का छिपा कर लाया हूँ...पहले आप उसे देख तो लें...”

“ओ...” कुँवर ने कहा और कोच पर जा बैठा ।

जमुना बाहर चला गया । थोड़ी देर में लौटा तो उसके पीछे सिमटी सकुचाई सौन्दर्य की एक प्रतिमा भी थी ।

चंचल एकटक उसे देखता रह गया । आसमान पर एक चाँद है केवल, तो जमीन पर सैकड़ों हैं, इसका विश्वास करना पड़ा चंचल को ।

“देखो मैना !—” जमुना उस लड़की से बोला—“ये यहाँ के राजा हैं । इन्हें खुश कर दो तो ये तुम्हारे परदेसी की खोज करा देंगे...”

“सरकार !” मैना ने लपक कर चंचल का पैर पकड़ लिया—“मेरे परदेसी को बुला दो....तुम्हारे शहर के लोग उसे पकड़ लाये हैं....”

मैना की बोली ने तो चंचल पर और गजब ढाया । अपना पैर छुड़ा कर बोला—“तुम ठीक से बैठो मैना ! और मैं जो पूछता हूँ उसका जबाब दो....”

मैना कुछ दूर हटकर जमीन पर बैठ गई। बोली—“मैं सब कुछ बता दूँगी सरकार ! मेरा परदेसी मुझे मिल जाय ।”

“तुम कौन हो ?....”

“मैं दूर गाँव की एक दुखिया हूँ सरकार ! सँपेरों के सरदार की बेटी....नाम मैना है...टिकोरा मुझे बहुत सताता था...मेरे बापू की जान ले ली उसने और खुद सरदार बन बैठा...डर कर मैं अपने परदेसी के साथ भागी, मगर उसने मेरा पीछा नहीं छोड़ा...उसी से इन बाबू ने मुझे बचाया था...”

“परदेसी को तुम प्यार करती हो ?...”

“हाँ सरकार !....बहुत-बहुत !...” कहते-कहते मैना के गाल लज्जा से लाल हो उठे।

“कौन था परदेसी ?....क्या नाम था....”

“मैं क्या जानूँ सरकार !....टिकोरा जंगल से एक अजगर पकड़ लाया था, उसी के पेट से वह निकला था, बेहोश....”

“अजगर के पेट से निकला था ?....आदमी ?....” चौंकर बोला चञ्चल। उसका चेहरा गम्भीर हो चला था।

“हाँ सरकार !....हम लोग अजगर का माँस खाते हैं...मेरे बापू ने अपनी दवा और मंतर के जोर से उसे जिला दिया, मगर उसका माथा खराब हो गया था। वह अपना नाम-गाँव सब कुछ भूल गया था....”

चञ्चल ने एक गहरी निगाह डाली जमुना पर।

जमुना भी गम्भीर था। धीरे से बोला—“शायद बड़े कुँवर ही रहे होंगे....”

“तुम घबड़ाओ मत मैना ! मैं तुम्हारे परदेसी की खोज करूँगा...तुम मेरा कहना मानोगी तो ?....”

“मानूँगी सरकार !....आप जो कहें करने को तैयार हूँ, मगर मेरा परदेसी....”

चञ्चल ने एक आँख दबाकर जमुना को कोई इशारा किया ।

जमुना भयानक ढंग से मुस्कुराता हुआ बाहर चला गया ।

बाहर से दरवाजा बन्द होने की आवाज सुनकर मैना चौंकी । बोली—“दरवाजा क्यों बन्द करा दिया ?”

चञ्चल ने झुक कर जमीन पर बैठी हुई मैना का हाथ पकड़ उसे अपने पास खींच लिया और अपने पास बिठाता हुआ बोला—“अभी से घबड़ा गई तुम ?....परदेसी को पाना चाहो तो मेरे मन की कर दो....”

“मैं बहुत सतायी हुई हूँ बाबू !”—मैना गिड़गिड़ा कर बोली....“मेरे पास अपना कुछ नहीं....सब कुछ उस परदेसी का है...नहीं-नहीं...मैं....नहीं....”

तभी दरवाजा खोलकर घबड़ाया हुआ जमुना अन्दर घुसा—“छोटे कुँवर ! रानी साहिबा आ रही हैं....”

“इस लड़की को चटपट कहीं छिपा दो जमुना ! माँ के सामने इसका पड़ना ठीक नहीं....” चञ्चल परेशान स्वर में बोला ।

जमुना ने मैना का हाथ पकड़ लिया और उसे घसीट कर ले चला ।

तभी—

“उसे छोड़ दो जमुना !” दरवाजे पर खड़ी रानी साहिबा का गम्भीर स्वर सुनाई पड़ा ।

मैना का हाथ छोड़कर जमुना दूसरी राह से बाहर भागा ।

चञ्चल का सर नीचा हो गया । चेहरे पर मुर्दनी छा गई ।

मैना आश्चर्य से बूढ़ी नारी की ओर देखने लगी, जिसे देखते ही दो-दो नर-पिशाच पंगु बन गये थे ।

रानी साहिबा भी गौर से उसकी ओर देख रही थीं। इंसान को साँप की खाल पहनते उन्होंने आज ही देखा था।

“तू कौन है बेटी?...यहाँ क्यों आई है?”—रानी साहिबा ने पूछा।

“मेरा नाम मैना है मैया!....मेरा परदेसी खो गया है....”

“माँ! यह लड़की जमुना को मिल गई थी....मैं इससे अभी-अभी इसका परिचय पूछ रहा था कि तुम आ गईं...” चंचल बोला साहस करके।

“हूँ...” रानी साहिबा वैसे ही गम्भीर स्वर में बोली—
“इसका कोई खो गया है शायद?”

“किसी परदेसी के साथ यह शहर तक आई है...बेचारी अनजान जगह में आकर बड़ी परेशान हो उठी है...मैं इसे आपके पास भेज रहा था, परन्तु यह जा ही नहीं रही थी, तो जमुना इसे घसीटने लगा कि तुम आ पहुँची...” चञ्चल बराबर अपनी सफाई दिये जा रहा था।

“यह मेरे पास रहेगी....” रानी साहिबा बोली—“चलो मैना! तुम्हारा जब तक जी चाहे, मेरे साथ रहना। परदेसी तुम्हारा मिल जाय तो चली जाना...”

कहकर रानी साहिबा घूम पड़ीं। मैना भी उनके पीछे-पीछे कमरे से बाहर हो गई।

चञ्चल हाथ मलने लगा। मैना उसे अँगूठा दिखा चली गई थी।

कविता को अचल मिला सही, मगर अंधा-गूँगा-बहरा होकर।
वह उसे देखता है, मगर पहचानता नहीं। उससे कभी

प्रेम की बातें नहीं करता। वह सुनता है मगर जवाब नहीं देता।

कविता जानती है कि अचल का मस्तिष्क विकृत हो गया है। वह पिछली सारी बातें भूल गया है। वर्तमान को पाकर अतीत की स्मृति उसे नहीं, तभी तो वह दिन-रात मैना-मैना रटा करता है।

पति का दूसरी स्त्री के पीछे पागल होना, पत्नी पर सबसे बड़ा प्रहार है। फिर भी कविता सब कुछ सहन कर रही है।

विचित्र पति की वह बच्चे की तरह सेवा करती है, उसे दुलारती-पुचकारती है, परन्तु अचल की जवान पर एक मैना ही जीवित है। अन्य सभी लोग मर चुके हैं उसके लिये। कभी-कभी टिकोरा का नाम लेकर वह दाँत पीसता है।

वह अवसर पाकर भाग जाना चाहता है, मगर कविता तो दूसरों से उसकी छाया तक को बचाती है। अचल पहले से ही असावधान था, अब तो पागल ही हो गया है। चंचल को पता लग जाय तो वह उसकी जान लेने के लिये जमीन आसमान एक कर दे।

इसीलिए कविता उसे एक एकान्त कमरे में बन्द रखती है। अपनी बीमारी का बहाना करके किसी से मिलती-जुलती नहीं। दिन-रात अचल के पास बनी रहती है।

मगर अचल उसे देखते ही इस तरह से डर जाता है, जैसे किसी मासूम बच्चे के आगे कोई चुड़ैल आ पड़ी हो। वह उसकी कुछ सुनता नहीं। कभी-कभी उसके पैर पकड़कर मैना से मिला देने की कष्ट प्रार्थना करता है। कभी रोते-रोते जमीन पर लोट जाता है।

कविता बेचारी बहुत-बहुत परेशान है।

अब तक अचल के विषय में केवल चार ही व्यक्ति जान पाये हैं—कविता, वारिस, शंकर और डाक्टर दास। मगर ऐसा ही हाल रहा तो कविता कितने दिनों तक उसे छिपाये रहेगी ?

डाक्टर दास बीमार कविता को देखने के बहाने दिन में दो बार अचल को देखने आते हैं। मगर अचल न तो ठीक से दवा पीता है, न अपनी जाँच करने देता है। बेचारे वारिस को अपने पागल मालिक के साथ कभी-कभी बेरहमी का बर्ताव करना पड़ जाता है और उसकी आँखों से आँसू चू पड़ते हैं।

जबरदस्ती उसे बहुत-सी दवायें खिलाई गईं, इंजेक्शन भी दिये गये, मगर लाभ कुछ नहीं हुआ।

शाम के समय डाक्टर दास कविता के कमरे में उपस्थित हैं। रानी साहिबा, पलंग के सामने जड़ाऊ कुर्सी पर बैठी हैं। कविता की बीमारी का हाल सुनकर वे उसे देखने आई हैं।

बेचारी कविता को झूठा बहाना बना कर, बीमार बन पलंग पर लेटना पड़ा है।

डाक्टर दास रानी साहिबा को दिखाने के लिए कभी कविता की नाड़ी पकड़ते हैं, कभी उसकी जीभ देखते हैं।

“बहु कब से बीमार पड़ी है, मगर एक दिन भी देखने न आ सकी”—रानी साहिबा ने कहा—“गठिया का रोग ही बड़ा विचित्र होता है डाक्टर ! चल-फिर नहीं पाती और क्या कहूँ ?...पड़े-पड़े ललित से बातें किया करती हूँ, या उस छोकरी मैना से उसके परदेसी की कहानी सुनती हूँ...”

मैना का नाम सुनकर डाक्टर चौंक पड़ा। यह नाम वह अक्सर अचल के मुख से सुनता आया है।

“डाक्टर !...अजगर के पेट में जाकर क्या आदमी जिन्दा बच सकता है ?”—रानी साहिबा ने कुछ सोचते हुए पूछा।

“सम्भव नहीं”—डाक्टर बोला—“फिर भी यदि चार-पाँच घण्टों से अधिक देर न हुई रहे, तो कुछ उम्मीद की जा सकती है.... उस हालत में उसे जीवन देना एक्सपर्ट डाक्टर का ही काम है.... बात यह है कि अजगर के पेट में जाकर इन्सान गर्मी से बेहोश हो जाता है, मगर उसकी जान निकलते-निकलते कुछ घंटे लग जाते हैं... साँप का काटा आदमी तो इक्कीस दिनों तक जीवित रहता है रानी साहिबा !....”

“मन्त्रों पर क्या विश्वास करते हो डाक्टर ?”

“सुना तो बहुत कुछ है, मगर विश्वास करने का कोई अवसर ही नहीं आया...”

“मैंना कहती है कि उसका बापू बहुत से मंत्र जानता था और अजगर के पेट से निकले हुए परदेसी को उसने जिन्दा कर दिया था, मगर परदेसी का दिमाग खराब हो गया... विश्वास तो नहीं होता डाक्टर इस कहानी पर... कहीं मेरा अचल भी ऐसे ही बच गया हो, इस आशा को लेकर आजकल मैं भी मन्त्रों पर विश्वास करने लगी हूँ... अच्छा चलो, तुम ठीक से रहना बहू ! अपनी बीमारी का ख्याल रखना... ज़माना बुरा है....”

उठकर रानी साहिबा चली गई ।

कविता उठ बैठी । रानी की गंभीरता उत्तरोत्तर जटिल होती जा रही थी । कविता मुलभूना चाहकर भी उलझती ही जाती है ।

वारिस की जवानी कविता को पता लग चुका था कि अचल के साथ वाली लड़की को चञ्चल के आदमी पकड़ लाये हैं और वह आजकल रानी साहिबा के महल में रह रही है ।

मगर उसने यह आज ही जाना कि अचल को उसके बाप

ने अजगर के पेट से निकालकर जीवित किया था। अगर ऐसा है, तो मैना के बहुत से उपकार उसके ऊपर हो चले हैं।

“क्या सोच रहे हैं डाक्टर साहब?”

“कुछ नहीं....रानी साहिबा ने अभी जिस लड़की का नाम लिया, क्या वही बड़े कुँवर के साथ थी?”

“हाँ!...” कविता ने गम्भीर स्वर में कहा।

“मैं सोचता हूँ, बड़े कुँवर पर इतनी कीमती दवाओं का असर क्यों नहीं हो रहा है?...इस वक्त वे इस मैना की याद में बेहद परेशान हैं। जब तक उससे इन्हें मिलाया नहीं जाता, तब तक इनके दिमाग को सुधरने की फुसत नहीं मिलेगी... दवायें बेकार होती रहेंगी....”

“डाक्टर!....” कविता चौंक कर बोली—“क्या यही रास्ता है?”

“सिर्फ यही...मैं चलता हूँ। कल सबेरे आऊँगा। आप इस बात पर गौर करें। जब वह लड़की इतने पास है तो कोई कारण नहीं कि हम उसे बड़े कुँवर से दूर रख कर इनका मर्ज और बढ़ावें....”

कहकर डाक्टर उठ खड़े हुए।

उनके बाहर जाते ही कविता पलंग पर लेट गई। आँखों से आँसू बह चले। विचार धारायें मस्तिष्क में तूफान-सी उठ खड़ी हुई।

नारी का कलेजा इतना बड़ा नहीं कि वह अपने पति की गोद में अपने ही हाथों दूसरी नारी को बिठाये।

मगर कविता करेगी सब कुछ। मैना के कारण वह अपने पति को देख सकी है, उसका यह अहसान वह भूल नहीं सकती।

अचल खुश रहे, उसके लिये यही बहुत है।

सौत का नाम बुरा होता है, मगर पुरुष की छाया इतनी कम नहीं कि उसमें दो नारियाँ खड़ी न हो सकें।

कविता मैना को अपनी बहन मानेगी। खुश होकर अचल उसे जितना अधिकार देगा, उतने में ही वह सीमित रहेगी। दिमाग ठीक हो जाय उसका, यही चाहती है कविता।

“वारिस !” पुकारा उसने।

“आया हजूर !....”

“देखो, तुम किसी नौकर को रानी माँ के महल में भेज कर उस लड़की को बुलवा लो।....रानी माँ से कहला दो कि गुलनार को बचा हुआ है, और मेरी तबियत खराब है, सो मेरे पास सेवा-टहल के लिये उसका होना जरूरी है...”

“खुदा कसम, मैं खुद जाता हूँ हजूर !...”

“नहीं, तुम्हें वह पहचानती है....देख कर वहीं लगेगी चिल्लाने....शंकर को भी मत भेजो...काली चन्द को भेज दो... जाकर अभी लाये उसे...”

वारिस चला गया। कविता पलंग पर बैठी-बैठी पुनः विचार-सागर में निमग्न हो गई।

आधे घंटे बाद वारिस मैना के साथ लौटा। बोला—
“यह तो कालीचन्द के साथ आती ही नहीं थी हजूर ! रानी माँ ने डाँटा तो चली आई चुपचाप। दरवाजे पर मुझे देखा तो पैर पकड़ कर लिपट गई। अब आप ही इसका परदेसी इसे दीजिये....”

मैना की दृष्टि कविता पर पड़ी तो वह दौड़ कर उसके पैरों से लिपट गई। रोने लगी। बोली—“सरकार ! मेरा परदेसी आपके किसी काम का नहीं....उसे छोड़ दीजिये....वह पागल है, मर जायगा हजूर मेरे बिना...”

कविता ने उसका हाथ पकड़ कर उठाया और प्यार से अपने पास बिठा लिया।

कहने लगी—“मैना ! मैं तुम्हारा परदेसी तुम्हें लौटा दूँगी, मगर एक शर्त पर...”

“मुझे उसकी एक झलक दिखा दो सरकार ! फिर जान भी माँगो तो दे दूँ....”

“तुम वादा करो कि तुम अपने परदेसी के साथ हमेशा मेरे पास रहोगी....”

“मैं वादा करती हूँ....”

“जब तक उसका दिमाग ठीक नहीं हो जाता, तब तक तुम किसी से भी उसका जिक्र न करोगी... उसे छिपा कर महल के अन्दर रखोगी.... उसे कह-सुनकर दवा पिलाओगी....”

“मैं सब कुछ करूँगी, मगर तुम भी वादा करो कि उसका दिमाग ठीक होते ही तुम मुझसे उसको फिर नहीं छीनोगी....”

“मैं वादा करती हूँ....” कविता ने रुद्ध कंठ से कहा।

“आप बहुत दुखी हैं सरकार !... मेरे परदेसी के लिए आप इतनी क्यों परेशान हैं ?.... आपका कौन है वह ? .”

“मेरे पति !....”

“वह ललित आपका बेटा है ?....”

“हाँ !....”

मैना के चेहरे पर करुणा खेलने लगी। इतनी बड़ी रियासत का मालिक है उसका परदेसी ! उसको गुलाब जैसी पत्नी और कमल जैसा बेटा है। दिमाग ठीक होते ही मैना जैसी नाचीज के लिये उसकी आँखों में क्या जगह रह जायगी ?

“क्या सोच रही हो मैना ?.... मैंने बचन दिया है तुम्हें....”

मेरा विश्वास करो...पति पर पहले तुम्हारा अधिकार होगा, उसके बाद मेरा....”

“मुझे अधिकार नहीं चाहिये सरकार ! मुझे प्यार चाहिये” मैना रोने लगी —“मेरे परदेसी का दिमाग ठीक होता तो वह कभी मुझसे दिल न लगाता....मगर अब तो गलती हो ही गई....सब कुछ छीन लेना, मगर मुझे दुत्कारना मत.... नौकरानी की जगह भी मुझे दे दोगी, तो परदेसी को देख-देख कर जिन्दगी काट लूँगी....और कुछ नहीं चाहिये मुझे....”

“तू कैसी बातें करती है मैना ! मेरी बहन है तू...चल उनसे मिला दूँ...रानी माँ ने तुझे उनके बारे में कुछ नहीं बताया था क्या ?....”

“नहीं, वे सिर्फ मेरी कहानी सुनती थीं अपनी बात कुछ नहीं बताती थीं...एक बार सिर्फ यही बताया था कि तुम्हारे पति का नाम अचल था, जिन्हें मरे कई महीने हुए...”

“मेरे साथ आ...”

कविता चल पड़ी । मैना भी पीछे होली ।

आँगन में पहुँचकर कविता ने एक दरवाजा दिखाकर कहा—
“उसी में हैं वे...जा, मिल आ....”

मैना आगे बढ़ी । दरवाजा बाहर से बन्द था । धीरे से खोला उसने ।

भीतर से अचल चीखा—“मुझे जाने दो....मेरी मैना रो रही होगी....”

“परदेसी !—” मैना भीतर घुसी ।

अचल ने चौंककर देखा, फिर दौड़कर मैना को अपनी बांहों में कस लिया—“मेरी मैना !....तुमसे दूटकर मैंने बहुत दुख

सहे....अब कभी साथ नहीं छूटेगा....यहाँ के लोग बड़े खराब हैं....हम दोनों मौका पाते ही भाग चलेंगे....”

“नहीं हम यही रहेंगे अचल बाबू !....” मैना करुण स्वर में बोली ।

“अचल बाबू ?....यह कौन है मैना ?....

“यह तुम्हारा नाम है, मैंने रखा है....”

“तुमने रखा है, तब तो ठीक है, मगर मुझे परदेसी नाम ज्यादा अच्छा लगता है....मुझे उसी नाम से पुकारा करो....तो यहाँ से नहीं चलोगी तुम ?...”

“नहीं...यहाँ के लोग बड़े अच्छे हैं....”

“तभी तो मुझे पकड़ लाये थे और इस कमरे में बन्द कर रखा था...मैना ! यहाँ मेरा दिल नहीं लग सकता...एक वह है, जिसे लोग कुँवरानी कहते हैं और जो मुझे पकड़ लाई थी....बड़ी चालबाज है....कहती है, मैं ही उसका पति हूँ....”

“उन्हें बुरा मत कहो परदेसी ! उन्होंने ही मुझे तुमसे मिलाया है....”

“तब तो बड़ी अच्छी हैं....मगर जबरदस्ती पकड़ क्यों लायी थीं ?....

“उन्होंने भूल से तुम्हें अपना पति समझ लिया था....

“अच्छी भूल रही !....भूलना ही था तो भाई क्यों नहीं समझ लिया ?....”

“उनके पति कई महीनों से खो गये हैं परदेसी ! चलो, मिल लो उनसे....माफी भी माँग लो....”

“कहाँ है ?....”

“बाहर आँगन में खड़ी हैं !....”

तब तक कविता भी आ पहुँची ।

अचल ने उसके सामने पहुँचकर हाथ जोड़ भोलेपन से कहा—“मुझे माफ करें सरकार !....आप भूल से मुझे पकड़ लाई, और मैं भूल से आपको बुरा समझ बैठा....दोनों बराबर हो गये....क्यों मैना !....”

“हाँ !....”

“तो अब हम लोगों को इजाजत दीजिये सरकार ! हम लोग बहुत दूर चले जाँयगे कि आप भूल से फिर कभी पकड़ न सकें”—अचल ने कहा ।

“यह क्या कह रहे हो ?”—मैना बोली—“हम लोग तो यही रहेंगे न !....”

“मगर....अच्छा, ठीक है....यहाँ आराम भी तो है....कुँवरानी साहिबा की सेवा हम लोग किया करेंगे—मगर हजूर से कह दो मैना, कि अब दरवाजे की कुँडी बाहर से न बन्द किया करें....मैं भागूँगा नहीं....”

“आप भागेंगे जरूर....” इस बार कविता बोली ।

“मैना ! कुँवरानी साहिबा मुझे आप कहती हैं, सुन लो.... मेरा नाम परदेसी है हजूर, आप नहीं....” अचल हँसकर बोला ।

तभी हाथ में वोतल लिए आ पहुँचा वारिस ।

कविता से बोला—“यह दवा डाक्टर साहिब ने भेजी है हजूर ! अभी लेता आ रहा हूँ....कुँवर साहिब को इसकी एक खुराक अभी पिला दीजिये....” कहकर वारिस चला गया ।

कविता ने वोतल मैना को देकर कहा—“लो इन्हें पिला दो....”

मैना ने गिलास में दवा ढालकर अचल के आगे किया ।

“मगर वह तो कुँवर साहिब को पिलाने के लिये कह गया है....” बोला अचल ।

“उसका मतलब तुम्हीं से था परदेसी !....” मैना ने कहा ।

“अजीब रिवाज है यहाँ का....जो भी आता है, अलग-अलग नामों से पुकारता है....मेरे कितने नाम हैं मैना ?”

“पहले दवा पी लो, तो बताऊँ...”

मैना ने गिलास अचल के होठों से लगा दिया ! वह चुपचाप पी गया । कविता ने संतोष की साँस ली ।

जो अचल डराने-धमकाने और अनुनय-विनय के बाद भी बिना जबरदस्ती किये एक घूँट भी न पीता था, वही मैना के जरा से कहने पर पूरी खूराक एक साँस में पी गया ।

“मैं चलती हूँ, तुम दोनों यहीं रहोगे । कोई तकलीफ नहीं होने पायेगी....” कविता ने कहा ।

वहाँ से आकर वह पलंग पर लेट गई । हँसे या रोये, वह कुछ समझ नहीं पा रही थी ।

धीरे-धीरे कई दिन बीत गये । मैना तथा कविता की सेवाओं से अचल की हालत सुधरने लगी । डाक्टर नित्य-प्रति देखने आते थे । यद्यपि उसकी याददास्त के लौटाने के कुछ भी लक्षण दिखाई नहीं पड़ते थे, फिर भी उसका स्वास्थ्य काफी अच्छा हो चला । अब वह दवा पीने में हिचकता नहीं । डाक्टर से जाँच कराने में डरता नहीं । कविता से भी बोल लेता है अक्सर, मगर बात-बात में उसे ‘हजूर-सरकार’ कहना नहीं भूलता ।

रानी साहिबा अपने कमरे में बेचैनी के साथ टहल रही हैं । बूढ़े पैर क्रोध के आवेश से काँप-काँप कर चल रहे हैं ।

चेहरा अतिशय गम्भीर है। हाथ की मुठियाँ कस कर बँधी हैं।

दरवाजे पर कुछ खटका हुआ। कविता अन्दर आई।
उसके पीछे-पीछे वारिस भी था।

रानी साहिबा की गम्भीरता देख कर कविता का माथा
ठनका। वारिस भी सन्न रह गया।

आज जरूर कोई घटना घटी है, जो रानी साहिबा को
असह्य हो उठी है, तभी तो वे गठिया का दर्द भूल कर कमरे में
टहल रही हैं।

“मुझे आपने बुलाया है माता जी?....” साहस कर कविता
ने पूछा।

“हाँ!....और वारिस को भी, जिसके बाप ने राजा साहब
के लिये अपनी जान दे दी थी और जो तुम्हारा वफादार नौकर
है। ठीक से खड़े हो जाओ तुम दोनों...अपने को कैद में
समझो...” रानी साहिबा के स्वर से क्रोध फूटा पड़ रहा था।

कविता और वारिस चुपचाप खड़े रहे। किसी से बोलते
नहीं बना कुछ।

“क्यों रे वारिस! तूने मेरे साथ इतनी बड़ी दगाबाजी की,
क्या तेरा बाप यही वफादारी तुझे सिखा गया था?....”

“खुदा कसम, मैंने हुजूर की शान में कोई गुस्ताखी नहीं
की....अनजान में कोई बेअदबी हो गई हो तो माफी चाहता हूँ
रानी माँ!”

“मैं सब जानती हूँ....तेरी सब बदमाशी मुझे मालूम हो
चुकी है....मैं तेरी एक-एक बोट्टी काट कर अलग कर दूंगी
छोकरे!... रोज-रोज डाक्टर को बुलाने दौड़ा जाता था....क्या
सचमुच बहू की तबियत खराब थी?....”

कविता चौंक पड़ी।

मगर चारिस उसी स्वर में बोला—“खुदा कसम ! बेहद खराब थी हज़ूर !....”

“खुदा के बच्चे ! अपना नमक खिला-खिला कर तुम्हें इतना बड़ा किया, क्या इसीलिए कि तू मुझसे झूठ बोले, मुझे धोखा दे ?....और यह कविता तो मुझे देखकर पलंग पर ऐसी पड़ जाती थी, जैसे महीनों की बीमार हो....मैं पूछती हूँ, तुम्हें क्या बीमारी थी बहू ?...”

“सर में दर्द रहता था माता जी !....”

“मैं जानती हूँ तेरे सर दर्द का कारण” क्रोध से रानी साहिबा बोली—“चुपके-चुपके अपने महल में एक मर्द को छिपा रखना, अपनी बीमारी के बहाने उसकी दवा करना.... मुझे तुम लोगों ने अन्धी समझ लिया था। कुल की बहू का अच्छा कर्तव्य निबाहा तूने कविता ?....कब की जान-पहचान थी उससे ?...बोलती क्यों नहीं ?”

कविता क्या जवाब दे ? हतबुद्धि-सी वह खड़ी की खड़ी रह गई।

उसकी चुप्पी ने रानी साहिबा का क्रोध और भड़का दिया। वे गरज कर बोली—“मुँह में जवान है या नहीं ?....जवाब क्यों नहीं देती...”

“मुझे क्षमा कीजिये माता जी ! मैं यह भेद अभी नहीं बता सकती....” कविता ने काँपते हुए कहा।

“तब कब बतायेगी ?”—टहलती-टहलती रानी साहिबा पलंग पर जा बैठी।

“समय आने पर आप सब कुछ जान जाँयगी माता जी !...” बोली कविता।

“तू भी नहीं बतायेगा वारिस ?”—इस बार रानी साहिबा का स्वर कुछ धीमा हो गया था।

“खुदा कसम ! मैं कुछ नहीं जानता हजूर !....”

“सब कुछ जानता है तू....तुम सब लोग मेरे साथ बगावत करना चाहते हो....एक एक को मैं फाँसी पर लटका दूँगी... कविता ! इधर आ तो....”

अन्तिम वाक्य कहते-कहते रानी साहिबा का स्वर बहुत कोमल हो गया था।

कविता चुपचाप उनके सामने जा खड़ी हुई।

उन्होंने उसका हाथ पकड़कर अपने पास बिठा लिया और उसका सर अपनी छाती से लगाकर बोलीं, प्यार भरे स्वर में—
“मुझ पर तेरा विश्वास नहीं है बहू ?...तू अपना भेद मुझे बताना क्यों नहीं चाहती ?...”

रानी साहिबा के भाव-परिवर्तन से कविता और वारिस चकित हो उठे। उनके दिल की थाह पाना दोनों के लिये असम्भव था।

थोड़ी देर रुककर वे करुण स्वर में बोलीं—“बहू ! अचल की इतनी बड़ी दुश्मन तो मैं नहीं थी कि उसे देख पाकर ढँस लेती...इस वृद्धि से ऐसी क्या गलती हो गई कि उसके बेटे को तुम लोगों ने अब तक छिपा रखा ?....उसको मुझे दिखाती न, मगर बता तो देती कि मेरा बच्चा सही-सलामत अजगर के पेट से निकल आया है ?...बहू ! तूने मेरी छाती पर लात मार दिया...माँ का बेकस दिल तू नहीं देख सकी... इतनी बड़ी सजा तूने मुझे किस अपराध पर दी बहू ?....यह वारिस छोटा था तो कितना भला था, मगर जवान होकर साँप बन गया...”

रानी साहिबा की आँखों से आँसू बह चले। बड़ी-बड़ी

बूँदे बूँदे गालों पर उतरकर चमचमा उठीं। उतनी बड़ी ममता पाकर कविता का कलेजा पानी-पानी हो आँखों से निकल चला।

वारिस दौड़कर रानी साहिबा के पैरों पर गिर पड़ा—“या खुदा ! रानी माँ के आँसू पोछ दे....हमसे बेहद गलती हुई माँ ! इस नादान वारिस को माफ़ कर दो...”

एकाएक रानी साहिबा के आँसू रुक गये। चेहरे की करुणा गम्भीरता में परिवर्तित हो गई—“उठो तुम लोग...बहू ! तू अचल के पास जा...उसका दिमाग खराब हो गया है न !... ठीक से दवा करना...ललित को भी अपने साथ लेती जा, बगल के कमरे में खेल रहा है...तू कहाँ चल दिया वारिस ?... अभी रुका रह तू...”

वारिस रुक गया। कविता चली गई।

“वारिस ! जब बदन का फोड़ा पक जाता है तो उसके लिये। नश्तर जरूरी है न ?”—रानी साहिबा ने गम्भीर स्वर में पूछा।

“बेशक हजूर ! कम्बख्त फोड़े खुदा कसम वगैर नश्तर के अच्छे ही नहीं होते...”

“तो वह नश्तर उठा ला...” एक ओर उँगली दिखाया रानी साहिबा ने।

“मगर वह तो हंटर है हजूर !...” वारिस आश्चर्य भरी वाणी में बोला।

“उसे लेकर मेरे पीछे-पीछे आ...” कहकर रानी साहिबा उठीं और दरवाजे की ओर बढ़ीं।

हाथ में हंटर लिये उनके पीछे चलता हुआ वारिस चकित था। आज क्या हो गया है रानी साहिबा को ?

उनके पैर जब चञ्चल के महल की ओर बढ़े, तो वारिस चौकन्ना हुआ, फिर भी उनके पीछे-पीछे बढ़ता गया। दूर

से ही देखा उसने, आज चञ्चल के महल के चारो ओर बन्दूक-धारी पहरेदार घूम रहे थे। दिन को तो ऐसा पहरा पड़ता नहीं—फिर ?

रानी साहिबा को आते देखकर पहरेदार अदब के साथ खड़े हो गये। वारिस ने देखा—महल के सदर दरवाजे पर बड़ा-सा ताला लटक रहा था। रानी साहिबा ने ताला खोला, अपने पास की चाभी से। फिर वारिस को अन्दर करके बाहर से ताला बन्द कर दिया और लौटने लगीं।

अपने को कैद देखकर वारिस चौंक कर बोला—“मगर हजूर ! मेरा कसूर...”

एकाएक रानी साहिबा लौट पड़ी और ताला खोलती हुई बोली—“ओह ! मेरा दिमाग खराब हो गया है वारिस...मुझे भी तो अन्दर आना था....”

ताला खोलकर रानी साहिबा भी भीतर प्रविष्ट हुई और चञ्चल के कमरे की ओर बढ़ी। वारिस समझ गया कि इस समय उनका मस्तिष्क किसी बात से इतना खराब हो गया है कि वे पागल-सी हो उठी हैं, तभी तो वे उसे बन्द करके लौटी जा रही थीं।

चञ्चल के कमरे में भी ताला लगा हुआ था। देखकर वारिस बहुत विस्मित हुआ।

ताला खोलकर रानी साहिबा अन्दर गईं। पीछे-पीछे वारिस भी था, हाथ में हंटर लिये।

चञ्चल पलंग पर बदनवास-सा लेटा था। रानी साहिबा को देखकर उठा। बोला—“तुमने मुझे कैद किया है माँ ?...”

“हाँ !...” वे बोली गम्भीर स्वर में, और जाकर अस्त-व्यस्त-सी एक कुर्सी पर बैठ गईं। हाँफने लगीं।

“मेरा कसूर ?....” चञ्चल ने पूछा ।

“पके फोड़े में नश्तर लगाने आई हूँ चञ्चल । तेरा कसूर खुद तेरी जवान बोलेगी....वारिस ! कैदी को पचास कोड़े लगा...”

“हजूर !...”

“खबरदार जो मुँह से कोई बात निकली”—रानी साहिबा गरज कर बोली—“शुरू कर !...”

सड़ाक !...वारिस के हाथ का हंटर चल पड़ा । अपने मालिक के दुश्मन के प्रति उसे तनिक भी दया नहीं थी ।

सड़ाक !...चीख उठा चञ्चल । पहलवान हाथों का कोड़ा बज्र बन कर गिर रहा था ।

“और जोर से...” रानी साहिबा ने तड़प कर कहा ।

सड़ाक !....सड़ाक !....सड़ाक !....

चञ्चल चीखने लगा—“माँ !...मुझे माफ़ करो...मेरा कसूर तो बता दो माँ !....”

“वारिस का हंटर तेरा कसूर तो बता रहा है...यह मत समझ कि तेरी एक भी शैतानी मुझसे छिपी है । मैं सब कुछ जानती हूँ, आज से नहीं बहुत पहले से ही...माँ की ममता बेटे का कसूर देखकर भी नहीं देखना चाहती थी...मेरे प्यार ने मेरा घर उजाड़ दिया...तू दिन पर दिन बिगड़ता गया...अचल कुँवरानी और ललित ने तेरा क्या बिगाड़ा था ?...बोल ?.... वारिस ! अगर तेरा हंटर ढीला हुआ तो तेरी ही पीठ पर बरसेगा....”

“मुझे छोड़ दो माँ !...मैं माफी माँगता हूँ...” चञ्चल गिड़-गिड़ाकर बोला ।

वारिस का हंटर जब-जब पड़ता था, वह दर्द से चीख उठता था।

“माफी माँगना हो तो अचल, कुँवरानी, ललित और इस वारिस से माँग...बेहया ! तूने मेरी कोख गन्दी कर दी। यह भूल गया तू कि जो पैदा कर सकती है, वह मार भी सकती है...और जोर से वारिस ! इसके बदन की एक-एक टुकड़ी खाल अलग होकर गिर पड़े। मैंने चुपचाप समझाने की कोशिश की, मगर तेरी चाल बढ़ती ही गई...यह सुनकर कि अचल अजगर के पेट से जिन्दा निकल आया और वह कुँवरानी के महल में पागल बना छिपा है, तूने फिर दूसरी चाल चली। डाक्टर दास को डरा-धमका कर कहा कि वह अचल को जहर का इंजेक्शन दे-दे... डाक्टर को तू इतना नीच समझता है ?... तेरे कारण अचल इतना कष्ट भोग रहा है, परन्तु तेरे कसाई दिल को अब भी दया नहीं आई ?....अचल के लिये मैं दिन-रात तड़पती रहती थी, परन्तु मेरे आँसू पोंछने के बदले तू मेरे जिगर में घाव करने जा रहा था ?”

चीखता-चिल्लाता चञ्चल जमीन पर गिर पड़ा—“अब बस करो माँ ! अब कभी गलती न होगी....”

“तू माँ के प्यार में पला, अब उसके क्रोध में तड़प-सिसक-कर मर...इसे साँप की तरह धुन डाल वारिस ! जिन्दा बचा तो सबको ढँस लेगा....”

चञ्चल की चीख धीरे-धीरे कम हो गई। वारिस का हंटर चलता रहा। बेहोश हो गया चञ्चल।

अपने परदेसी को पाकर भी मैना खोई-खोई सी रहती है। वह समझ गई है कि उसके प्रेम-वृत्त में तृप्ति के फल नहीं लग सकते। परदेसी पराया-धन है; उस पर मैना का कोई अधिकार नहीं।

फिर भी मैना ने उसे प्यार किया है, और नारी का प्यार इतना धुँधला नहीं होता कि उस पर आसानी से कोई और रंग चढ़ जाय। प्यार तृप्ति का माध्यम नहीं हो सकता। प्यार असीम है और तृप्ति सीमित—दोनों की कोई तुलना नहीं।

अबोध मैना को प्यार ने सजग बना दिया है। वह त्याग की परिभाषा जान गई है। आँसुओं को अब वह सँजोकर रखती है, अनमोल मोती समझ कर।

बैठे बैठे दिल नहीं लग रहा था, सो परदेसी का साथ छोड़कर वह चहारदिवारी के अन्दर इधर-उधर घूम रही थी। कहाँ उसका छोटा-सा उजाड़ गाँव, जहाँ साँपों की फूत्कार कदम-कदम पर सुनाई पड़ती थी—और कहाँ इस चहारदिवारी के अन्दर बने हुए तीन-तीन महल, और हर महल में सम्पदा का अतुल कोष। उसका परदेसी पराया न बन गया होता तो उसके साथ यहाँ रहकर वह कितनी खुश होती!

मगर दिल के अन्दर पतझर लिए मैना को बाहर की हरियाली कैसे अच्छी लगे?

विचार-सागर में निमग्न मैना दूर निकल आई थी। कुछ आदमियों के बातचीत की आवाज उसके कानों में पड़ी। चौंक कर सर उठाया उसने। देखा—वह चहारदिवारी के मुख्य फाटक के पास तक पहुँच गई थी।

एकाएक उसकी दृष्टि फाटक के बाहर खड़े दो भयानक आदमियों पर पड़ी। उसका सारा शरीर भय से सिहर उठा और वह लपक कर आड़ में हो गई। फिर चहारदिवारी से सटे-सटे फाटक के नजदीक बढ़ी, ताकि वह उनकी बातें सुन सके।

उन दोनों की दृष्टि अभी मैना पर नहीं पड़ी थी। वे अचल के महल की ओर इशारा करके कुछ बातें कर रहे थे।

उन दोनों की सूरतें एक-सं-एक भयंकर थीं। एक था अजगर की खाल का वस्त्र पहने, हाथ में मणियाँ लाला साँप पकड़े, छोटी पहाड़ी सा दीर्घाकार टिकोरा, जिसकी भयानकता का डर मैना की हर साँस में समाया हुआ था। और दूसरा था काले देव सा लम्बा-चौड़ा, मैना को टिकोरा के हाथ से छुड़ा लाने वाला जमुना।

दो राक्षसों में इतनी दोस्ती देखकर मैना का शरीर काँपने लगा। हृदय की धड़कनों के तेज स्वर को दोनों हाथों से दबाये, निस्तब्ध रह कर वह उनकी बातें सुनने लगी।

“मैना भी उसी महल में है?...” टिकोरा का भयानक स्वर था।

“हाँ...और तुम्हारा दुश्मन परदेसी भी....कुछ करने की हिम्मत है?...”

“टिकोरा डरता नहीं....इस सबका देख रहे हो न?...इसके मुँह में मर्ती है, उगल दे तो रात उजली हो जाय...काट ले किसी को, तो उल्टी साँस भी न ले सके....अन्तर-मन्तर दवा दारू सब बेकार....अभी ही इसे परदेसी पर फेंकता हूँ, देखूँ उसकी जान कौन बचाता है?...जानते हो, मन्तर से बाँध कर मैं इस साँप को छोड़ दूँगा...यह जाकर परदेसी को खोज लेगा और उसे ढँसकर वापस आ जायगा....हा-हा-हा....”

टिकोरा की भीषण हँसी सुनकर छिपी हुई मैना का कलेजा दहल गया।

“ठीक है”—जमुना कह रहा था—“काम फतह हो गया तो मैना को पा जाओगे और छोटे कुँवर भी तुम्हें काफी इनाम देंगे।”

“इनाम की लालच मत दो तुम मुझे...” इस बार टिकोरा का स्वर बेहद भयानक हो गया था—“मैं टिकोरा हूँ....और टिकोरा ने अब तक अपने किसी भी दुश्मन को जिन्दा नहीं छोड़ा...तुमने मुझे मैना का पता तो बताया, मगर मैं तुम्हारी बन्दूक के कुन्दे की चोट अब तक नहीं भूला हूँ।”

“क्या कहते हो तुम टिकोरा?” उस दुर्दान्त सँपेरे की भावभंगी देखकर जमुना भी डर गया था।

“अगर तुमने उस दिन मैना को मुझसे अलग न किया होता तो मैं अब तक अपने गाँव पहुँचकर चैन करता होता, हाथ में साँप पकड़े भूखा प्यासा मैना की खोज में शहर की खाक न छानता।”

टिकोरा मन ही मन कुछ बुदबुदाने लगा। उसके हाथ में निश्चल पड़े हुए साँप ने सजग होकर एक तीव्र फूत्कार छोड़ी।

डर कर बोला जमुना—“टिकोरा!”

“टिकोरा ने दुश्मन को माफ करना नहीं सीखा....लो...” कहकर उसने हाथ का साँप जमुना के सर पर फेंक दिया।

विकराल काला साँप जमुना के गले से लिपट गया।

और दूसरे ही क्षण जमुना का लम्बा-चौड़ा शरीर निश्चल होकर जमीन पर आ गिरा। टिकोरा ने झुककर साँप को पुनः हाथों में ले लिया और भीषण रूप से हँसा।

छिपी हुई मैना के मुख से एक चीख निकलते-निकलते बची। वह दौड़ पड़ी अचल के महल की ओर।

अचल कमरे में बैठा था चुपचाप । मैना को बेतहाशा भागी आती हुई देखकर वह उठ खड़ा हुआ ।

मैना हाँफ रही थी । आकर उसके सामने खड़ी हो गई—
“टिकोरा !....साँप !....जमुना !....”

“क्या है मैना ?....”

“टिकोरा आ पहुँचा है परदेसी !” घबड़ाये हुए स्वर में बोली वह—“उसके हाथ में बापू का मनीवाला साँप है...तुम्हारी खैर नहीं परदेसी !....यहाँ से भागना पड़ेगा...उसने यह महल देख लिया है...साँप को मंतर से बाँध कर तुम्हें काटने के लिये छोड़ेगा...कहता था...”

“तुम्हें भी देख लिया है उसने ?”—अचल भी घबड़ा गया था ।

“नहीं...मगर जमुना ने उसे सब कुछ बता दिया है....वह टिकोरा हरामो मेरे पीछे पागल हो गया है परदेसी !....मुझे न पाकर वह सब कुछ कर डालेगा....मैं उसके पास जाऊँगी...मुझे जाना ही पड़ेगा...तुम्हारी जान की खातिर मैं अपनी कुर्बानी दे दूँगी परदेसी !....”

“नहीं मैना ! तुम मुझे छोड़कर कहीं नहीं जा सकती...मैं अपनी जान दे दूँगा....” अचल ने मैना को अपनी बाहों में जड़क लिया ।

“अच्छा ठहरो, मैं कुँवरानी से मिलकर अभी आई....तुम चौकन्ने होकर बैठे रहो...कौन जाने वह हरामी अभी ही साँप छोड़ दे....”

कहकर मैना कविता के कमरे की ओर बढ़ी ।

डाक्टर दास कविता के सामने बैठे हुए चञ्चल के विषय में बात-चीत कर रहे थे । वारिस भी वहाँ मौजूद था ।

“क्या है मैना ? घबड़ाई हुई क्यों हो ?....” कविता ने पूछा ।

“गजब होना चाहता है...आप जल्द ही कुछ इन्तजाम कीजिये, नहीं तो कुँवर साहब की जान खतरे में पड़ जायगी...” मैना ने थोड़े में सब बातें कविता को समझा दीं।

वारिस उठता हुआ बोला—“खुदा कसम ! मैं कुँवर साहब को दिन रात कन्धों पर उठाये खड़ा रहूँगा। साँप की मजाल नहीं कि बगैर मुझे काटे उन तक पहुँचे....पहुँचने के पहले ही मैं उसकी गर्दन तोड़ दूँगा....”

मैना की घबड़ाहट ने सब को घबड़ा दिया था।

कविता तेजी से उठी। डाक्टर दास भी उठ खड़े हुए।

तभी बाहर से अचल की चीख सुनाई पड़ी—“टिकोरा.... साँप...”

सब झपट कर कमरे से बाहर निकले।

अचल चीखता हुआ दौड़ा आ रहा था। और उसके पीछे.... उसके पीछे था एक विकराल काला साँप—आँधी की तरह फुफकारता हुआ।

स्वामिभक्त वारिस की भवें तन गईं। वह दौड़ा उस ओर, पूरी तेजी के साथ।

कविता, मैना और डाक्टर दास वह दृश्य देखकर चित्र-लिखित से खड़े रह गये।

लोगों ने देखा—वारिस के पहुँचने के पहले ही साँप अचल के पैरों से लिपट गया। और...

मैना के मुख से जोरों की चीख निकली। कविता बदहवास सी हो जमीन पर बैठ गई। डाक्टर दास उस ओर बढ़े जिधर अचल का निश्चल शरीर जमीन पर गिरा हुआ था और वारिस उसे हिला-डुला कर देख रहा था। साँप का कहीं पता न था।

वारिस और डाक्टर ने बेहोश अचल को उठा कर कमरे में

पलंग पर ला सुलाया। जहाँ साँप ने काटा था, वहाँ का माँस चीर कर निकाल दिया डाक्टर ने।

चारों ओर हाहाकार मच गया। वारिस छाती पीट रहा था। कविता आँखों में उजड़ा संसार लिये खड़ी थी। मैना पलंग के पास बैठकर, साँप के जितने मन्त्र उसे मालूम थे, सब आजमा रही थी।

थोड़ी ही देर में रानी साहिबा भी आ पहुँची। अचल की दशा देखकर बदहवास-सी कुर्सी पर गिर पड़ी। बूढ़ी पलकों से जवान बूँदें टुकक चलीं।

डाक्टर दास कार पर घर चले गये थे, दवा लेने। दस मिनट बाद वे भी आ पहुँचे। इंजेक्शन दिये जाने लगे।

अचल के दाँत बैठ गये थे। चेहरा काला पड़ गया था। मुँह से झाग बह रही थी। मैना के मन्त्र बेकार गये और डाक्टर की दवायें भी। मैना दूर जाकर रोने लगी। डाक्टर ने करुण-गम्भीरता से सर हिलाया।

“वारिस ! यह ताली ले...चञ्चल को यहीं ला खड़ा कर.... इधर अचल की जान निकलेगी, उधर चञ्चल की भी....”

लोगों ने देखा, रानी साहिबा के हाथों में एक पिस्तौल थी। वारिस ताली लेकर चला गया।

कमरे में पूर्ण सन्नाटा छा गया। अचल के जीवन से सभी निराश हो उठे।

“कुछ करो डाक्टर !...” रानी साहिबा की आवाज रो रही थी।

“कुछ कर पाता तो उठा न रखता...” हाथ मलता हुआ बोला डाक्टर।

एकाएक मैना हिली। गम्भीर गति से चलती हुई पलंग के

पास आ खड़ी हुई। गौर से उसने उस स्थान को देखा, जहाँ साँप ने काटा था और डाक्टर ने माँस चीर कर घाव कर दिया था।

मैना की आँखों में एक चमक दिखाई दी, पुनः मुख पर करुणा छा गई। उसका मुख धीरे-धीरे नीचे झुका, और उस जहरीले घाव से जा लगा।

लोग चौंक पड़े, मगर शान्त रहे।

सँपेरे की बेटी साँप का जहर चूस रही थी, और लोग आश्चर्य में भरे देख रहे थे।

उसी समय चञ्चल को लिये वारिस आ पहुँचा। यहाँ की घटना वारिस ने उससे बता दी थी। आज उसके मुख पर पश्चाताप की छाया झलक रही रही थी, आँखों में आँसु छलक आये थे।

रानी साहिबा ने सर घुमाकर उसकी ओर देखा फिर हाथ की पिस्तौल ठीक की, और तब उस ओर देखने लगी, जिधर घाव से मुँह लगाये एक त्यागमयी प्रेमिका अपने प्रेमी का जहर चूस रही थी।

मैना का शरीर ज्यों-ज्यों काला पड़ने लगा, त्यों-त्यों अचल के बेहोश शरीर पर चमक आने लगी। मैना की आखिरी कोशिश बेकार नहीं गई थी।

सब ध्यान से उस ओर देख रहे थे। अब अचल का शरीर रह-रह कर काँप उठता था, और मैना निश्चल होती जा रही थी।

कविता आगे बढ़ आई थी और ध्यान से अचल की ओर देख रही थी।

एकाएक मैना का शरीर बेहोश होकर जमीन पर लुढ़क गया। वारिस ने लपक कर उसे सम्हाला।

उसी समय अचल का शरीर जोरों से काँपा। उसने कराह कर करवट बदली। आँखें धीरे-धीरे खुल गईं।

कविता का दिल तेजी से धड़कने लगा, अचल की आँखों में पहले जैसा तेज देख कर। उनमें विक्षिप्त मस्तिष्क की छाया न थी। पुतलियाँ सतर्कता के साथ इधर-उधर देख रही थीं।

या ईश्वर ! कविता की साधना क्या सफल होने जा रही है ? क्या अचल का विकृत मस्तिष्क अब ठीक हो चला है ?

तभी अचल की पुतलियाँ थोड़ी देर के लिए उसके चेहरे पर आ रुकीं और मुख से शिथिल स्वर निकला—“कविता ! मुझे सहारा देकर उठा दो....”

कविता को जैसे दुनियाँ की सारी निधि मिल गई। वह दौड़ पड़ी। आँखों से वह चलते आँसुओं को सम्हाला उसने और धीरे से अचल को उठा कर बिठा दिया।

“वह अजगर कहाँ गया कुँवरानी ! जिसने अभी-अभी मुझे पकड़ लिया था...और तुम इस जंगल में कैसे आ पहुँची ? ...अरे, मैं तो महल में हूँ...क्या बात है कविता ?....”

अचल को बरसों पीछे की घटना ताजी लग रही थी।

“सब कुछ सुनोगे बेटा !...कहानी बड़ी लम्बी है...” रानी साहिबा ने आगे बढ़ कर उसके सर को अपने सीने से लगा लिया।

“माता जी ! मुझे माफ कर दो”—बोला अचल—“मेरी असावधानी से मुझे एक अजगर ने पकड़ लिया था, लेकिन बच गया मैं...वारिस कहाँ है ? उसीने मुझे उस पीपल के नीचे ला खड़ा किया था....”

वारिस मृतप्राय मैना को सम्हाले हुए था और डाक्टर दास उसे इंजेक्शन दे रहे थे। जिस नारी ने उनके मालिक की

जान बचाई थी, उसके लिये शक्ति भर प्रयत्न करना उनका कर्त्तव्य था।

अचल की पुकार सुनते ही वारिस दौड़ कर उसके पैरों पर जा गिरा—रो-रो कर बोला—“या खुदा ! जिसे तू जिन्दगी बख्शे, उसे मार सकने की ताकत किसी में नहीं....मेरा कसूर माफ कर दो हजूर ! अल्लाह कसम, मैंने बहुत बड़ी गलती की थी...”

“ओ चञ्चल ! वहाँ क्या खड़ा है तू चुपचाप ?...” अचल ने दूर खड़े हुए चंचल को पुकारा—“माता जी ! आपने इसे कुछ कहा सुना है क्या ?...”

“मैं कैदी हूँ भैया !....” चंचल रुआसा होकर बोला।

“भला-चंगा तो खड़ा है...हाथ-पैर भी खुले हैं...यह कैसी कैद है ?....माता जी ! इसकी तो कोई गलती नहीं थी...मैं स्वयं ही उठकर अजगर के पास चला गया था....इसे माफ कर दीजिये....इधर आ न चञ्चल !....”

चञ्चल दौड़कर अचल के पैरों से लिपट गया। बोला—“मुझे माफ कर दो भैया ! मैंने बहुत से अपराध किये हैं। मेरे कारण तुम्हें बहुत से कष्ट भेलने पड़े...अब कभी ऐसी गलती न होगी....”

अचल हैरान स्वर में बोला—“यह क्या बक रहा है माता जी ? पागल हो गया है क्या ?....अरे, इसका तो सारा बदन सूजा हुआ है....”

तभी बाहर कुछ शोर-गुल सुनाई पड़ा। हाथ में विकराल साँप पकड़े, अजगर की खाल पहने एक भयानक व्यक्ति ने वहाँ प्रवेश किया।

वह था टिकोरा ! मैना के पीछे पागल वह निर्दयी सँपेरा !

जमीन पर पड़ी हुई मैना पर दृष्टि जाते ही वह दौड़ कर वहाँ पहुँचा। मैना को गोद में उठा कर गम्भीर वाणी में बोला—
“मेरी मैना ! जिस बात से मैं डर रहा था, अखिर तूने वही किया...तूने साँप का जहर चूस लिया....”

मैना बेहोश थी। टिकोरा को जवाब न मिला।

वारिस उसकी ओर बढ़ा तो वह चिल्ला उठा—“खबरदार ! मेरे पास कोई आयेगा तो यह साँप खींच मारूँगा...तुम लोग मेरे दुश्मन हो...मेरी मैना छिन गई मुझसे...मगर मैं टिकोरा हूँ....हार कर भी हारना मैं नहीं जानता...मैं अपनी पूरी ताकत लगा दूँगा....जय उस्ताद !...”

टिकोरा के भयानक होंठ हिलने लगे। जलती आँखें एकटक मैना का मुरझाया मुख देखने लगीं।

“यह कौन है कविता ? बड़ा भयानक आदमी है....और वह लड़की कौन है ? क्या हुआ है उसे ?....” अचल ने पूछा। मस्तिष्क ठीक हो जाने पर वह टिकोरा, मैना सबको भूल गया था।

परिस्थिति कविता की समझ में आ गई। उसने संक्षेप में सारी घटनायें बता दीं। सुनकर अचल को बेहद आश्चर्य हुआ कि अजगर के निगलने की घटना पिछले साल की है और उसने पागलपन की अवस्था में उस लड़की से प्रेम किया था।

उधर टिकोरा के मन्त्र एक के बाद एक असफल होते जा रहे थे। अपनी आँखें खोल कर उस भयानक सँपेरे ने मैना को देखा। बोला—“तुम वापस नहीं लौट सकती मैना ?....टिकोरा को हरा दिया तुमने...मैं अपनी हार कबूल करता हूँ...जाना हो तो चली जाओ, मगर एक छिन के लिए आँख खोलकर दो बातें कर लो...”

टिकोरा की आँखें पुनः बन्द हो गईं । होठ बुदबुदाने लगे ।

दस मिनट के बाद मैना का शरीर जरा-सा हिला । होठों से क्षीण आवाज निकली—“किसने बुलाया मुझे ?....”

“मैं हूँ मैना !... तुम्हारा टिकोरा... आँखें खोलो....” टिकोरा की तेज आँखें तीव्र रूप से मैना की बन्द पलकों पर पड़ रही थीं !

कुछ देर बाद मैना की पलकें हिली और धीरे-धीरे खुल चली, जैसे कोई अदृश्य शक्ति बल पूर्वक उसकी आँखें खुलवा रही हो ।

उसके मुख से पुनः वही बेहोशी भरा स्वर निकला—“क्या है टिकोरा ?.... क्यों बुलाया मुझे ?”

“जा तो रही हो मैना !...” भयानक टिकोरा रो पड़ा—“मगर सुन लो, तुम्हारे पीछे टिकोरा की एक-एक साँस गाँव की पहाड़ियों पर भटका करेगी... जाते-जाते मुझे माफ तो करती जाओ मैना !....”

“माफ किया... परदेसी कहाँ है ?”

“देखोगी उसे ?...” उसके अवश शरीर को हाथों पर लिये हुए टिकोरा अचल के सामने आ खड़ा हुआ—“देख लो मैना ! अपने परदेसी को...”

मैना की विह्वल निगाहें परदेसी की ओर उठीं, फिर बन्द हो गईं । मुँह से उखड़ा हुआ स्वर फूटा—“परदेसी... तुमको... मैंने.... अपनी... जान दी.... है... भूलना... नहीं... याद... करते... रहना... मैं... चली...”

और मैना का सर एक ओर को लटक गया ।

“परदेसी बाबू !” टिकोरा बोला—“आज तुम्हारे दरवाजे से हार कर जा रहा हूँ... मैना मेरी है, तुम इसे नहीं पा सकते...”

परदेसी

खबरदार कोई पास आवेगा तो यह साँप फेंक मारूँगा..हा हा-हा !....”

भीषण अट्टहास करता हुआ टिकोरा, मैना की लाश को हाथ पर रखे, कमरे से बाहर निकल गया।

धीमी गति से वह सदर फाटक की ओर बढ़ रहा था। लोग दूर से उस भयानक सँपेरे की गम्भीर चाल देख रहे थे। बहती हुई हवा मैना की लाश से टकराकर सर झुकाये अलग हटी जा रही थी। त्याग की वह प्रतिमा अपनी पीड़ा का इतिहास लिये चुपचाप सो रही थी।

सड़क पर से किसी की दर्दनाक आवाज आ रही थी—

“मत करियो रे कोई परदेसी से प्रीत, कोई बेदरदी से प्रीत....”

Amph

—द्वितीय खंड समाप्त—

Signature

नोट—मैना की लाश लेकर टिकोरा कहाँ गया, मैना जिन्दा हुई या नहीं, परदेसी अचल फिर पागल कैसे हुआ—आदि रोचक घटनायें ‘छैला’ (प्रथम-द्वितीय भाग) में पढ़ें।



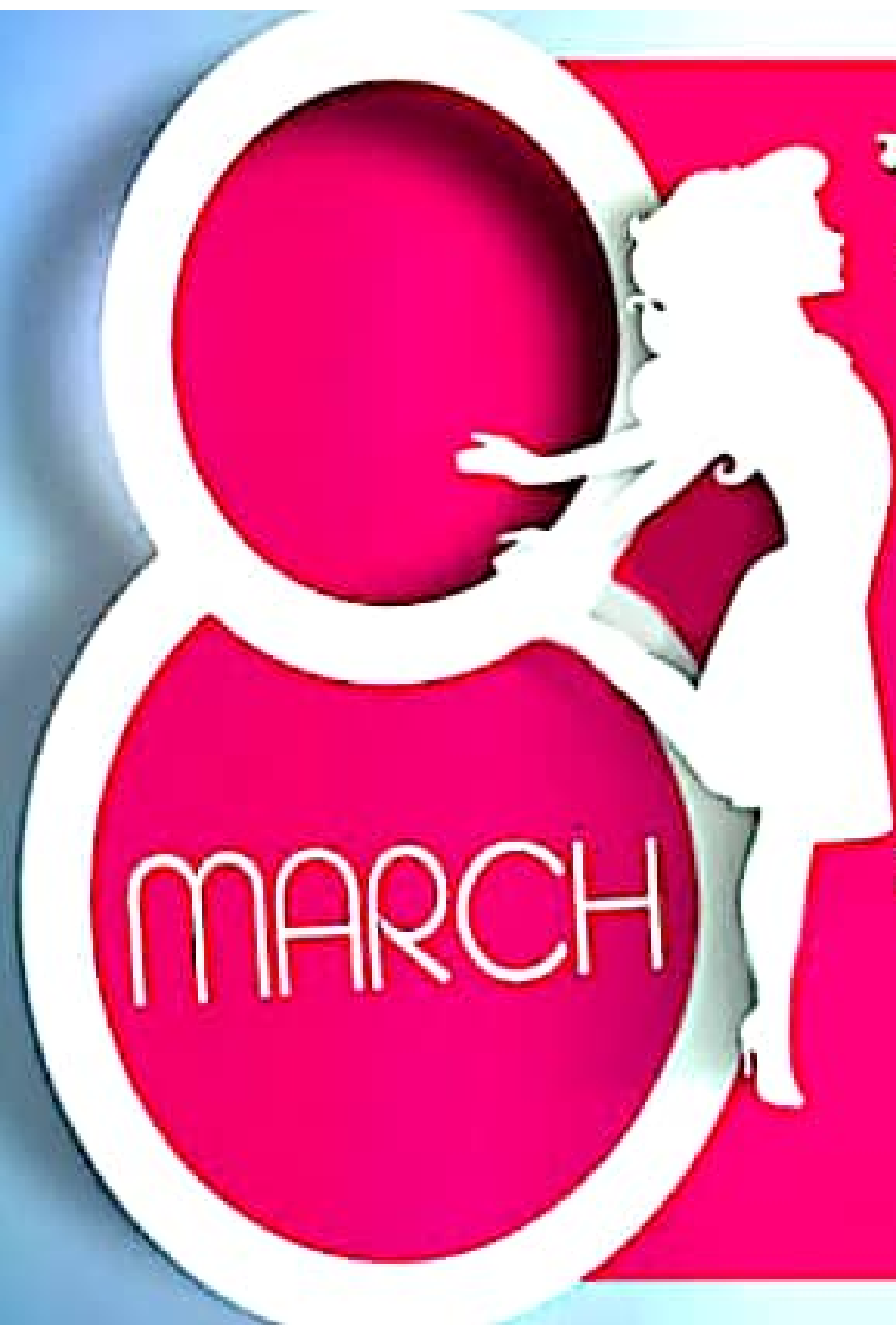
कान्त-साहित्य-सदन

भट्टवरिया, भिर्जापुर

Moorkhistan
News

...और अब आप
देखेंगे दुनिया की
सबसे ऊँची चोटी
पर अपना पहला
कदम रखने वाले
व्यक्ति को ।





मन में ममता और करुणा का भाव लिए,
बड़े ही खूबसूरती के साथ अपनी सभी,
जिम्मेदारियां निभाती है परिवार
की धुरी महिला,
चेहरे की रोजक सूरज सी बढ़ती जाए,
भीतर की ऊर्जा सदा दमकती जाए!
**महिला दिवस की आपको
हार्दिक शुभकामनाएं!**

Red Leaf books

लिखिए आप छापेंगे हम

redleafbooks2021@gmail.COM

7906449778

व्हट्सएप एंड कॉल

सोलो बुक्स या साझा संग्रह

पब्लिश करवाने के लिए संपर्क

कीजिए

एडिटर पब्लिशर

नील कृष्ण वैरागी



Red Leaf Books

H-56, Street No. 2, West Karawal Nagar, Delhi-94

E-mail : redleafbooks2021@gmail.com

मैं तुम्हें याद आऊंगा,
एक दिन बहुत याद आऊंगा,

जब मुझसा मिलता हुआ
कोई चेहरा देखोगी
जब किसी रात कोई
खबाब सुनहरा देखोगी,

जब किसी नाम को सुनकर
तुम्हें सिरहन सी होगी
जब किसी कॉल को उठाने में
तुम्हें उलझन सी होगी,

मैं तुम्हें याद आऊंगा
एकदिन बहुत याद आऊंगा

जब सबकुछ होते हुए भी
कुछ कमी सी रहेगी,
जब खुशी के मौके पर भी
आँखों में नमी सी रहेगी,

जब मेले सी भीड़ में
खुद को अकेला पाओगी,
जब दिल की बात
किसी से कह नहीं पाओगी,

मैं तुम्हें याद आऊँगा
एकदिन बहुत याद आऊँगा

जब किसी रोज तू
घर में अकेली रहेगी,
जब किसी रोज तुझसे
कोई पुरानी सहेली मिलेगी

जब होली का रंग
तुम्हारे गालों पे लगेगा,
जब बारिश का पानी
तुम्हारे बालों पे लगेगा,

मैं तुम्हें याद आऊँगा
एकदिन बहुत याद आऊँगा,

जब **tv** सीरियल में तुम
किसी दीवाने को देखोगी,
जब हमारे मिलने के
पुराने ठिकाने को देखोगी,

जब तुम इन गलियों में
फिर से आना चाहोगी,
जब तुम फिर से
प्रेम का त्यौहार मनाना चाहोगी,

- Saurabh Surya 'मुसाफिर'

कमलदीप

तीसरी आंख

